

'विदेह' ४५ म अंक ०१ नवम्बर २००९ (वर्ष २ मास २३ अंक ४५) 

वि दे ह *विदेह Videha* বিদেহ *http://www.videha.co.in* *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका *नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।* Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA. Read in your own scriptRoman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gurmukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam Hindi

एहि अंकमे अछि:-

२.४.  सुजीत कुमार झा-कथाप्रियंका

२.५.कथा-दिन धराबय तीन नाम  कुमार मनोज कश्यप

२.६.  हेमचन्द्र झा-एना किएक?

२.७.  नवेन्दु कुमार झा-रिपोर्ताज

२.८.  बिपिन झा-ये बान्धवाऽबान्धवा वा।

३. पद्य

३.१.  गुंजन जीक राधा-चौदहम खेप

३.२.राजदेव मंडल-नदीक माछ-बाट-बटोही

३.३.उमेश मंडल (लोकगीत-संकलन)- खेलौना-आगाँ

३.४.कल्पना शरण-प्रतीक्षा सँ परिणाम तक-७

३.५.विनीत उत्पलक टटका कविता

३.६.सन्तोष कुमार मिश्र-केकरा करु किलोल हो मिता

३.७.विनीत ठाकुर-गीत

३.८.दयाकान्त-ई बुढिया अछि हक्कल डइन

४. मिथिला कला-संगीत-कल्पनाक चित्रकला

-

५. गद्य-पद्य भारती -पाखलो (धारावाहिक)-भाग-७- मूल उपन्यास-कोंकणी-

लेखक-तुकाराम रामा शेट, हिन्दी अनुवाद-  डॉ. शंभु कुमार सिंह,

श्री  सेबी फर्नांडीस, मैथिली अनुवाद-डॉ. शंभु कुमार सिंह

६. बालानां कृते-  देवांशु वत्सक मैथिली चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स)२.कल्पना शरण:देवीजी.

७. भाषापाक रचना-लेखन -[मानक मैथिली], [विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.]

8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

8.1.  Original Maithili Poem by Smt.Shefalika Varma,by B.N.Varma

8.2.Original poem in Maithili by Gajendra Thakur Translated into English by Lucy Gracy from New York

9. VIDEHA MAITHILI SAMSKRIT EDUCATION(contd.)

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक (ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे

Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह आर.एस.एस.फीड।

"विदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रसँ प्राप्त करू।

अपन मित्रकेँ विदेहक विषयमे सूचित करू।

↑ विदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाऊ।

ब्लॉग "लेआउट" पर "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आर.एल." मेhttp://www.videha.co.in/index.xml टाइप केलासँ सेहो विदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी।

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari/ Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पर जाऊ। संगहि विदेहक स्तंभ मैथिली भाषापाक/ रचना लेखनक नव-पुरान अंक पढ़ू।

http://devanaagarii.net/

http://kaulonline.com/uninagari/ (एतए बॉक्समे ऑनलाइन देवनागरी टाइप करू, बॉक्ससँ कॉपी करू आ वर्ड डॉक्युमेन्टमे पेस्ट कए वर्ड फाइलकेँ सेव करू। विशेष जानकारीक लेल ggajendra@videha.com पर सम्पर्क करू।)(Use Firefox 3.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at http://www.videha.co.in/ .)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ (उच्चारण, बड़ सुख सार आ दूर्वाक्षत मंत्र सहित) डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाऊ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी कवि, नाटककार आ धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्टाम्प। भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालहिसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। मिथिलाक महान पुरुष ओ महिला लोकनिक चित्र 'मिथिला रत्न' मे देखू।



गौरी-शंकरक पालवंश कालक मूर्त्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि। मिथिलाक भारत आ नेपालक माटिमे पसरल एहि तरहक अन्यान्य प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्र, अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक़ हेतु देखू 'मिथिलाक खोज'

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण संगहि विदेहक सर्च-इंजन आ न्यूज सर्विस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित वेबसाइट सभक समग्र संकलनक लेल देखू "विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण"

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाऊ।

"मैथिल आर मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त) पर जाऊ।

१. संपादकीय

एहि बर्खक (२००९) यात्री-चेतना पुरस्कार श्री प्रेमशंकर सिंहकेँ देल गेल अछि। चेतना समितिक संस्थापक आ वरेण्य अक्षरपुरुष वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"क स्मृतिमे चेतना समिति द्वारा स्थापित मैथिली भाषा आ साहित्यक क्षेत्रमे महत्वपूर्ण अवदान लेल वर्ष २००० ई.सँ प्रतिवर्ष यात्री चेतना पुरस्कार देल जाइत अछि। एहि पुरस्कारक राशि पाँच हजार टाका अछि। पूर्वमे ई पुरस्कार २००० ई.मे पं.सुरेन्द्र झा "सुमन", दरभंगा; २००१ ई. लेल श्री सोमदेव, दरभंगा; २००२ लेल श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया; २००३ लेल श्री हंसराज, दरभंगा; २००४ लेल डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना; २००५ लेल श्री उदय चन्द्र झा "विनोद", रहिका, मधुबनी; २००६ लेल श्री गोपालजी झा गोपेश, मेंहथ, मधुबनी; २००७ लेल श्री आनन्द मोहन झा, भारद्वाज, नवानी, मधुबनी; २००८ लेल श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज, मधुबनीकेँ देल गेल अछि।

कवि कीर्तिनारायण मिश्रक परिवारक सदस्य द्वारा चेतना समितिक नामे जमा निश्चित राशिपर ब्याजसँ २००८ ई.सँ मैथिलीमे प्रकाशित आधुनिक बोधक उत्कृष्ट मौलिक कृतिपर कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २००८ सँ प्रारम्भ भेल अछि। एकर अन्तर्गत ११,००० टाका देल जाइत अछि। कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २००८ ई. लेल ई श्री हरेकृष्ण झाकेँ हुनकर कविता संग्रह "एना तँ नहि जे" आ २००९ लेल श्री उदय नारायण सिंह "नचिकेता"केँ हुनकर नाटक *नो एण्ट्री: मा प्रविश* लेल देल गेलन्हि। *नो एण्ट्री: मा प्रविश* विदेहक ८म सँ १५म अंक धरि ई-प्रकाशित भेल छल आ एकरा पाठकक अपार स्नेह भेटल रहैक।

बीसम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन कानपुरमे २०-२१ दिसम्बर २००९ केँ आयोजित कएल जा रहल अछि।

जातिवाद एहेन समस्या अछि जे एहिसँ जुड़ल लोक अपनामे मग्न रहि जाइ छथि। सम्हरिकऽ बजबाक अभ्यास छुटि जाइ छन्हि कारण पूर्ण रूपसँ आश्वस्त रहै छथि जे दोसर जातिक आ अपनो जातिक उदार तत्वक प्रवेश ओतए नहि छै। आ गप-शपक क्रममे अपन जातिक गुणगान आ ओकरा प्रति दोसर जातिक द्वारा कएल गेल अत्याचारक चर्च करैत रहैत छथि वा कोनो समस्या अएलापर, हमर जाति एहिमे सम्मिलित नहि छल, एहन सन वक्तव्य दैत रहै छथि। एक जातिवादी संगठन दोसर जातिवादी संगठनक सामान्य रूपमे विरोधी रहैत अछि मुदा धर्मनिरपेक्ष आ जाति निरपेक्ष संस्था वा व्यक्तिक विरोध करबा कालमे ई सभ एक भऽ जाइत छथि। जे अपन समाजसेवा आ ईमानदारीक ढोल पीटए तकरासँ सम्हरि जाऊ, आ जातिवादी संगठन सभक कार्यक विश्लेषण करू- जे ओ अहाँक भावनाक संग कोन तरहेँ खेला रहल छथि आ महान व्यक्तित्व लोकनिक जयन्ती आ पुण्यतिथिक बेढ़मे हुनका सभकेँ कोन तरहेँ अपमानित कऽ रहल छथि। आ अहाँ जे छी ताहिमे अहाँक जातिक कोन योगदान अछि? हमरा तँ बेशी लोक एहने भेटल छथि जे कहै छथि जे दोसर जाति बला अपन जातिक लोकक मदति करै छै मुदा हमर जातिक लोक नोकसाने करैत अछि। जे १९-२०म शताब्दीक इतिहास देखी तँ जे देश गुलाम छल आ विदेशीक नजरिमे छोट-पैघ किछु नहि रहए कारण सभ गुलाम छलाह। मुदा एहनो परिस्थितिमे मैथिली साहित्यमे भोजनक कालमे आ आन कालमे कोन-कोन तरहक छूत-अछूतक विचार राखी ताहिपर विस्तृत विचार भेटत जेना विवेचनकर्ता कोनो आविष्कारक

होथि। मुदा २१म शताब्दीमे सेहो मैथिलीक सेवा लेल जातिवादी संगठन सभ आगाँ छथि? की ओहि जातिक ओ प्रतिनिधित्व करै छथि? की दोसर जातिक लोक, गुणवत्ता नहिओ रहला उत्तर, मात्र मैथिलीक नामपर हुनकर संग नहि दै छथिन्ह। मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक तँ छोड़ू (मैथिली-सेवा तँ मात्र हिनके सभक विशेषाधिकार छन्हि आ सभसँ पहिने मैथिलीकेँ घरसँ निकालबाक प्रारम्भ सेहो यैह सभ केने छथि), आन जातिक नेता सेहो वोट माँगै लऽ जाइ छथि, हमरे गाम आबि हमरेसँ वोट मँगै छथि, मुदा मैथिलीमे नहि, हिन्दीमे। वोट हमरा दिअ आ फराक रहू, अहाँक भाषा हम नहि बजै छी !

मुदा विदेहक मैथिली साहित्य आन्दोलन एहि सभटा कुचक्रकेँ देखार करैत रहत।

किछु भाषण-भाख

किछु भाषण-भाख जे हम संगी साथी सभकेँ गप-शपमे दैत रहै छियन्हि से हुनका सभक आग्रह कारण आब एतए दऽ रहल छी।

कम वसा बला दूध सदिखन पीबू आ कम नोन खाऊ। माउसक सेवन सेहो कम करू, माँछ बेशी खा सकै छी। अपन आस-पड़ोसक लोकक दिनचर्यापर अहाँक ध्यान अवश्य रहबाक चाही नहि तँ घर बदलि लिअ। कोनो व्यक्तिकेँ जे अहाँ प्रशंसा करब तँ ओ ओकरा लेल बड़ उत्साह बढ़बएवला हएत। अपन पड़ोसीकेँ बगिया वा कोनो आन व्यंजन बना कए खुआऊ आ ओकर बनेबाक विधि सेहो लिखाऊ। ककरो प्रति दुर्भावना वा पूर्वाग्रह नहि राखू। कोनो मॉलमे जाऊ तँ कार खूब दुरगर लगाऊ आ परिवार-बच्चा संगे टहलि कए आऊ। दूरदर्शनपर मारि-पीट बला धारावाहिक नहि देखू आ जे-जे कम्पनी ओकर प्रायोजक अछि तकर उत्पादक बहिष्कार करू। सभ लोक, पशु-पक्षीक प्रति आदर राखू। ककरोसँ गाड़ी माँगी तँ घुरबैत काल पेट्रोल वा डीजल पूर्ण रूपसँ भरबा कऽ घुराऊ, लोक किएक तँ एकर उल्टा करैत छथि, भरल पेट्रोल गाड़ी लऽ जाइ छथि आ रिजर्वमे आनि कए घुरबैत छथि। देखब जे ओ व्यक्ति अहाँक चरचा बड्ड दिन धरि करत आ आगाँसँ गाड़ी देबामे बहन्ना नहि करत। दिनमे पाँच-सात गोटेकेँ अभिवादन अवश्ये करू। एक-आधटा माल-जाल राखू, जे दिल्ली-मुम्बैमे रहै छी तँ तकर बदला कुकुड़ पोसू। मासमे एक बेर सुर्योदय अवश्य देखू आ तरेगण सेहो। दोसराक जन्म दिन आ नाम अवश्य मोन राखू। होटलक खेनाइ परसनिहारकेँ टिप अवश्य देल करू। ककरोसँ भेँट भेलापर आह्लादसँ अभिवादन करू, हाथ मिलाऊ आ सर्वदा आँखि मिला कऽ गप करू। धन्यवाद आ आदरसूचक शब्द अवश्य बाजू। कोनो बाजा बजेनाइ अवश्य सीखू, नहि कोनो आर तँ झालि तँ बजाइये सकै छी। नहाइत काल गीत गाऊ। (अगिला अंकमे)

संगहि "विदेह" केँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ ३० अक्टूबर २००९) ८७ देशक ९५७ ठामसँ ३२,२५२ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी.सँ २,०५,६९० बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।

गजेन्द्र ठाकुर

नई दिल्ली। फोन-09911382078

ggajendra@videha.co.in

ggajendra@yahoo.co.in

२. गद्य



२.६. हेमचन्द्र झा-एना किएक?



२.७. नवेन्दु कुमार झा-रिपोर्ताज



२.८. बिपिन झा-ये बान्धवाऽबान्धवा वा।

–



प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी (१५ फरबरी १९२१- १५ मार्च १९८५) अपन सम्पूर्ण जीवन बिहारक इतिहासक सामान्य रूपमे आ मिथिलाक इतिहासक विशिष्ट रूपमे अध्ययनमे बितेलन्हि। प्रोफेसर चौधरी गणेश दत्त कॉलेज, बेगुसरायमे अध्यापन केलन्हि आ ओ भारतीय इतिहास कांग्रेसक प्राचीन भारतीय इतिहास शाखाक अध्यक्ष रहल छथि। हुनकर लेखनीमे जे प्रवाह छै से प्रचंड विद्वताक कारणसँ। हुनकर लेखनीमे मिथिलाक आ मैथिलक (मैथिल ब्राह्मण वा कर्ण/ मैथिल कायस्थसँ जे एकर तादात्म्य होअए) अनर्गल महिमामंडन नहि भेटत। हुनकर विवेचन मौलिक आ टटका अछि आ हुनकर शैली आ कथ्य कौशलसँ पूर्ण। एतुक्का भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता ई सभटा मिथिलाक इतिहासक अंग अछि। एहिमे सम्मिलित अछि राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म, दर्शन आ साहित्य सेहो। ई इतिहास साहित्य आ पुरातत्वक प्रमाणक आधारपर रचित भेल अछि, दंतकथापर नहि आ *आह मिथिला! बाह मिथिला!* बला इतिहाससँ फराक अछि। ओ चर्च करैत छथि जे एतए विद्यापति सन लोक भेलाह जे समाजक विभिन्न वर्गकेँ समेटि कऽ राखलन्हि तँ संगहि एतए कट्टर तत्त्व सेहो रहल। हुनकर लेखनमे मानवता आ धर्मनिरपेक्षता भेटत जे आइ काल्हिक साहित्यक लेल सेहो एकटा नूतन वस्तु थिक ! सर्वहारा मैथिल संस्कृतिक एहि इतिहासक प्रस्तुतिकरण, संगहि हुनकर सभटा अप्रकाशित साहित्यक विदेह द्वारा अंकन (हुनकर हाथक २५-३० साल पूर्वक पाण्डुलिपिक आधारपर) आ ई-प्रकाशन कट्टरवादी संस्था सभ जेना चित्रगुप्त समिति (कर्ण/ मैथिल कायस्थ) आ मैथिल (ब्राह्मण) सभा द्वारा प्रायोजित इतिहास आ साहित्येतिहास पर आ ओहि तरहक मानसिकतापर अंतिम मारक प्रहार सिद्ध हएत, ताहि आशाक संग।-सम्पादक

अध्याय 1

मिथिला क इतिहास

वैदिक युग प्राचीन वैदिक साहित्य मे अंग मगध और मिथिला क कोनो स्पष्ट उल्लेख नहिं भेटइत अछि। ऋग्वेद संहिता मे उपरोक्त तीनू खण्ड मे सँ कोनो खण्ड क नाम उल्लिखित नहिं अछि। ऋग्वेद क तेसर अष्टक क पूउम सूक्त क चौदहम ऋचा मे '**कीकट**' क उल्लेख अछि आर ओहिठाम क राजा ' **प्रमगन्द**' क संबन्ध मे बहुत रास निन्दनीय बात से हो। यास्क क अनुसार'**कीकट**' देश मे अनार्थ लोकनिक निवास छल। सायणाचार्य अहि मत सँ सहमत होइत हुँ आगाँ कहैत छैथ जे '**कीकट**' क निवासी नास्तिक छलाह आ योग, दान, होम इत्यादि पर हुनका लोकनि कें एक्क्षोरत्ती विश्वास नहिं छलैन्ह। ओ लोकनि इहलोकिक छलाह आर परलोक मे हुनका लोकनि कें कोनो प्रकार क विश्वास नहिं छलैन्ह। ओ लोकनि भौतिकवादी छलाह। वायुपुराण क गया महातम्य सँ कहल गेल अछि--

''**कीकटेषु**'' गया पुण्या नदी पुण्या पुन: पुन: च्यवनस्या श्रमं पुण्यं पुण्यं राज गृहं वनम्'' आहि सँ स्पष्ट अछि जे '**कीकट**' दक्षिण विहार मे छल आर ओहिठाम क निवासी भौतिकवादी दर्शन मे विश्वास रखैत छलाह। '**कीकट**' क संबध मे वैदिक विद्वान लोकनिक मध्य मतभेद अखनो बनल अछि आ आहि विवाद मे पड़ब हमरा लोकनिक हेतु एतए आवश्यक नहिं बुझना जाइछ।

एहन मानल जाइत अछि जे संहिता काल मे आर्य-सभ्यता क प्रधान केन्द्र सरस्वती आ ह्रषद्वली नदी क मध्य मे छल आर ओहि स्थान के मनु ब्रह्मावती कहने छथि। ब्राह्मण काल मे आहि संस्कृति क केन्द्र छल कुरू-पाँचल्ल जकरा मनु ब्रह्मर्षि देश कहने छथि। **शतपथ ब्राह्मण** मे कुरू पाँचल्ल देश क विशेष प्रशंसा भेल, अछि आर ऐतरेय ब्राह्मण मे आर्य देश क हेतु अस्याँ श्रुवायां प्रतिष्ठायां विशेषण क प्रयोग भेल अछि। सदानीरा नदी (गण्डक) पार कक जखन आर्य लोकनि मिथिला क क्षेत्र मे उतरलाह तखन अत्यंत द्रूतगति सँ आर्य संस्कृति क प्रसार आहि क्षेत्र मे भेल आ मिथिला विदेह समस्त पूर्वी भारत मे आर्य सभ्यता क प्रसार-प्रचार क एकटा प्रधान केन्द्र बनि गेल।

कोनो संहिता मे स्पष्ट रूपे विदेहक उल्लेख नहिं भेटइत अछि। तैत्तिरीय आर काठक संहिता मे''**वैदेह्य** '', ''**वैदेही**'' एवं ''**वैदेह**'' शब्द क प्रयोग भैटेत अछि परञ्च आहि सभहिक व्यवहार गाय आर बरद क हेतु भेल अछि। ऐतरेय ब्राह्मण मे जाहिठाम आर्य देश क चर्चा भेलो अछि ताहुठाम '' **विदेह**'' शब्द क पृथक उल्लेख नहिं भेटैत अछि। **काशी, कोशल, मगध, अंग,**आदि शब्द संग ' **विदेहो**' के प्राच्य देश मे साटि देल गेल अछि। '**विदेह**'क पृथक उल्लेख स्पष्ट रूपें शतपथ ब्राह्मण मे भेटैत अछि ओहिठाम ई कहल गेल अछि जे **विदेघ माथव** अपन पुरोहित गौतम राहूगण क संग वैश्वानर अग्नि क अनुशरण करैत-करैत सरस्वती नदी क तीर सँ सदानीरा क तीर धरि पहुँचलाह। अहि सँ पूर्व आर्य लोकनि सदानीरा कँ पारकर पूब दिसि नहिं गेल छलाह तै तँ ई एक महत्व पूर्ण घटना मानल जाइत अछि। वैश्वानर विदेघ माथव कें सदानीरा टपबाक आदेश देलथिन्ह । विदेघ अपन पुरोहित क संग आकरा पार केलन्हि आर तखने सँ ओ देश '**विदेह**' कहबे लागल। सदानीरा विदेह आर कोशल कवीच क सीमा रेखा बनल।

ताहिदिन सँ विदेह आर्य सभ्यता क प्रधान केन्द्र बनि गेल। **शतपथ बाह्मण** क शेष अध्याय मे जनक क दरबार क कथा सुरक्षित अछि। मिथिला क राजा जनक अपना ओहिठाम देश क विभिन्न भाग सँ ब्रह्मज्ञानी लोकनि कँ आमंत्रित क केर् बजबैत छलाह, आर हुनक दरबार मे तँ कुरू पंचलि सँ बरोबरि ऋषि-मुनि लोकनि आबिते रहैत छलाह॥ ऋषि याज्ञवल्मय विदेह मे रहैत छलाह आर ताहु हेतु मिविला क प्रसिद्ध समस्त आर्यावर्त मे छल। जनक याज्ञवलम्य तँ बुझ्रु जेना आर्य संस्कृति क धोतक बुझल जाइत छलाह आ ब्रह्मज्ञान क क्षेत्र मे हिनका लोकनि क कोनो ककरो सँ तुलना ताहिं दिन मे नहिं छल। कुरु पाँचाल क ऋषिगणक कुटिया मे शिक्षित रहितहुँ याज्ञवलम्य जखन जनक क ओहिठाम शास्त्रार्थ मे पहुँचलाह तखन ओ ओहिठाम उपस्थित कुरू पाँचलि क ऋषि गण कँ शास्त्रार्थ मे पराजित केलन्हि आर अपन विदूता क प्रकाश से हो। हुनक वचन मात्र अध्यात्म विघेटा मे नञ अपितु वैदिक क्रियाकलाप मे से हो सर्वथा प्रामाणिक मानल जाइत छल। परंपरा मे हिनका शुक्ल यजूर्वेदक प्रवर्तक मानल गेल अछि। शतपथ ब्राह्मण एवं बृहदा रण्यकोपनिषद क अनेकानेक स्थल पर जनक- याज्ञवलम्य क ब्रह्मज्ञान क विवैचना क वर्णन अछि आर ठाम-ठाम विभिन्न ऋषि लोकनिक शास्त्रार्थ क सेहो। ब्रह्मज्ञान क हेतु तैतिरीय ब्राह्मण मेसे हो राजा जनक क प्रशंसा कैल गेल अछि। जनक ब्रह्मज्ञान क हेतु केहेन प्रसिद्ध रहल हेताह तकर एकटा सामान्य संकेत हमरा लोकनि के कौशीतकी उपनिषदक एक कथा मे भेटइत अछि जाहि मे कहल गेल अछि कि गर्गवंश क 'बाल्मकि' नामक एक ब्रह्मज्ञानी काशीराज अजानशुत्र क ओतए ब्रह्मज्ञान क निरूपण के जखन पहुँचलाह तँ राजा हुनका सँ प्रसन्न भए एक हजार गाय देलथिन्ह आर कहलथिन्ह जे देखु तइयो लोक सब " **जनक - जनक**" चिकैरि रहल अछि। वैदिक युग मे ब्रह्मज्ञान क चरम उत्कर्ष विदेह मे भेल छल। ब्रह्मज्ञान आर्य संस्कृति क चरम उत्कर्ष बुझल जाइत छल - वैदिक मंत्र क उत्थान ब्रह्मावर्त मे, क्रिया कलाप क विकास ब्रह्मर्षि देश मे एवं "**ब्रह्मविद्या**" क विवेचन विदेह मे भेल। अहि हेतु ताहि दिन सँ समस्त आर्यावर्त क लोक कँ विदेह आवए पडैत छलैन्ह। विदेह पूर्वी भारत मे वैदिक काल मे आर्य सभ्यताक प्रधान केन्द्र छल। आहिठाम क्षत्रिय से हो वेदवक्ता होइत छलाह।

संस्कृत साहित्य मध्य मिथिला, विदेह एवं तीरभुक्ति क वर्णन:-

बालकाण्ड (बाल्मीकि) मे मिथिलाक वर्णन एवं प्रकारे अछि -

रामायण (बालकाण्ड) - "रामोडपि परमांपूजाँ गौतमस्य महामन:"

सकाशाद् विधिवत् प्राप्य जगाम मिथिलाचलः॥

अनर्ध राधव मे **(अंक २)**

"श्रृणोछि विदेहषु मिथिला

नामनगरीम"

जयदेव - प्रसन्न राधव **(अंक २)**

"तादह मिथिलायां पंचरात्र

निवासेन श्रमोपनेतव्य।

प्रसंगादयां राजा **जनको** द्रशः"

रघुवंश - (**सर्ग ११**)

"संन्यमन्वयन सम्यृत हेतु मैथिलः

स मिथिलां वृजन वशी। "

नैषधीयचरित - (**सर्ग १२**)-

"अपीयमेनं मिथिला पुरन्दरं निपील

दृष्टि: शिथिला स्तुते वरम्"

'**रामायण चम्पू**' (बालकाण्ड)

" अथ मिथिलां प्रात प्रास्थन:

कौशिकस्त मित्थ म कथयतू"

दशकुमार चरित (**उतरपीढिका उक्छवास**)

" एषो ब्रह्मस्मि पर्य्यटने कदा गतो

विदेहषु मिथिलाम प्रावस्यैव"

कथासरित सागर (**जम्बक उ, तरंग ५**)

" हदो वैदेह देशे च राज्यं गोपलिकायसः।

सत्कार हेतोहंति पतिः श्वसुर्यायानुगच्छतेः॥

भृंगदूत (गंगानंद झा) - १७ म शताब्दी।

" गंगाती रावधि रधि गता यद भुओ भृंग भुक्ति

र्नाम्ना सैव त्रिभुवन तले विश्रुता तीर भुक्तिः॥

भृंगदूत मे दरभंगा क वर्णन एवं प्रकारे अछि ___

नस्यापाथः परमाविमणं सांतिपियाभिरामा ___

गारांकामायुध दरभंगा राजधानी - मुवैयाः॥

रघुवीर कवि "**लक्ष्मीश्वरोपायन**" मे ___

"देशः संतु सहस्त्रोपि ममतु स्वाभाविक प्रीतये, श्रेयान देश बिशेष एवं मिथिलानामा क्षमा मंडले।" बदरी नाथ झा - '**गुणेश्वर चरित चम्पू**'

"आस्ति स्वस्ति समस्त भूमि बल श्रेय प्राशासी श्रुता प्रत्यार्थ स्मय मन्थना प्र मिथिला नामाडभिरामा कृति:। प्रेक्षाशालिविपा चिदालिल लिनो त्संगा डिभिषंगार्दिनी , नीवृद वृन्दम, चर्चिका र्चितलर श्रे स्तीरभुक्तिः सदा ।

गंगा गण्डकी संगम सँ पश्चिम सुप्रसिद्ध सोनपुर टीसनक समीप जे हरिहर क्षेत्र अछि तकरो उल्लेख भृंगादूत मे भेटेइत अछि। अहि भृंगदूतमे गाण्डवीश्वर स्थान , ब्रह्मपुर , वाग्वती (वाग्मती) एवं कमला नदी क उल्लेख से हो भेटइत अछि। कहबी छैक जे गाण्डवीश्वर महादेव राजा जनक क दक्षिण क द्वार पलि रहथिन्ह आर ओ स्थान सम्प्रति जोगिआरा टीशन क समीप अछि। ओना मिथिला नाम सँ प्राचीन जनक राजक राजधानी क ओध होइछ परञ्च एतए स्मरण राखबि आवश्यक जे मिथिला, तेरभुक्ति, विदेह, अछि शब्द एक एहन भौगोलिक इकाई क धोतक थिक जे गंगाक उत्तर मे छल आर विभिन्न छोट - छोट गणराज्य मे बटल छल। प्राचीन कविक बिहार मे गंगा क दक्षिण मेछल अंग आर मगध आर उत्तर मे छल मिथिला जकर अंतर्गत कैकटा छोट छीन राज्य सब छल। जातक कथा आर जैन साहित्य क अतिरिक्त वृहद विष्णु पुराण क मिथिला महात्मय मे मिथिला क जे वर्णन अछि ताहि सँ एकर महत्व एवं जन प्रियता क पता लगेइयै। अहि मिथिला क अंतर्गत छल तँ प्राचीन कालक वैशाली जकर विस्तृत विवरण रामायण, रामायण चम्पू एवं भृंगादूत मे भेटैत अछि। प्राचीन '**विशाला**' नगरिये बौद्ध कालक वैशाली थिक। विशाला क नाम क अद्धत्तन "**बिसारा**" परगना सँ होइत अछि । अहि क्षेत्र मे एकटा भैरव स्थान सेहो छल जकर चर्च भृंगादूत मे भेल अछि। नहिंयारी गाँव (कमतौल टीसन) सँ अघुना एकर बोध होइछ। भृंगदूत मे "**सरिसव**" ग्राम आर कोहिश्वर महादेव क उल्लेख सेहो भेटइत अछि।

नाम एवं मिथिला क भौगोलिक सीमा :-

शतपथ ब्राह्मण क अनुसार नदी क बहुलता क कारणे मिथिला क भूमि दलदल जकाँ छल। कहल जाएछ जे अग्निदेव क आज्ञा सँ माथव विदेघ आर गोतम राहुगण सदानीरा (गण्डकी) क पूब मे जाक बस लाह आर और क्षेत्र इतिहास मे मिथिला, विदेह, तीरभुक्ति एवं तिरहुत क नाम सँ प्रसिद्ध भेल। दलदल भूमि कें अग्निदेव सुखा कें कठोर बनौलन्हि आर जंगल के

जरा के अहि पूर्वी भूमि के रहबा योग्य स्थान से हो। आर्य ऋषि लोकनि ओहिठाम अगणित यज्ञ क आयोजन केलन्हि आर असंख्य यज्ञ आर होम होयबाक कारणें ओहिठाम भूमि रहबा योग्य बनि सकल। नदी क बाहुल्य क कारणे संभव जे अहि क्षेत्र के तीरभुक्ति कहल गेल छल। प्राचीन काल मे तीरभुक्ति समस्त उत्तरी बिहार क धोतक छल आर एकर सीमा पश्चिम मेश्रावस्ती भुक्ति आर पूब मे पुण्डवर्धन भुक्ति सँ मिलैत जुलैत छल आर एकर अहि विशालता क परिचय हमरा **आयनी अम्बरी** मे वाणैत तिरहुत सरकार क महल क नाम सब भेटइत अछि।

परंपरा गत साधन मे मिथिला क जे विवरण उपलब्ध अछि तकर सिंहावलोकन करब अपेक्षित। ओहि वर्णन मे एतिहासिकता क दुर कतबा दूर धरि अछि से नहिं कहि सकैत छी तथापि पौराणिक आर आन क महत्व तँ एतिहासिक संक दृस्टिये अछिये अहि मे संदेहक कोनो गुंजाइश नहिं।

भविष्य पुराण क अनुसार अयोध्या क महाराज मनुक पुत्र निमि अहि यज्ञ भूमि मे आवि अपना के कृत्य कृत्य बुझलन्हि आर ओहिठाम क ऋषि लोकनिक लय आर यज्ञ सँ लाभान्वित भेलाह। निमि क पुत्र '**मिथि**' एक शक्तिशाली शासक भेलाह आर ओ अपन पराक्रम क प्रदशनार्थ ओहिठाम एकटा नगर क निर्माण केलन्हि जे '**मिथिला**' क नाम सँ प्रसिद्ध भेल। अहि मे कहलगेल अछि जे पुरी निर्माता होएबाक कारणें मिथिला क दोसर नाम '**जनक**' पडल।

भविष्य पुराण : - निमः पुभस्तु तत्रैव मिथिला मे महान स्मृतः ।

प्रथमः भुजबलैयेन **तैरहूतस्थ** पार्श्वतः ॥

निर्म्मित स्वीयनाम्ना च **मिथिला** पुरमुन ममू।

पुरी जनन सामथ्यज्जिनकः सच कीर्तितः॥

वाल्मीकीय रामायण : - राजा भृतिषु लोकेषु विश्रुतः खेन कर्मणा निमि परमधर्मात्मा सर्व तत्व वतांवरः । तस्य पुत्रो मिथिर्नाम जनको मिथिपुत्रक कथन अछि जे जखन वशिष्ठ यज्ञाभिलाषी निमिक निमंत्रण अस्वीकार कए इन्द्रक पुरोहिताई करबाक हेतु स्वर्ग गेलाह तखन वशिष्ठ क अनुपस्थिति मे भृगु आदि आस्थिन ऋषि मुनि लोकनि क सहायता सँ निमि अपन यज्ञ क संपादन केलन्हि। वशिष्ठ स्वर्ग सँ घुरला पर जखन यज्ञ के सम्पादन भेल देखलन्हि तखन क्रुद्ध भए ओ राजा निमि के " **विदेह** " राजेबाक श्राप देलन्हि। वशिष्ठ क अति श्राप सँ चारूकात हाहाकार मचिगेल प्रजा लोकनि घबरा उठलाह। अराजकता क स्थिति देखि आस्थिन ऋषि गण निमि क मृत शरीर कें मथे लगलाह ओर मथला उत्तर जे शरीर उत्पन्न भेल तकर " **मिथिल**" अथवा " **विदेह** " क संज्ञा देलगेल। बाद मे"**जनक**" नाम सँ सेहो प्रसिद्ध भेलाह।

श्रीमदभागवत : -

जन्मना जनकः सोऽभूद्वै वेह स्तु विवेहजः

मिथिलो मथनाज्जातो **मिथिला** येन निर्म्मिता॥

देवी भागवत: - सँ ज्ञान होइछ जे निमिक उन्नेसम पीढी मे राजर्षि सीरध्वज जनक भेल छलाह और **श्रीमद - भागवत** सँ ई बुझल जाइत अछि जे जनक वंशक शासक लोकनि एहेन वातावरण बना देने छलाह जे हुनक पार्श्ववती गृहस्थ सेहो सुख दुःख सँ मुक्त भ गेल छलाह। 'विदेह' जे कि महत्वपूर्ण कल्पना छल आर जकर प्राप्तिक हेतु लोग ललायत रहैत छल से ओहि देश क नामक संकेत से हो दैत अछि जाहिठाम जनक वंश क लोग अपन राज्य क स्थापना करने छलाह। शुक्रदेव जी (व्यास क पुत्र) जखन अपन पिता सँ तपश्या क हेतु आज्ञा माँगलन्हि तखन हुनका योगिराज जनक क दृष्यांत दैत ई कहल गेलन्हि जे ओ घरो मे रहिके तपस्या क सकैत छथि। शुक्रदेव जी असंतुष्ट देखि व्यास हुनका राजार्षि जनक क ओतए पठा देलथिन्ह।

देवी भागवतः - वंशेऽस्मिन्येऽपि राजा नस्ते सर्वे जनकास्तथा।

विख्याता ज्ञानिनः सर्वे वेदेहाः परिकीर्नितः॥

वर्षद्वयेन मेरूंच समुल्लङ्घ्य महामनिः।

हिमालये च वर्षेण जगाम **मिथिलां** पति॥

प्रविष्टो मिथिलां मध्ये पश्यंसर्यद्धैमुतम्।

प्रजाश्र्चः सुखिता सर्वाः सदाचाराः मुखन स्थताः॥

देवी मद् भागवत: - एते वै **मैथिला** राजन्नात्म विद्या विशारदाः

योगेश्वर प्रसादेन द्वन्दै मुक्ता गृहष्वेपि॥

मिथिला क सीमा क सबंध मे **देवी भागवत** मे निम्नांकित विवरण अछि।

एवं निमि सुतो राजा प्राथतोजन कोऽभवित।

नगरी निर्मिता तेन गंगातीरे मनोहरा।

मिथिलेति सुविख्याता गोपुरा हाल संयुता

धनधान्य समायुक्ताः हद्यशाला विराजिता॥

शक्तिसंगम तंत्र : -

गण्डकी तीरमारभ्य चमोआरण्यंतंग शिवे।

विदेहभूः समाख्याता तीर भुतयमिधः संतु॥

स्वद पुराण : -

गण्डकी कौशिकी चैव तयोमध्ये वरस्थलम्।

बृहद विष्णुपुराण : -

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमधिगम्यवै।

योजनानि चतुविशंद व्यायामः परिकीर्तितः॥

गंगा प्रवाह मारभ्य यावद्धैमवतंवनम्।

विस्तारः षोडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन।

मिथिलानाम नगरी तत्रास्ते लोक विश्रुता॥

अगस्त्य रामायण : -

वैदेहोपवनस्यांते दिश्यै शान्यां मनोहरम्।

विशालं सरस्वतीरे गौरी मंदिर मुतमम्॥

वैदेही वाटिका तत्र नाना पुष्प सुगुम्फिता।

राक्षनामनलिकन्यामिः सर्वतु सुखदा शुभा॥

मिथिला क उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गंगा, पूवमे कौशिकी आर पश्चिम मे गण्डकी अछि।

चन्दा झा :- गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि,

पूर्व कौशिकी धारा

पश्चिम बहथि गण्डकी,

उत्तर हिमवत बल विस्तारा।

प्राचीन मिथिला मे आधुनिक दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, (दरद गण्डकी देश), सहरसा, पुर्णियाँ, बेगुसराय, कटिहार, विहपुर, एवं नेपाल क दक्षिणी भाग सम्मिलित छल। नदी क प्रधानता हेवाक कारणे मिथिला के तीरभुक्ति से हो कहल गेल छैक ___

वृहद विष्णु पुराण : - गंगा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्च दशांतरे।

तीर भुक्तिरिनति ख्यातो देशः परम पावनः॥

तीरभुक्ति नाम होएबाक निम्नलिखित कारण बताओल गेल अछि।

i.) शाम्भकी, सुवर्ण एवं तपोवन सँ भुक्तमान होएबाक कारणे ई तीरभुक्ति कहाओल।

ii.) कौशिकी, गंगा आर गण्डकी क तीरधरि एकर सीमा छलैक तै एकरा तीरभुक्ति क संज्ञा देल गेलैक।

iii.) ऋक, यजु आर शाम तीनटुक वेद सब सँ आहुति देवऽबला ब्राह्मण समूहक निवास सँ त्रि आहुति अर्थात तिरहुतक नाम सँ ई स्थान प्रख्यात भेल।

१६ १७ म शताब्दी क निव्वती यग्त्री लाभा तारनाथक विवरण मे तिरहुत कें "**तिराहुति** "कहल गेल अछि। आर **आयनी अकबरी** मे तँ सहजहि एक विस्तृत विवरण भेटिते अछि। एतिहासिक दृष्टिकोण सँ भुक्ति शब्द प्रयोग गुप्त युग सँ प्रारंभ भेल आर शिलालेख मे एकर उल्लेख भेटैत अछि। वैशाली सँ प्राप्त कैकटा मोहर पर **तीरभुक्ति** शब्द क उल्लेख अछि आर संगहि कहरा सँ प्राप्त अभिलेख, नारायण पालक भागलपुर अभिलेख, वनगाँव ताम्रपत्र अभिलेख आदि सँ **'तीरभुक्ति'** पर प्रकाश पडैये आर ई बुझि पडैये जे ताहि दिन मे**तीरभुक्ति** समस्त उत्तर विहार क धोतक छल जकरा पश्चिम मे छल आधुनिक उत्तर प्रदेश और पूव मे बंगाल। महानंदा क पश्चिम आर गण्डकी क पूव क समस्त भूमि **तीरभुक्ति**कहबैत छल, अहि मे कोनो संदेह नहिं। जातक मे मिथिला क क्षेत्र जे वर्णन अछि आर**आयनी अम्बरी** मे वर्णित तिरहुत सरकार क विवरण हमर उपरोक्त मतक समर्थन करैयै। देशक भूगोल आर सीमा राजनैतिक उथल - पुथल क कारणे बदलैत रहैत छैक आर मिथिला क राजनैतिक इतिहास मे सेहो एहेन कतैक परिवर्तन भेल छैक तथापि एकर जे एकटा साँस्कृतिक स्वरूप अछि से आविच्छन्न रूपें चलि आवि रहल

अक्चिइ आर उवैह रूप एकर भौगोलिक सीमा क स्पष्ट आभास दैत अछि। प्राचीन साहित्य मे मिथिला आर जनकपुर नाम भेटैछ परञ्च गुप्तयुग सँ **तीरभुक्ति** नाम प्रशस्त भ गेल।

____ " प्राग्ज्योतिषः कामरूपे तीरभुक्तिस्तु निच्छविः

विदेहा चाथ कश्मीरे " =

लिंग पुराण :- " **तीर भुक्ति** प्रदेशेतु हलुविर्त्ते हलेश्वरः "

प्राचीन मिथिला क पुरातत्वक विश्लेषण एवं

अध्ययन अखनोधरि अपेक्षिते अछि।

नेपाल क सीमा जे सम्प्रति जनकपुर अछि तकरे प्राचीन विदेह मानल गेल अछि। **सुरूचि** आर **गौधार जातक** मे विदेह एवं मिथिला क भौगोलिक सीमा क विवरण भेटइत अछि। विदेह क चारू मुख्य फाटक पर चारिटा बाजार छल। **महाजनक जातक** मे तँ विदेह क राजधानी '**मिथिला**' क भव्य वर्णन अछि ____ मिथिला क नगरी क सोभा, वाजार आर राज दरबारक शोभा, सामान्य लोगक पहिरब, ओढब, खान, पान, रहन, सहन, सैनिक, संगठन, रथ, हाथी, घोडा, आदि एहेन कोनो अंश धुल्ल नहिं अछि जकर वर्णन ओहि मे नहिं भेटइत छै। अयोध्या सँ मिथिला पहुँचबामे विश्वामित्र कें चारि दिन लागल छलैन्ह परञ्च राजा दशरथ क ओतए जनक जाहि दूत के पठौने छलाह तकरा मात्र तीन दिन लागल छलाह। दशरथ चारि दिन मे अयोध्या सँ मिथिला पहुँचल छलाह। महावीर एवं बुद्ध क समय मे विदेहक सीमा एवं प्रकारे छल ____

____ लम्बाई मे कौशिकी सँ गण्डक धरि २४ योजन ____

____ चौडाई मे हिमालय सँ गंगा धरि १६ योजन ____

____ मिथिला **वैशाली** ३५ मील उत्तर पश्चिम दिसि छल।

____ जातक क अनुसार विदेह राज्यक सीमा **३००० लीग** छल, आर राजधानी

मिथिला क **६ लीग**

____ मिथिला जमुद्वीप क एकटा प्रधान नगर छल।

____ सदानीरा नदी बुढी गण्डक क धोतक छल।

____ तीरभुक्ति नाम क संदर्भ मे **भृंगादूत** मे कहल गेल अछि ____

" गंगा तीरा वधि रधि गता यदभुओ

भृङ्गा भूक्तिनिमा सैब त्रिभुवन तले विश्रुताः **तीरभुक्ति**

आर **शक्ति संगम तंत्र** मे ___

गण्डकी तीरमारभ्य चम्पारण्यांतकं

शिवे विदेहभूः समाख्याता **तीरभुक्ति** मिधो संतुः।

'**भुक्ति**' शब्द सँ प्रान्त क ओध होइछ आर गुप्त युग मे समस्त मिथिला **तीरभुक्ति** नाम सँ प्रसिद्ध छल आर आहि सँ समस्त उत्तर विहार क बोध होइत छल। भोगौलिक दृष्टिये मिथिला क निम्नलिखित नाम सेहो महत्वपूर्ण अछि ___ **विदेह**, **तीरभुक्ति** , **तपोभूमि**,**शाम्भवी**, **सुवर्णकानन**, **मालिनी**, **वैजयंती**, **जनकपुर** इत्यादि परञ्च अहि रूप मे **विदेह**, **मिथिला**, **तीरभुक्ति** आर **तिरहुत** विशेष प्रचलित अछि। चारिम शताब्दी मे **तीरभुक्ति** नाम प्रसिद्ध भ चुकल छल। **त्रिकाण्डशेष**, गुप्त अभिलेख आर बारहम शताब्दी क एकटा अभिलेख एवं अन्य अभिलेख सब मे '**तीरभुक्ति**' क नाम भेटइत अछि।

(iv.) मिथिला भूमि : -

सम्प्रति जे मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ, अररिया, बेगुसराय, आदि क्षेत्र अछि सैह प्राचीनकाल मे मिथिला, विदेह, तीरभुक्ति, कहबैत छल और वैशाली एकर अंतर्गत छल। गण्डकी सँ महानंदा आर हिमालय सँ गंगाधारक क्षेत्रक अंतर्गत मिथिला छल। मिथिला क सीमा लगभग २५००० वर्ग मील छल। हिपुए नस्मं जें '**पूरा भारत**' क वर्णन कैने छथि ताहि मे मिथिलो ल उल्लेख अछि। मिथिला क नाम उत्पत्ति क संबध मे निम्नलिखित श्लोक प्रसिद्ध अछि ___

" निमिः पुवस्तु तत्रैव मिथिनमि महान स्मृतः

प्रथनं भुजबलेयैन **त्रैहूतस्य** पार्श्वलः।

निर्म्मितं स्वीय नाम्नाच **मिथिलापुर** मुलम्

पुरीजनन सामध्यति जनकः सच कीर्तितः ॥

(**शब्दकल्पद्रूम**-iii.७२३)

वृहद विष्णुपुराणक **मिथिला महात्म्य खण्ड** ___

मिथिला नाम नगरी नमास्तं लोक विश्रुता
पंचभिः कारणैः पुण्या विख्याताजगतीत्रये

पाणिनिः- मन्यते शत्रओ यस्यां = मथ+"मिथिलादयश्च"
इति दूलच अकारस्यत्वं निपात्यते स्वनाम
ख्यातनगरी। सातु जनकराज पुरायथा। विदेहा
मिथिलाप्रोक्ता। इति हलायुधः-

मिथिला भूमि क विशेषता ई अछि जे अहिठाम नदी क बाहुल्य क कारणे जमीन उपजाउ अछि आर सब प्रकारक अन्न क खेती एतए होइत अछि। अहिठाम क जनसंख्या क विशेष भाग अहुखन खेती पर निर्भर करैत अछि। प्रतिवर्ष अहिठाम नदी क बाढि अबैत अछि, गाम घर दहा जाइत अछि, लोग वेलल्ला भजाइत अछि तथापि अपन माँटि-पानिक प्रति अहिठाम क लोक के ततेक प्रेम आर आशा तत्त छैक जो ओ एकरा तैयो छोडवा लेल तैयार नहिं अछि आर ओहि माँटि-पानि सँ सटि के रहब अपन जीवन क सार बुझैत अछि। गण्डक, वाग्मती, बलान, लखनदेई, कमला, करेहा, जीवछ, काशी, तिलयुगा, गंगा क मारि मिथिला क लोग जन्म- जन्मांतर सँ सहैत आवि रहल अछि। नदी क बिना मिथिला क भूमि क कल्पने नहिं भ सकइयै। नदी क कारणे तँ मिथिला क नामो तीरभुक्ति पडल छल कहियो। नदी मे सप्तगण्डकी आर सप्तकौशिकी क उल्लेख अछि आर एकर श्रोत नेपाल मे अछि। अवि हुनु नदी कें निमांत्रत करबाक हेतु कौशी आर गंडक योजना बनल अछि आर आन-आन नदी के पालतु बनेबाक प्रयास भ रहल अछि।

मिथिला भूमि क बनावट एकरा कैक अर्थ मे सुरक्षा प्रदान करैत छैक। एक दिसि हिमालय पर्वत छैक तँ तीन दिसि नदी आर तैं अहिठामक लोक किछु विशेष स्वभाव क होइत छथि जकर संकेत विद्यापति क **पुरूष परीक्षा** मे अछि। नदी क पूजा अहिठाम ओहिना होइछ जेना कोनो देवी देवता क आर सब नदी क पूजा क गीत सेहो उपलब्ध अछि। पावनि तिहार पर नदी मे स्नान करब आवश्यक बुझल जाइत अछि। **अक्षय-तृतीया** (वैशाख शुक्ल) क दिन नदी मे स्नान करबाक परम धार्मिक मानल गेल अछि। मिथिला क लोग अपन देश, संस्कृति, भाषा आर संस्कार क प्रति बड्ड कट्टर होइत छथि। भौगोलिक दृष्टिये मिथिला क क्षेत्र एकटा राजनैतिक ईकाई क रूप मे प्राचीन कालहिं सँ बनल रहल अछि आर तैं एकर साँस्कृतिक वैशिष्टय अखनो बचल छैक।

v) **मिथिला क निवासीः-**

जे केओ मिथिला अथवा मैथिल सँस्कृति सँ अपरिचित छथि हुनका **'मिथिला'** सँ मात्र मैथिल ब्राह्मण क बोध होइत छन्हि परञ्च इ ओध हैव भ्रामक थिक कारण मिथिला एकटा भौगोलिक सीमा क धोतक थिक आर ओहि सीमा क अंतर्गत रहनिहार प्रत्येक ओहि भौगोलिक ईकाई क अंग भेलाह चाहे हुनक जाति, वर्ण, अथवा वर्ग जे हो। मिथिला क रहनिहार प्रत्येक व्यक्ति मैथिल कहौता अहि मे कोनो संदेह नहिं रहबाक चाही। धार्मिक क्षेत्रक प्रधान आर आध्यात्मिक रूपें प्रभुत्व रहला क कारणें ब्राह्मण क प्रधानता रहलैन्ह

आर लगातार ७०० ८०० वर्ष ब्राह्मण राजवंश क शासन रहबा क कारणें ब्राह्मण क राजनैतिक महत्व सेहो बनल रहल। ई फराक कथा जे सामान्य ब्राह्मण गरीब छथि परञ्च ई बात क सोंच जे ब्राह्मण क राज्य रहला सँ राजनीति मे ब्राह्मण के विशेष प्राधिकार भेटलन्हि आर ओ लोकनि सामंतवादी युग सँ अधावधि सब क्षेत्र मे महत्व केलन्हि। स्मरणीय जे आनवर्ण क तुलना मे मिथिला मे ब्राह्मण क जनसंख्या बहुत कम अछि।

ब्राह्मण क अतिरिक्त मिथिला मे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र(सब प्रकार), कायस्थ, मुसलमान, ईसाई आदि सब वर्णक लोग रहैत छथि। मिथिला क विशाल क्षेत्र मे सूरी, तेली, कलवार, यादव, राजपूत, वर्ण सँ कम धनी आर शक्तिशाली नहिं छथि। मिथिला मे कतेक वर्नक लोग मध्य युग मे रहैत छलाह तकर विश्लेषण ज्योतिरिश्वर ठाकुर क **वर्णरतिकर** सँ भेटैछ। मुसलमानो मे सैयद , पाठान, मोमिन, शेख, आदि शाखा सम्प्रदाय क लोग क वास छैन्ह। जमीन्दार मे ब्राह्मण क अतिरिक्त, भूमिहार ब्राह्मण, राजपूत, और यादव लोकनि एक्को पैसा कम नहिं छथि। यत्र-तत्र कायस्थ लोकनि के सेहो जमीन्दारी छलैन्ह मुदा ओ लोकनि आव विशेषतः कलमफरोती मे रहि गेल छथि। मिथिला क्षेत्र मे मुसलमानो जमीन्दार कैकटा छलाह।

बाकि हिसाबे मिथिला मे मूलरूपेण दूटा वर्ग अछि गरीब क वर्ग आर धनिक क वर्ग। जे केओ धनमान छथि (चाहे जाति कोनो होहि) ओ धनी वर्ग मे छथि आर गरीब क वर्ग। दुनु वर्ग क बीच संघर्ष चलि रहल अछि। जमीन्दारी उठला क उपरांत ई संघर्ष आर तीव्र भगेल अछि कारण आर्थिक हिसाबें मिथिला तुलनात्मक द्रष्टिये विशेष शोषित आर पीडित अछि। उत्तर भारत क अन्नागारक पदवी सँ विभूषित रहितहुँ मिथिला क सामान्य लोग कें अहुँ खन पावभरि क अन्न आर पाँच हाथ क वस्त्र नहिं भेटैत छैक आर ओ अपन पेट भरवा क लेल चारू कात बौआइत रहैत अछि। मिथिला क निम्नवर्ग क सामाजिक श्रृखंला करीब-करीब टुटि चुकल अछि आर ओ शोषण यंत्र मे नीक जकाँ पीसा रहल अछि। ई स्थिति आव क्रांति क आह्वान जहिया करे।

मिथिला क उत्तरी आर उत्तर-पूर्वी सीमा पर इण्डो-मंगोलाइड जाति क लग से हो बसैत छथि जे घास कहबैत छथि। हुनका लोकनि कें रहन-सहन अहुखन पुराने छन्हि यद्धपि ओ लोकनि परिश्रम करबा मे ककरो सँ कम नहिं छथि। शुद्ध मे शुद्ध आर अशुद्ध(अछूत) दुनु तरहक लोग अवैत छथि। डोम, चमार, दुसाध, मुशहर, हलाल खोर, धानुक, अमाढ, केओट, कुरमी, कहार, कोइरी आदि सेहो पर्याप्त संख्या मे मिथिला मे वसैत छथि। जनसंख्या कहि सवें यादव सब सँ आगाँ छथि, दुसाध, कोइरी, चमार, कुरमी आदि क जनसंख्या जोडि देला सँ तथाकथित पिछडावर्गक जनसंख्या तथाकथित अगुआवर्गक जनसंख्या सँ वेसी अछि। जनगणना क आधार पर निम्नलिखित जातक ज्ञान होइछ

 गोप(यादव), ब्राह्मण, राजपूत, दुसाध, कोइरी, चमार, शेख, भूमिहार, कुर्मी, मल्लाह, जोलहा, तेली, कन्दु(कानू), नोनिया, धानुख, मुशहर, तांती, कायस्थ, धोबी, कलवार, केओट, सोनार, कहार, कुँजरा, सुनरी, पठान, हलवाइ, तमौली, इत्यादि ॥

जगदीश मंडल

उपन्यास:

जीवन संघर्ष :: 1

कातिकक अन्हरिया पख। रौदियाह समय भेने जेठक रौद जँका रौद तीख। उम्मस सेहो। दस बजेक उपरान्त बाध-बोन मे रहब कठिन। तँ सवेर-सकाल सब चलि अबैत, मुदा घरो पर चैन कहाँ। माथ परक पसीना नाक पर होइत टप-टप खसैत आ देहक पसीना स कपड़ा भीजैत। मन औल-बौल करैत। आठमे दिन दिवाली, तहू मे काली-पूजा करैक विचार सेहो सैँसे गैाँवा मिलि के क लेलक। दुनू अमबसिये दिन। ओना दिवाली एक दिना पावनि होइत मुदा काली पूजा धूम-धाम से मनबैक विचार भेने, पाँचो दिन सब अपना-अपना ऐठाम दीप जरवैक विचार क लेलक। सब अप्पन-अप्पन घर-आंगनक टाट-फड़क स ल' क' जते-जते गामक रस्ता-पेरा टूटल अछि ओकरो सरिअवै मे लागि गले। गाम मे पहिल बेरि काली-पूजा सेहो हैत तँ सब वयस्त। सब मे तजगर उत्साह। अप्पन-अप्पन खेती-बाड़ी छोड़ि सब नीक जँका ओहि काज मे भीड़ल। ओना खेत मे हालोक कमी किऐक त अधा भादो मे जे एकटा मझोलका अछार भेल तइ दिन से एक्को बुन बरखा नई भेल, खेत मे दरारि फाटि गेल। उपरका खेतक धान मरहन्ना भ' गेल। केकरो-केकरो गरमा धान जे अगता रोपने छल, ओकर कम दिनक धान रहने सोलहन्नी, मुदा जे वेसी दिनक गरमा धान अछि ओ अधा-छिधा। पूजाक पैघ आयोजन तँ विषेष वयवस्थाक जरुरत। मुदा लोकक उत्साहे तते जे कोढ़िला बोझ जँका काज के बुझैत। अनठौला से हल्लुको काज भारी भ जाइ छै, मुदा उत्साहित भ केला से भारिओ काज हल्लुके बनि जाइ छै।

आइ तक अइ गाम मे(बँसपुरा मे) ने कहियो कोनो यज्ञ-जाप भेल आ ने कोनो पूजा-पाठ। तँ इलाकाक लोक वँसपुराके पपीयाहा गाम बुझैत। ओना गोटे-गोटे साल, महावीर जी स्थान मे, अष्टयाम कीर्तन भ' जायत। ओहो नियमित नहि। जइ साल उपजा-बाड़ी नीक होइत ओइ साल उत्साहित भ' सब कीर्तन क लैत, मुदा जइ साल रौदी वा दाही भ जाइत तइ साल अष्टयामो या त रौदिया जाइत वा दहा जाइत। बेकता-बेकती कहियो काल भनडारा सेहो क लइत। अइ बेर काली पूजा करैक विचार सैँसे गामक लोक मिलि क' केलक। मेलो धुमधाम से हैत। पाँच दिनक मेला। नाच-तमाषा स ल' क' दोकान-दौरीक नीक व्यवस्था हैत। गाम मे काली-पूजा हैत, तँ लोक मे विषेष जिज्ञसो आ उत्साहो। भिनसर से खाइ-पीवै राति धड़ि सब यैह चर्चा करैत। काली-पूजाक प्रति लोकक मन एते उड़ि गेल जे सब अप्पन-अप्पन काज-राज छोड़ि, अही

पाछू बेहाल। मालो-जालक आ खेतो-पथारक भार स्त्रीगणे पर पड़ि गेल। मुदा ओहो सब खुषी। किअए खुषी? खुषी अइ दुआरे जे हम्मर घरबला धरमक काज मे लागल छथि, जे हमरो हैत। ओना दिवाली, एक दिना पावनि अदौ स होइत आयल, भलेही दिवालीक प्रात गोधन पूजा, दोसर दिन भरदुतिया-चित्रगुप्त पूजा होइत, मुदा एक-दोसर स अलग-अलग होइत। दषमी(दुर्गापूजा) जेँका नहि जे सप्तमी क' भगवती केँ आखि(डिम्भा) पड़िते मेला शुरु भेल आ नेने-नेने एक्के बेर जतरा दिन उसरल। मुदा अइबेर बँसपुराक दिवाली के काली-पूजा रंग चढ़ा देलक। किऐक त सब अपना मे विचार क लेलक जे जाबे तक काली पूजाक मेला चलत ताबे तक सब अप्पन-अप्पन घर-आंगन, दुआर-दरवज्जा स ल क' पोखरिक घाट, इनार चापाकल, माल-जालक खूँटा पर सेहो दीप जरौत। गाम मे काली पूजा किअए हैत? तेकर कारण भेल। कारण इ भेल जे बँसपुरा से सटले(डेढ़ कोस पर) सिसौनी मे पच्चीसो बर्ख से दुर्गा-पूजा होइत अबैत अछि। चरिकोसीक लोक(मरद-मौगी) दुर्गा-पूजा देखै सिसौनी अबैत। अप्पन-अप्पन कबुला-पाती सेहो चढ़वैत आ मेलो देखैत। साँझो दैत। बलि प्रदान सेहो करैत। बलि-प्रदान मे सिसौनीक दुर्गा नामी। किऐक त एते बलि प्रदान कतौ ने होइत। किलो भरि-भरि छागरक दाम पँच-पँच सौ भ जाइत। अइ बेरक पूजा मे एकटा घटना घटल। घटना इ जे बँसपुराक एकटा अठारह-बीस बर्खक लड़की के, पूजा कमिटीक तीन गोटे, बलजोरी पकड़ी क' भंडार घर ल जा भरि राति रखि लेलक। राति मे ते कियो ने बुझलक, मुदा भिनसर मे जखन ओइ लड़की के छोड़लकै आ लड़की कनैत-कनैत गाम पहुँचि सब के कहलकै तखन जना सबहक(जे सुनै) देह मे आगि लगैत गेलै। लड़कीक माए बताहि जेँका जोर-जोर से सरापबो करै, गारियो पढ़ै आ घर से फरुसा(फौरसा) निकालि सोझे सिसौनी दिसक रस्तो पकड़लै। साड़ीक अँचरा क' उलटा पीठि पर बान्हि, जना सन मे सिपाही जाइत, तहिना विदा भेलि। लड़कीक बापो तहिना मुरेठा बान्हि हरोथिया लाठी ल अनधुन गरिअबैत, स्त्रीक पाछु-पाछु विदा भेल। मुदा समाजक मरदो आ जनिजातियो दुनू केँ पकड़ि क' रोकलक। जेना-जेना समाचार पसरैत तेना-तेना गाम दलमलित हुअए लगल। रंग-बिरंगक गप-सप, गाम मे चलै लगलै। कियो बजैत जे चलै चलू सिसौनी मे आगि लगा सैँसे गाम क' जरा देब। त कियो बजैत जे सैँसे गाम के लुटि सबहक बहू-बेटी क' पकड़ि घिसिया क ल आनब। कियो कहैत जे ओइ सार(कमिटीक सदस्य) के खून क देब। मुदा इ सब विचार खुदरा-खुदरी छल, सामूहिक नहि। गामक बुद्धियार लोक सब सबके शान्ति करै मे लगल। एक्के-दुइये, गामक सब(मरद-मौगी) सड़क पर आबि थहा-थही करै लगल। मेला जेँका लोक सड़क पर भ' गेल। ककरो-ककरो हाथ मे लाठी त ककरो-2 हाथमे भाला त ककरो-2 हाथ मे तीर-धनुष सेहो। गाम मे सबसे अधिक उमेरक मखन बाबा। नब्बे बर्ख से उपरे उमेर। हाथ मे फराठी नेने, देह थरथराइत, टुघरल-टुघरल आबि आखि उठा के देखलनि ते बुझि पड़लनि जे आइ दुनू गामक बीच मारि हेबे करत। केमहर से के मरत, तकर ठेकान नहि। मन पड़लनि, जे एहिना एक बेरि जूरषीतल मे एकटा नढ़िया खातिर बेला आ मैनहीक बीच मारि भेल, जइ मे तीनि टा खूनो भेल आ कते गोरे के जे जाँघ टुटलै, से जिनगी भरि ठाढ़ नै भेल। हो न हो कहीं आइयो ओहिना ने हुअए। फेरि मन मे भेलनि जे सबके मनाही क' दियै। मुदा फेरि भेलनि जे हम्मर बात मानत के। विचित्र गुन-धून मे मखन बावा। थोड़े आगू बढ़ि मखन बाबा देखलनि जे जेस्त्रीगण आ मरदो धाक करै अए ओहो सब सोझे मे निधोक अन्ट-सन्ट बाजि रहल अछि। लाज-धाकक कोनो बिचारे नै। मन मे एलनि जे जहिना आगि मे जरैत लकड़ी पर पाइन देला से आगि त मिझा जाइत मुदा आगिक ताव(गरमी)

त रहवे करैत। तहिना त लोकोक बीच हैत। गुन-धुन करैत मखन बाबा फराठी बले बीच रास्ता पर ठाढ़ भ, ने आगू बढ़ैत ने पाछु होइत। अपन दायित्व बुझि आ(मखन बावा) एक हाथ से फराठी पकड़ने आ दोसर हाथ उठा, सबके शान्त रहै ले कहथिन। मुदा हुनकर अवाजो आ हाथक इषारो भीड़ मे हरा जाइत। सब अपने सूरे। थोड़े आगू बढ़ि मखन बाबा पाछु घुरि तकलनि ते देखलखिन जे एते काल चेतने लोक सब के देखै छेलियै, आब ते जेरक-जेर धियो-पूतो सब आवि रहल अए। गामक जते कुत्ता अछि सेहो सब नाङरि डोला-डोला भुकै अए। एक त देहक अब्बल दोसर मन मे चिन्ता, बीचे रस्ता पर फराठी रखि मखन बावा वैसि, दुनू हाथ माथ पर ल सोचै लगलथि। मन एलनि जे घटना भेल अछि ओ त इज्जत स जुड़ल अछि। तैँ जँ लोक जान द बँचवै चाहै अए ते नीके करै अए। मुदा गामक भीतर त ऐहेन-ऐहेन किरदानी सब दिन होइ अए। तखन कहाँ कोइ किछु बजै अए। तइ काल मे छौँड़ा-छौउड़ीक खेल भ जाइ अए। इ बात मन मे अबिते मखन बावाक मुह स हँसी निकलल। हँसैत मखनबावा सोचलनि जे एक्के तरहक काज ले सैँसे गामक लोक मारै-मरै पर तैयार अछि आ दोसर ठाम छउरा-छउरीक खेल बना दैत अछि। अजीव अछि लोकोक बुद्धि आ विचार। जँ एकरा इज्जति बुझै छै ते इज्जत बना राखह, नै जे खेल बुझै अए ते खेल बुझह। मुस्की दैत ओ सबसे आगू जा रास्ता पर पइर रहलाह। पड़ल-पड़ल कहै लगलखिन- "अगर तू सब अइ से(अपना के चेन्ह बना) आगू बढ़बह ते हम एतै परान गमा देब। नै ते अखैन शान्त हुअअ बाद मे रस्ता से जबाव देवइ।"

मखन बाबाक बात सब मानि गेल। सब शान्त भ गेल। स्त्रीगण सब घर दिसक रास्ता धेलक। धीरे-धीरे लोको पतड़ाए लगल। बाकी जे लोक रहल ओ हुनका(मखन बाबा) लग जा पूछलकनि- "बाबा, कोना जबाव देबइ?"

उत्साहित भ मखन बाबा कहलखिन- "अखन ते नहाइ-खाइ बेर भेल जाइ अए, तैँ अखन नहि। चारि बजे मे सब कियो एक ठाम बैइसू। जे करैक हैत से सब विचारि के क लेब।" सैह भेल।

चारि बजे सब ब्रह्मस्थान मे बैसल। सबहक विचार एक दिषाहे। दू पार्टी(पक्ष-विपक्ष) रहला से बैसारक रुप अलग होइत, मुदा से त नहि अछि। अप्पन-अप्पन विचार के सब जोर-जोर से बाजि-बाजि रखै चाहैत। जइ से ककरो कियो बाते ने सुनैत। सब अपने सुरे अपन बात रखै मे बेहाल। बजैत-बजैत जब सबहक पेटक बात सबटा निकलि गेलै तब अपने सब चुप भ गेल। चुप भ सब सबहक मुह देखै लगल। होइत-हबाइत सब मखन बाबा कैँ कहलक- "बाबा, अहाँ जे निर्णय करब, हम सब मानि लेब।" सबहक विचार सुनि मखन बावाक मन मे संतोष भेल। ओ अपन विचार दइ ले ठाढ़ भेला। मुदा बुढ़ापाक चलैत दुनू जाँघ थरथर कपैत। थरथराइत जाँघ देखि सब कहलकनि- "बैसिये के कहिऔ बाबा।" मुदा बैसि के कहला से सब सुनत की नहि, इ बात मन मे होइन। ठाढ़े-ठाढ़ अप्पन दुनू जाँघ के असथिर करैत मखन बावा कहै लगलखिन- "दू गामक झंझट असान नै होइत। दू गोटेक बीचक झंझट नइ छी। जहिना तू सब कहै छहक तहिना ते ओहू गामक लोक सब कहतै। अखन ते एक्के गोरेक संग घटना घटल अछि मुदा झंझट बढ़ौला से ऐहेन-ऐहेन कते घटना घटत। मारि करै जेबहक ते तोँहू मारबहक तोरो मारतह। तोँहू कपार फोड़बहक तोरो फोड़तह। हाथ-पाएर तोँहू तोड़बहक तोरो तोड़तह। अखन ने बुझि पड़ै छअ जे सोलहन्नी हमही सब मारबै आ ओ सब माइर खायत। मुदा माइर मे से थोड़े होइ छै। दुनू दिसक लोक

मारबो करै छै आ माइरियो खाइ अए।''
मखन बाबाक विचार सुनि सब मूड़ी डोला-डोला सोचै लगल। सब सब दिस तकैत। सबहक मन मे बिचारक गंभीरता अवै लगलै। मुदा तइओ मन मे सोलहन्नी क्रोध नै मेटेलै। मुदा मनक विचार मे गजपट हुअए लगलै। कखनो शान्तीक रास्ता मन मे जोर पकड़ै ते लगले मारि-दंगाक विचार। लगले मन मे खुषी अबै ते लगले तामस उठै। सबहक मुहक रुखि देखि मखन बावा आगू कहै लगलखिन- ''गामे मे की देखै छहक? जे कने हुबगर अछि ओ गरीब-गुरबाक संग केहेन बेवहार करै अए। तहिना गामोक होइ छै। अप्पन गाम(बँसपुरा) भीतर मे फोंक अछि। देखते छहक जे सब अपन-अपन नून-रोटी मे भरि दिन लगल रहै अए। ने अपना पेट से छुट्टी होइ छै आने अनकर आ कि समाजक कोनो चिन्ता रहै छै। तेही ले बेइमानी-सयतानी सेहो करै अए। सब मिलि के कोनो समाजिक काज करी, इ विचार ककरो मे मन छइहे नहि। ओना सिसौनीयो मे बेसी नहिये छै मुदा अपना गाम से थोड़े बेसी जरुर छै। किऐक त सब मिलि दुर्गा पूजा क लइ अए। जइ से साल-भरिक जे रुसा-फुल्ली रहै छै, ओ कमि जाइ छै। तेँ समाज के आगू बढ़ैक लेल दसनामा(सर्वजनिक) काज जरुरी अछि। जाबे तक लोकक मन मे दसनामा काजक प्रति सिनेह नइ आओत(औत) ताबे तक समाज आगू मुहे कोना ससरत? अइ नजरि से देखला पर बुझि पड़तह जे अपना गाम(बँसपुरा) से सिसौनी थोड़े अगुआइल अछि। सिसौनियो से अगुआइल अछि बरहरबा। किऐक त ओइ गाम(बरहरबा) मे दुर्गो-पूजा होइ छै आ पढ़ै-लिखै ले हाइयो स्कूल तक छै। बरहरबो से अगुआइल कटहरवा अछि। ऐखते छहक जे कटहरबा मे हाइयो स्कूल छै, अस्पतालो छै आ साल मे एक बेरि सब मिलि के चारि दिनक मेला सेहो काली-पूजा मे लगा लइ अए। यैह सब काज गामके आगू बढ़ैक रास्ता छी। जइ गाम मे जते बेसी दसनामा काज हैत ओइ गामक लोक मे ओते बेसी प्रेम बढ़त जखने लोकक बीच प्रेम बढ़त तखने छोट-छीन बात ले झगड़ा-झंझट कमत। झगड़ा-झंझट की होइछै? देखबे करै छहक जे सदिखन एक-दोसर मे गारि-गरौबलि, मारि-मरौबलि होइते रहैछै। जखने लोक झूठ-फूस मे ओझराइये तखने ओकर घरक काज(खेती-बाड़ी, माल-जालक सेवा) मारल जाइ छै। जखने आमदनीक काज मरल जेतइ तखने चारु कात से अभाव दौड़ल औतै। अभाव तेना भ क' पकैड़ लेतै जे ओ बेवस भ जायत। जखने बेवस हैत तखने दुनिया मे अन्हार छोड़ि इजोत देखबे ने करत। तेँ जरुरी अछि जे लोकक मन दसनामा काज दिस बढ़ै। जइ गाम मे जते दसनामा काज हैत ओ गाम ओते तेजी से आगू बढ़त।''
मखन बाबा बजिते छल कि सब अपना मे कन-फुसकी करै लगल। कन-फुसकी एते हुअए लगलै जे सबहक धियान मखन बाबाक विचार स हटि अपना दिस भ गेल। लोकक धियान हटैत देखि मखन बाबा ठाढ़े-ठाढ़ सोचै लगल जे भरिसक सबहक मन मे कोनो नव विचार उपकलै। बैसले-बैसल जोगिनदर जोर से बजै लगल- ''दुर्गा-पूजा ते आब परुका(पौरकाँ) साल हैत, मुदा काली-पूजा त लगिचाइल अछि। तेँ हम सब आइये संकल्प ली जे हमहू सब काली-पूजा गाम मे करब।''
जोगिनदरक बात सुनि सब कसि क' थोंपड़ी बजा समर्थन देलक। अही प्रतिक्रियाक फल थिक गाम मे काली पूजा। ओना रौदीक चलैत गामक किसान आ बोनिहारक दषा दयनीय, मुदा सिसौनीक घटना लोकक उत्साह कैँ एते ने बढ़ा देलक जे बोनिहारो सब एकावन-एकावन रुपैया चंदा अपने-अपने मुहे गछै लगल। बोनिहारक चंदा किसान के मुसकिल मे द देलक। मुदा एक त समाजक संग चलैक सवाल दोसर आइ धरिक परिवारक प्रतिष्ठा कैँ बँचबैक, तेसर नव काज गाम मे भ रहल अछि, तइ मे पाछू हटब, उचित नहि।

एक्के-दुइये किसानो सब उत्साहित भ गेल। एक स्वर से सब समर्थन द देलक। सबकेँ उत्साहित देखि प्रेमलाल ठाढ़ भ बजै लगल- "भाइ लोकनि, अपना गामक बहू-बेटी आन गामक मेला मे जा बेइज्जत होइ अए। एकर की करण छै? एक कारण अछि जे अपना गाम मे कोनो तेहेन काजे ने होइ अए। जखने अपनो गाम मे तेहेन काज हुअए लगत ते अनेरे ओहू सब गामबला के दहसति हेतइ जे जँ हमसब ओइ गाम(बँसपुरा) वला के किछु करबै ते ओहो सब ओहिना करत। जखने बराबरीक बिचार मन मे औते तखने चालि-ढालि बदलतै। जखने चालि ढालि बदलतै तखने सब बराबरीक रास्ता धरत। जँ से नइ करत ते हमहूँ सब ओहिना करबै जना ओ सब करत।" कहि प्रेमलाल बैसि रहल।

प्रेमलाल के बैसिते फेरि सब कन-फुस्की शुरु केलक। कनफुसकी एते हुअए लगलै जे सौजनिया भोज जँका हल्ला बुझि पड़ै। कनफुसकी देखि छीतनलाल उठि क' ठाढ़ भ खिसिया के बजै लगल- "देखू, गल्ल-गुल्ल केने किछु ने हैत। सिसौनीवला सबके एते गरमी किएअ चढ़ल रहै छै से बुझै छियै? ओ सब दस हजार रुपैआ खर्च क क' दुर्गा-पूजा क लइ अए, तेँ। ओकरा सब के बुझि पड़ै छै जे अइ परोपट्टा मे हमही सब टा पुरुख छी। हमरे सब टा के रुपैआ अछि आ आन-आन गाम वला मौगी छी, ओकरा सव के रुपैआ छइहे नै। तेँ पुरुख बनि ओकरा सबके जबाव दिअए पड़त। ओ सब दस हजार रुपैया दुर्गा-पूजा मे करै अए हम सब पचास हजार रुपैया खर्च क क' काली-पूजा करब। जँ सवैया-डयोढ़ा काज करब ते ओ सब मद्दिये ने देत। किऐक ते पच्चीस बर्ख से ओकर मुह अगुआइल छै। एक बेरि समधानि के दबैक काज अछि। तेँ तेना के दाबैक कोषिष करु जे ओ सब बुझत हमरो दादा कियो अछि। एक बेरि हरदा बजबैक अछि। तेँ, भने अखन सब बैसिले छी, अखने पूजा कमिटी बना लिअ। पूजा कमिटी मे सब टोल आ सब जाइतिक सदस्य बना लिअ। जँ सब टोल आ सब जाइतिक सदस्य नइ बनाएव ते अनेरे लोकक मन मे अनोन-विसनोन हुअए लगतै। ततबे नइ, सब जाइतिक सदस्य भेने काजो मे असान हैत किऐक त सब तरहक काज करैक लेल अनुभवी लोक भेटि जायत।"

छीतन लालक कारगर विचार के सब एक मुहरी समर्थन देलक। कमिटी बनै लगल। सब टोल आ सब जाति मिला क एक्केस गोटेक कमिटी बनि गेल। एक्कैसो सदस्य बैसार मे। सब नौजवान। एक्के बेरि सब अपना-अपना जगह पर ठाढ़ भेल। सौंसे गामक सब आखि उठा-उठा के बेरा-बेरी एक्कैसो के देखलक। एक्कैसोक मन मे खुषी जे हमसब परिवार स आगू बढ़ि समाज मे एलौ। तेँ सब मुस्कुराइत। एक्कैसो गोटे एक दिषि बैसल आ शेष समाजक दोसर दिस। किऐक त कमिटीक लेल अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आ कोषाध्यक्षक जरुरत होइत। अध्यक्ष के बने? अइ सवाल पर सब सबहक मुह देखै लगल। किऐक त गाम मे पहिले-पहिल कमिटियो बनि रहल अछि आ तेकर अध्यक्षो बनत। तेँ जहिना अध्यक्ष बनैक इच्छा सबहक मन मे, तहिना अनभुआर काज बुझि डरो। गुनधुन करैत रघुनाथ अप्पन पितिऔत भाइ, देवनाथक नामक प्रस्ताव अध्यक्षक लेल केलक। देवनाथक परिवार गाम मे सबसे अगुआइल। अगुआयल अइ माने मे जे जाइतियो पैघ आ धनो बेसी। दोसर गोरेक नामक प्रस्ताव नइ देखि मंगल उठि क' ठाढ़ भ अप्पन नाम अध्यक्षक लेल रखलक। जखने दू गोरेक नाम एलै कि बैसार मे गुनगुनी शुरु भेल। जाइतिक मामला मे मंगल पछुआइल। देवनाथ आ मंगल, गामक स्कूल स ल क' काओलेज संगे-संग पढ़ने। ओना पढ़ै मे मंगल तेज मुदा रिजल्ट देवनाथक नीक होय, किऐक त देवनाथ धुड़फन्दा। जना-जना दौड़-बरहा क क' नीक रिजल्ट आनि लिअए। मंगलक नाम सुनि दुनू भाइ-देवनाथ आ रघुनाथ आखिक इषारा से गप-सप करै लगल। कनिये कालक बाद

रघुनाथ, मंगल के पलौसी दैत कहलक- ''भैया, हमरा लिये जेहने अहाँ तेहने देवनाथ भैया। अहूँ दुनू गोरे संगिये छी। संगे-संग पढ़नौ छी। तेँ हम कहब जे देवनाथ भैया के अध्यक्ष आ अहाँ उपाध्यक्ष बनि पूजा-कमिटी चलाउ।''

मंगलक मन मे सिर्फ कमिटिये चलवैक बात टा नहि, समाज के आगू मुहे बढ़वैक विचार सेहो। बच्चे से देवनाथक चरित्र के मंगल देखने। मुदा समाज त पोखरिक पाइनिक सदृष्य होइत। जहिना पोखरि मे गोला फेकला से पाइन मे हिलकोर उठैत मुदा रसे-रसे असथिर होइत, पुनः पहिलुके रुप मे चलि अबैत। जे बात मंगल जनैत। मंगलक मन मे एकटा आरो बात घुरिआइत। ओ बात इ जे एक दिन(करीब तीनि साल पहिने) एकटा गामेक लड़की संग देवनाथ दुरबेवहार करैत रहए। ओहि समय मंगल हाट स अबैत छल। ओ लड़की मंगल के देखि कानि-कानि देवनाथक संबंध मे कहलकै। मंगलक तामस बेकावू भ गेलै। देवनाथ के बिना किछु पुछनहि चारि-पाँच थापर गाल मे लगा देलक। थापर लगौलाक उपरान्त तामसो कमलै। डर से देवनाथ थर-थर कपैत। ओना मंगलो थरथराइत। मुदा तामसे। मंगल देवनाथ के कहलकै- ''बच्चा से अखन धरिक संगी छैँ छोड़ि दइ छियौ, नइ ते समाजक बेटी संग अतियाचार केनाइ केहेन होइ छै, से सिखा दैतियौ।'' दुनू हाथ जोड़ने देवनाथ आगू मे ठाढ़। जिनगी भरि(अखन धरिक जिनगी) जे देवनाथ हँसी-मजाक से ल क' सब रंगक बात मंगलक संग करैत आइल छल, ओइ देबनाथ के आइ मुह स बकार नै निकलि रहल छै। जहिना बोली थरथराइत तहिना करेज। जेना कोनो अपराधी न्यायालय मे न्यायाधीषक आगू अपना के बुझैत तहिना मंगलक आगू मे देवनाथ। आखि से नोर बहबैत देवनाथ दुनू हाथ जोड़नहि बाजल- ''भैया, हम जे केलौ से पौलौ। संगी होइक नाते एकटा बात कहै छिअह जे अइ घटना के तीनि आदमी छोड़ि चारिम नै बुझै।''

हँसैत मंगल कहलकै- ''आइ कान पकड़ि ले जे ऐहेन काज समाजक बहीनि-बेटीक संग जिनगी मे कहियो ने करब। समाजक ककरो बहीनि वा बेटी समाजक होइ छै। जाबे तक ओकर विआह-दुरागमन नै भेल रहै छै ताबे तक ओ माए-बापक ऐठाम रहि समाजक बीच रहै अए, तकर बाद त ओ सदा-सदाक लेल समाज छोड़ि दोसर समाज मे मिलि जाइ अए।''

यैह बात मंगलक मन मे घुरिआइत।

रघुनाथक बात के जबाब दैत मंगल कहै लगलै- ''बौआ रघु दसनामा काजक(सार्वजनिक काजक) शुरुआत गाम मे भ रहल अछि। मुदा समाज त टुकड़ी-टुकड़ी भ छिड़िआयल अछि। तेँ सबसे पहिने ओइ टुकड़ी सब कैँ बीछि-बीछि समेटए पड़त। जँ से नै हैत त स्वस्थ समाजक निरमान(निर्माण) कन्ना हैत। अखन धड़िक जे समाजक ढाँचा रहल ओ बेढ़ंग अछि। ओहि बेढ़ंग के ढंगर बनबैक अछि। जाबे तक से नै हैत ताबे तक वेइमान, शैतान, गुण्डा, बदमाष समाज पर हावी रहत। जाबे धरि ओ तत्व हावी रहत ताबे तक समाजक असली करता लुटाइत रहत। कमाइत कोइ आ खाइत कोइ। जे होइ अए। तेँ दसनामा काज मे समाजक बच्चा-बच्चा के बराबरीक हिस्सा हेवाक चाहियै। मुइल-टूटल कियो किअए ने हुअए मुदा ओकरा मन से इ बात निकलि जेबाक चाही जे इ काज(दसनामा) हम्मर नै फलनाक छियै। हम मात्र करैवला छी, करबैवला नहि। इ बात सत्य जे हमरा सबहक बाप-दादा हर जोतैत आयल जे हमहू सब करै छी। तहिना कियो मोटा उठबैत आयल, त कियो अप्पन श्रम के दोसराक हाथे बेचैत आयल। कियो पालकी उठबैत आयल ते कियो ढोल-पीपही बजवैत, नीच-स नीच काज हमरा सबहक बाप-दादा से समाजक किछु गोटे करवैत आयल,

अखनो करबै अए। की हमरा शरीर मे ओ शक्ति नै अए जे ओकरा बदलि सकब। आजुक समयक इ मांग भ गेल अछि। तेँ नजरि स काज के आगू बढ़ौल जाय। अखन गामक सब बैसल छी तेँ आइये अइ बातक निरनय(निर्णय) भ जेवाक चाही। हम नइ चाहै छी गाम मे दसनामा काज नइ हुअए। मुदा जना आन-आन गाम मे देखै छी तना नै हुअए देब। जँ से हैत ते हमहू सब फुट भ दोसर जगह(ठाम) पूजा करब।"
मंगलक बात सुनि सब चुपचुप भ मने-मन सोचै लगल। सबहक मन मे सब बात अँटबो ने करै। किऐक त अखन धरि जइ काजक अभ्यस्त भ गेल अछि आ आखिक सोझहा मे आन-आन गाम मे देखै अए, वैह बात मन मे नचैत। मुदा मंगलक विचार नव मनुक्ख, नव समाजक लेल अछि।
सबकेँ चुप देखि मंगल दोहरा क' बाजल- "जहिना नव घर बनवै ले पुरान घर के उजाड़ै पड़ै छै। जँ से नै उजाड़त ते नवका घरक नीब(वुनियाद) कोना देत। अगर पुरने घरके नव ढंग से बनवै चाहत ते ओ नव घर नहि, पुरना घरक मरम्मत हैत। सब कियो देखै छियै जे जते-कतौ दुर्गा-पूजा वा काली पूजा होइ अए, ओइ ठाम मुरती कुम्हार बनवै अए। जे माइटिक काज छियै। मुरती बनबैक लेल चाल बढ़ही बनवै अए। घर गरीब-गुरबा बनवै अए। मुदा सब काज भेला ओ पूजाक हकदार कोन बात जे स्थानक भीतरो जेवाक अधिकारी नइ रहै अए। इ विषमता अखन धरि समाज मे अछि। तेँ हम ताबे तक विरोध करैत रहब जाबे तक इ विषमता मेटा जायत। हमर अध्यक्ष बनैक लिलसा नइ अछि, मुदा विषम के सम बनवैक जरुर अछि। तेँ हम कहब जे जते गोटे जते टोल आ जाइतिक छी ओ सब अपना-अपना मे विचार क निर्णय करु।"
मंगलक बात सुनि सबहक मन मे द्वन्द्व उत्पन्न हुअए लगल। किऐक त समाजक अधिकांष लोक परजीवी बनि गेल अछि। परजीवी अइ माने मे जे कियो दोसराक कमाइ लुटि वा ठकि के जीवैत अछि। ते कियो दोसराक बले(जना कोट-कचहरीक पैरवी, थाना-बहाना, खरीद-विक्री, डॉक्टर-वैद्य। ...?) जीवैत अछि। तेँ एक-दोसर स टूटै नहि चाहैत अछि। जे समाजक विषमताक जड़ि छी। पैइच-उधार, लेन-देन, एकर मुख्य अंग छियै। बड़ी काल धरि बैसार मे गुन-गुन, फुस-फुस होइत रहल। परोछ मे त उचित बात बजनिहारक कमी नहि मुदा सोझा-सोझी कियो नहि। एकरो दू कारण छैक। पहिल बुधियार लोक अनका कन्हा पर बन्दूक रखि चलबै चाहैत आ बूड़िबक डरे नै बजैत।
गुन-गुन, फुस-फुस होइत देखि मंगल बुझि गेल। मन पड़लै बुद्धदेवक ओ बात- जे बीणाक तार के ओते नै कड़ा कड़ी जे टुटि जाय आ ने ओते ढील राखी जे अवाजे ने निकलै। तेँ किछु इम्हरो आ कुछ ओम्हरो से(अर्थात् मध्य स) ल क' डेग उठेबाक चाही। उठि क' ठाढ़ भ बाजल- "हम अप्पन नाम वापस लइ छी। देवनाथे अध्यक्ष हेता। मुदा आइ स ल क' जावे धरि पूजाक प्रकरण समाप्त नहि भ जायत ताबे तक सब काजक निर्णय कमिटीक बीच हैत। जँ कियो अपना विचारे बलधकेल कोनो काज क समाजक नोकसान करत त ओकर फैसला समाजक बीच हैत।"
कहि मंगल बैसि गेल। मंगल क' बैसिते देवनाथ उठि क' ठाढ़ भ बजै लगल- "जिनगी मे पहिले-पहील दिन समाजक काज(सार्वजनिक) करैक मौका भेटल, तेँ मन मे बहुत खुषी अछि। मुदा हमहू त अनाड़िये छी, तेँ भुलचुक हेबे करत। हम चाहब जे पूजा-प्रकरणक जे मुख्य-मुख्य कार्य अछि ओ समाजेक बीच तय-तसफिया भ जाय। जहि स समाजक नजरि मे सब बात रहत।"
बहुत बढ़िया! बहुत बढ़िया बात देवनाथ कहलक। आइये(अखने) पूजाक मुख्य-मुख्य काजक निर्णय हम सब

मिलि के क ली। तर्क-वितर्क हुअए लगल। तर्क-वितर्क होइत-होइत निर्णय भेल-
1. गामेक कारीगर(कुम्हार) मुरती बनवे। ओना एक पर एक कारीगर बाहर अछि, मुदा पूजा-आराधना मे कारीगरी(कला) नइ देखल जाइ छै। देखल जाइ छै ओहि देवी-देवताक स्वरुप। दोसर बात जे जँ हम अप्पन बनौल वस्तु के अपने अधला मानव, ते हम आगू कोना बढ़व? तँ गामक जे कला अछि ओ ऐहेन-ऐहेन अवसर पर आगू बढ़ैत अछि।
2. काली मंदिर,(मंडप) गामेक घरहटिया बनवे। जेकरा घर बनवैक लूरि रहतै ओ मंडप किएक ने बनौत। संगे इहो हैत जे अधिक से अधिक गामक लोकक भागीदारी हेतैक।
3. पूजाक लेल, परम्परा स अवैक पुरोहितक संग ओहू आदमी के अवसर भेटै जे पूजा स सिनेह रखै अए। चाहे ओ कोनो जाइतिक किअए ने हुअए। समाज समाजक निरमते नहि नियामक सेहो होइत अछि।
4. मनोरंजनक लेल, गामक कलाकार के सेहो अवसर देल जाय। संगे वाहरक ओहन-ओहन तमाषा आनल जाय, जेहेन अइ इलाका मे नइ आयल अछि। इ बात सत्य जे पैघ कलाकारक कला अधिक लोक देखबो करैत आ प्रसंसो(परसनसो) करैत, मुदा पैघियो कलाकार मे इ गुण होइत जे छोटो कलाकारक कला देखि आगू बढ़बैक कोषिष करैत। तँ दुनू-गामोक आ बाहरोक कलाकार कँ अप्पन-अप्पन कला देखवैक अवसर भेटए।''
5. पूजा समितिक सदस्य आ अतिरिक्त काजकेनिहार से बेहरी नै लेल जाय किऐक त ओकर समय लागि चुकल रहै छै।
6. जइ परिवार से बेहरी लेब, अगर जँ ओहि परिवारक कियो दोकान-दौरी करत, ते ओकरा से बट्टी नइ लेल जाय।
7. गामक जते गोटे काज करत, ओइ मे नीक-नीक काज केनिहार कँ पुरस्कृत कयल जाय। संगे अधला केनिहार के आगू करैक मौका नइ देल जाय।
सैँसे गामक लोकक बीच सातो निर्णय भ गेल। सातो निर्णय के अध्यक्ष पढ़ि के सबके सुना देलक। बैसार उसरि गेल।
खा-पी के मंगल बिछान बिछबैत राइतिक साढ़े एगारह बजैत। मंगल से भेटि करै ले जोगिनदर आयल। सतरंजी बिछा मंगल दुनू हाथ से जाजीम के पकड़ि झाड़लक। झाड़ैक अवाज कनी जोर से भेलै। अवाज सुनि जोगिनदर दलानक दावा लग डरे बैसि रहल। मन मे भेलै जे कतौ थ्री-नट्टा चललै हैं। कान ठाढ़ क अकानै लगल। मुदा ने गल-गुल सुनै आ ने ककरो देखलक। मन असथिर भेलै, तखन उठि क' ठाढ़ भेल। ठाढ़ भ मंगल के सोर पाड़लक। कोठरिये से मंगल अबाज दैत बहरायल। बाहर आबि ओसारक चैकी लग आबि जोगिनदर के कहलक- ''आबह! आबह! भाइ, निच्चा मे किअए ठाढ़ छह? दुनू गोरे चैकी पर बैसि गप-सप करै लगल। जोगिनदर मंगल के कहलकै- ''भाइ, आइ तक तोरा, ऐना भ क' नै चिन्हने छेलियह। मुदा तोहर औझुका विचार देखि, बारह हाथक छाती भ गेल। भाँई मे क्यो दादा हुअए।''
जोगिनदरक बात सुनि मंगल बाजल- ''भाइ, राइत बहुत भ गेल। भोरे उठैक अछि। एते राइत मे किअए ऐलह, से कहअ?''
''एती राइत मे अबैक खास कारण अछि। तँ निचेन बुझि एलौ। तू ते देखते छहक जे अखन तक हम गाम मे दहलाइते छी। ने रहैक ठौर आ ने जीवैक आषा। मुदा......।

'मुदा की?'
"मुदा यैह जे हम करोड़पति छी। करोड़क लप-झप रुपैआ हमरा बैंक मे अछि।
करोड़क नाम सुनि मंगल चैंकि गेल। अकचकाइत पूछलक- 'करोड़ कते होइ छै से बुझै छहक?'
"हँ। एक सौ लाख एक करोड़ होइ छै। एक सौ हजार एक लाख होइ छै। आ दस सौ के हजार होइ छै।"
'रुपिया रखने कत-अ छहक?'
"अइ गप के छोड़ह। जहिया से दिल्ली नोकरी करै गेलौ तहिये से रुपैआक ढेरी लग पहुँच गेलौ। शुरु मे जे रुपैआ देखियै ते हुअए जे छपुआ कागज छियै। मुदा किछु दिन रहला पर रुपैआ हथिअवैक लूरि भ गेल। (कमाइक नहि) अखन, दिन भरि मे लाख रुपैआ हसोथब कोनो भारी कहाँ बुझै छियै। मुदा आब ओइ से मन उचैट गेल। आब एक्के टा इच्छा अछि जे बाहरक खेल-तमाषा छोड़ि, मनुक्ख जेँका गामे मे रहब। आब जँ गामो मे रहब, ते ओते-पूँजी भ गेल जे नीक-जेँका जिनगी बीति जायत।"
'हमरा की कह-अ चाहै छअ?"
"अखैन ते सब पूजा मे ओझड़ायल छी। तैँ पूजाक पछाति तू हमरा मदति क दाय। अखैन हम एक लाख रुपैआ ल क' आयल छी। अप्पन जे लोक सब छअ, जदि ओकरा रुपैआक जरुरी होय ते हम बिना सुदिये के सम्हारि देबै। मूड़क-मूड़ घुमा देत। संगे तोरो कहै छिअअ जे रुपैआ दुआरे पूजा मे कोनो अभाव ने होय।"
जोगिनदरक बात सुनि मंगलक मन मे द्वन्द्व शुरु भेल। एक मन कहै जे रुपैआ दुआरे बहुत काज छुटि जाइ अए, से आब सम्हरि जायत। त दोसर मन कहै की हम डकैतक भाँज मे ने पड़ल जाइ छी। एसमगलर छी की माफिया? किछु बुझिये ने पड़ि रहल अछि।
दोहरा के मंगल पूछलकै- 'एते रुपैआ कन्ना भेलह?'
मंगलक प्रष्न सुनि जोगिनदर चैंकन्ना भ चारु दिषि तकै लगल। मुदा ककरो नहि देखि घुन-घुना के कहै लगलै- "भाइ, जकरा ऐठिन हम नोकरी करै छलौ ओ बड़ पैघ कारबाड़ी। हजारो नोकर, ढेरो कारबार। मुदा सबसे भीतरका कारोवार रहै विदेषी रुपैआ के भजौनाइ। कोन-कोन देषक लोक कोन-कोन रुपैआ ल क' अबै आ अपना रुपैआ से भजबै, से चिन्हबो ने करियै। मुदा हमरा पर सेठबा के बड़ विसबास होय। किअए ते हमही सदिखन लगो मे रहियै आ चाहो-पान आनि-आनि दियै। निसोदंड राइत मे एक आदमी गाड़ी पर अबै आ भरि दिन मे जते रुपैआ भेल रहै ओ सब द दइ। आ ओकरा पासवुक पर रुपैया चढ़ा दै। सेठवा के जखैन जते रुपैआक काज होय, हमही बैंक से आनि दिअए।"
मंगलक भक्क खुजल। पूछलकै- "दिल्ली सनक शहर मे पुलिस आ सी.आइ.डी. किछु ने करै?"
हसैत जोगिनदर कहलकै- "सबके महीना बान्हल छै।"
प्रषासनक इ रुप देखि मंगल हतोत्साह(हतोतसाह) भ गेल। मन मे अबै लगलै जे तखन लाक जीति कइअ दिन? छाती थर-थर कपै लगलै। मुदा मन के असथिर करैत पूछलकै- 'तू ओहि सेठक संगे रहै छह कि.....?'
जोगिनदर- "दस बर्ख ओइ सेठवा अइठिन रैह के ओकर सबटा तड़ी-घटी बुझि लेलियै। नोकरी नइ छोड़लियै। ओकर कहलियै जे हम गाम जायव। माए दुखित अछि। तैँ अगुरबार रुपैआ दिअ जे माइयक

इलाज करैब। भरि दिन मे कते शराब पीबे तेकर कोनो ठेकान ने, मुदा तइयो कतौ काज मे नै हुसै। हम सोचलहु जे एकरा ऐहेन कड़गर शराब पीआबी जे बेहोष भ जाय। सैह केलहुँ। जखन शराब पीलक आ निसां जोर करै लगले तखन वाहवाही दैत कहलक- ''नीक माल अछि।'' हमहू अनठा देलिऐ। मने-मन सोचलौ जे जँ कही किछु रुपैआ ल क' पार करबै ते कानून मे ओझड़ौत। तैँ की केलहुँ जे कहलियै मालिक, हम चारि बजे भोरे चलि जायब। किएक त गाड़ी सवा चारि बजे टीषन से खुजै छै। अखने सब समान जोड़िया लेब। ओकरा निसां चढ़ैत जाय। जखैन बुझि पड़ल जे आब बेमत भ गेल, तखैन कहलियै- ''मालिक रुपैया-पैसा अखैनिये द दिअ।'' पड़ल-पड़ल ओ कुन्जी द देलक। कोठरी खोललौ ते रुपैआ देखि के मने उनटि गेल। जहिना अपना सब अन्न भरल बोरा थकिऔल। एकटा वोरा निकालि, कोठरी बन्न क, चाभी पलंग पर रखि, अपना वैग मे रखि लेलौ। समानो सब सरिया लेलौ। सेठानी लग जा क' कहलियै- ''मलिकाइन, हम भोरे गाम चलि जायब।'' ओकरा लग से निकलि दोस-महिम से भेटि-घाट करैत थाना पर गेलौ। सब चिन्हरबे। कहलियै जे भोरे हम गाम चलि जायव तैँ अखन भेटि करै एलौ। सबसे भेटि-घाट करैत अपना डेरा ऐलौ। राति मे सुतलौ नै। दू बजे राति मे निकलि दोसक ऐठाम चलि गेलौ। सब बात दोसो के कहलियै। बीस लाख से उपर रुपैया रहै। ओकरे पूँजी बना हमहूँ वैह करोबार(विदेषी रुपैआ के भजौनाइ) शुरु केलौ। सबसे चिन्हा-परिचय रहबे करै तैँ कतौ दिक्कत हेबे ने करै। वैह हमर कमाइ अछि। मुदा आब ओइ काज से मन उचटि गेल। तैँ, आब गामे मे रहब।''

मंगल- 'अप्पन की योजना(जोजना) छह?'

जोगिनदर- ''अप्पन मन अछि जे दस कट्ठा घरारी जोकर जमीन भ जाय आ पाँच बीघा धनहर। दस कट्ठा घरारी अइ दुआरे चाहै छी जे दसो कट्ठा के चारु भर से भरि मरद ऊँच छहर-देवाली द देबै। ओइ बीच मे डेढ़ कट्ठा मे चैघारा घर बना लेब। माछ पोसै ले दू कट्ठा खुनि लेब। वैह(ओही) माइट से सौंसे भरा सेहो देवै। दू कट्ठा मे फल सब लगा लेब। दू कट्ठा तीमन-तरकारी ले राखब आ बाँकी अढ़ाइ कट्ठा ओहिना खसा के राखब। किऐक ते अन्नक मास मे खरिहानक जरुरी होइत। ओहुना कते काज परिवार मे होइत रहै छै।''

मन पाड़ैत मंगल कहलकै- 'देखते छहक जे बथनाहा(बगलवला गाम) मे अवधिया सब अछि। ओकरा सबहक खेत अपनो गाम मे अछि। ओइ मे से एक गोरे बैंक मे नोकरी करै अए। समांगोक पातर अछि। असकरे अछि। आन-आन गोरे ते अपने खेती करै अए, मुदा ओकर खेत बटाई लागल छै। ओ अपना गामक(बथनाहा छोड़ि) जमीन वेचै चाहै अए। करीब दस बीघा जमीन अपना गाम मे छै। अगर चाह-अ ते दसो बीघा भ जेतह। ओहो पाँच बीघा से कम नै बेचै चाहै अए। अगर खुदरा-खाइन बेचते ते बिका गेल रहितै। मुदा ने एक ठाम पाँच बीघा कीनैक ककरो ओकाइत छै आ ने ओ खुदरा बेचत। मुदा एकटा बात पूछै छिअ? अखन धरिक जे तोहर जिनगी छअ ओ हमरा विचारक विपरीत छअ। तैँ हमरा तोरा बीच कते दिन अपेछा चलत, तइ पर शंका अछि। इ कोना मेटाइत?'

मंगलक बात के सुनि जोगिनदर गंभीर भ सोचै लगल। थोड़े काल सोचि जोगिनदर जबाव देलक- ''मंगल भाइ, तोहर शंका सोलहन्नी सही छह। मुदा हमरो मन अप्पन काज से उचैत गेल। सदिखन, चोरक मन जँका हमरो मन डराइले रहै अए। हरदम होइत रहै अए जे कखन सड़क पर घूमै छी आ कखन जेल मे रहब, तेकर कोनो ठीक नहि। ओना रोडक सिपाही से ल क' नीक-नीक पाइवला सलामी दइ अए। मुदा हम

इहो बुझै छियै जे जोगिनदर के नहि, जोगिनदरक धंधा आ पाइ के सलामी दइ छै। कहियो काल जे राइत मे सपनाई छी ते ओहिना देखै छियै। जे आगू-आगू सी.पी.आइ. गरिअवैत आ पाछु-पाछु सिपाही थोपड़बैत रास्ता पर नेने जाइ अए। मन मे कखनो आन विचार नइ अबै अए। सदिखन देषी-विदेषी पाइयेक रहै अए। तेँ कखनो मन मे होइ अए जे आगू मुहे सरसराइल जा रहल छी त लगले होइ अए जे अइ दुनियाँ से पड़ाएल जा रहल छी। हमरा ले अइ दुनिया मे पाइ छोड़ि की अछि?'' एते-बजैत-बजैत जोगिनदरक दुनू आखि से दहो-बहो नोर खसै लगलै। दुनियाक प्रति आकर्षण देखि मंगलोक हृदय दल-दल भ अपना मे जोगिनदर के साटै चाहैत। मुदा तरल वस्तु रहनहुँ करुतेल आ मटिया तेल कोना मिलत? जँ घोड़ाइयो जायत ते दुनू दुनूक गुण के समाप्त क' देतए। मुदा मनुक्खक जे बदलैक क्रिया अछि ओ एते प्रबल(परबल) अछि जे शायद अनुपमेय अछि। तेँ कोनो मनुक्खक संबंध मे निसचित(निष्चित) बात कहि देब असंभव बात थिक। हँ जिनगीक दषा देखि कहलो जा सकै अए। मुदा तइओ मंगलक मन मे एकटा नमहर खाइध बुझि पड़ै। ओ इ जे अखन धरि हम तपबे केलौ मुदा इ ते तपक उनटे चलल। उम्र मे अधिक अन्तर भले ही नइ हुअए मुदा जिनगी त दू दिषा से बढ़ि रहल अछि। मने-मन सोचै लगल। एकटा बात मन पड़लै। ओ(मंगल) मात्रिक(मातरिक) गेल रहै। कोषिकन्हा मे मात्रिक। कोषी स(पूव मे कोसी आ पछिम मे कमलाक बीच जते धार-धुर छै) ल क' कमला धरिक पाइन(बाढ़ि) ओहि गाम होइत दछिन मुहे जाइत। एकटा बाँसक बीट रहै। ओहि मे चालीस-चालीस हाथक बाँस रहै। अगते बाढ़ि(वैषाखे मे) आबि गेलै। गामक लोक गाम छोड़ि, माल-जालक संग सब अप्पन-अप्पन कुटुमक ऐठाम चलि गेल। ऐहेन परिस्थिति मे जन्म भूमि स्वर्ग कोना भ सकै अए? पनरह हाथ पाइन ओइ बाँस मे लगि गेल। खाइधनुमा बाध। अधिक दिन धरि बाढ़ि रहलै। ओइ बाँस मे पनरह हाथ उपरक गिरह पर से बाँसक कोपड़ रहलै। ओइ बाँस मे पनरह हाथ उपरक गिरह पर से वाँसक कोपड़ द देलकै। जखन पाइन सुखलै ते आमेक गाछ जैँका बाँसक बीट बुण् पिड़ै। सोचैत-विचारैत मंगलक मन मे एलै जे एकटा(षत्र्त) बान्ह स बान्हि दोसती क लेब। मुस्कुराइत मंगल कहलक- ''
भाइ, जहिना तू दरबज्जा पर ऐलह तहिना तोहर सुआगत करब हमरो काज भ जाइ अए। मुदा हम आइ धरि झूठ नै बजलौ, से हमरा कोना निमहत?
मंगलक बात मंगलक पिता गणेष सेहो सुनलक। ओ पेषाब करै ले निकलल छल। हाँई-हाँई के पेषाब क गणेष दुनू गोटेक बीच पहुँच गेल। जोगिनदर चीन्हि गेल। बाजल- ''आबह-आबह कक्का! तोहूँ एतै बैसह।'' गणेष कहलक- ''बौआ हम बैसिवह नहि। ठाढ़े-ठाढ़ अप्पन एकटा खिस्सा सुना दइ छियह। करीब चालीस साल पहिलुका बात छी हम जुआन होइते रही। मोछ-दाढ़ीक पम्ह अविते रहै। माए-बाबू जीविते रहथि। हम एक्को धुर जमीन बढ़ेलहुँ नहि, जते एखनो अछि ओते ओहू दिन मे रहै। एहिना कातिकक मास रहै। तीन बजे करीब(बेरु पहर) एकटा मोटरी नेने, नाना पहुँच गेलाह। अबिते माए के कहलखिन- ''दाय, हम गंगा नहाइ ले जाइ छी। गामक बड़ लोक जाइ अए। हम ओकरा सब के कहि देने छियै जे टीषने पर भेंट हेबह। तेँ ताबे हमहू सुसता लइ छी आ तोहू तैयार हुअअ। खेवा-खरचा हमरा अछिये तेँ कोनो चीज लइ-दइ के नै छअ।'' नानाक बात सुनि माए गुम्म भ गेलि किअए त एक दिन पहिने गाय विआइल छलै। अइ सब मे माए बड़ सुतिहार रहै। पहिने गाय विआइल छलै। अइ सब मे माए बड़ सुतिहार रहै। माइयक मन मे दू टा बात टकराइ। एकटा इ जे हम ओमहर(गंगा नहाइ ले) जाइ आ इमहर गाय के किछु भ जाय, तखन ते

दस मासक मेहनतक मेहनहताना चलि जाइत। आ दोसर बात इ होय जे गाँवा छोड़ि के हमरा संग करै आयल, हम नइ जेवइ आ ओमहर गाँओ छुटि जाय, तखन की हेतइ? तेँ गुम्म। ताबे बवुओ मालक घर से निकलि के आयल। हम ते रहबे करी, मुदा हमर मोजरे कोन। बावू आबि के गोड़ लागि आगू मे ठाढ़ भ गेलखिन। ने माए किछु बजैत आ ने बावू। नाना अप्पन बात बाजि चुकल रहथि तेँ ने किछु बजैत। पानि आनि के हम पहिनहि राखि देने रहियै। तीनू गोटे के चुप देखि हमही कहलिअनि- ''नन्ना पैर धुअ-अ ने।'' एतबे बजैत देरी कि नन्ना बजै लगलखिन- ''नै-नै, पैर-तैर नै धुअब। टेनक टेम भेल जाइ छै।'' सामंजस्य करैत माए बाजलि- ''बच्चा, छोड़ैवला कोनो ने छह। नाना संगे तोँही जा...।'' मन अपनो रहै, मुदा किछु बाजी नहि। किऐक त एक दिन एकटा खिस्सा सुनने रहियै जे गंगा तेहेन भारी(नमहर) धार अछि जइ मे सैँसे दुनिया क मनुक्ख स ल क' चुट्टी-पीपरी धरि अटि जायत। तइओ पेट(गंगाक पेट) खालिये रहत। तेँ देखैक जिज्ञासा रहै। नाना संगे विदा भेलौ। जखन गंगा मे पैसि(दुनू गोटे) नहाइ लगलौ कि नाना कहलनि- ''नाइत, मने-मन गंगा के कहि दहुन जे आइ से झूठ नै बाजब, आ डूम ल लाय।'' सैह केलौ। दू सालक बाद बाबू मरि गेल। घरक भार पड़ि गेल। मुदा काज करैक लूरि त सबटा रहबे करै। कहियो कोनो भार बुझिये ने पड़ै। झूठ बजैक जरुरते ने हुअए। किऐक ते भरि दिन अपना काज मे लागल रही। दछिनबारि टोल मे सरुप रहै। दस बीघा खेतो रहै। मुदा फुर्र-फाँइ वला आदमी। ललबवुआ। ने खेती-पथारी नीक जँका करै आ बड़द खूँटा पर रखने रहै। भरि दिन ऐमहर से ओमहर केने घुरै। कनफुसकी क-क क' लोक सब के खूब झगड़ा लगबै। रहवो करै बड़ डाहि। अनके हर-बड़द से खेतियो करै आ जइ जन के खटबे ओकरा बोइनो ने दइ। तेँ कि होय जे दस बीधा खेत रहनौ दुइओ मासक बुतात नै होय। जेकरा से जे चीज लइ ओकरा फेरि घुमा के नइ दइ। एक दिन अपना ऐठाम आबि कहलक- ''गणेष, सुनै छी तू चाउर बेचै छह?''
हम कहलियै- 'हँ।'
''हमरा एक मन चाउरक काज अछि।''
''भऽ जायत। ककरो पठा देवइ, नइ जे अपने नेने जायब ते ल लिअ।'' ओ चाउर तौला के छोड़ि देलक कहलक जे तोरा तगेदा करैक काज नहि। जखने हाथ मे रुपैआ औत तखने तोरा द देवह। हम कहि देलियै- ''बड़बढ़ियाँ।'' छह मास बीति गल। जखन जुआन से कहि देने रहियै जे तगेदा नइ करब तखन तगेदा कन्ना करितियै। साल बीत गेल। दोसर साल फेरि ओहिना केलक। तेसरो साल केलक। ओ चाउरक दाम दिअए नै आ हम तीनि खेप चाउर द देलियै। पाइयक दुआरे अपन काज बिथुत भ जाय। तब मन मे आयल जे कमाइ हम खाय दोसर, इ त सोझा-सोझी गरदनि कट्टी भ रहल अछि। ओह, से नइ ते आब चाउर गछबे ने करबै। कहबै जे नइ अछि। मुदा फेरि मन आयल जे झुठ कोना बाजब। विचित्र स्थिति भ गेल। हारि के झूठ बजै लगलौ। तेँ बौआ, तू दुनू गोरे जवन जहान छह, कहि दइ छिअ-अ जे नीक-अधलाक विचार करैत आगू मुहे पाएर उठविहह।''

2

अमावासिया दिन। आइये दिवालियो होएत आ कालियो पूजा।
(अगिला अंकमे)

*साकेतानन्द*

(कथा)

कृतं न् मन्ये.

''नँइ बाबू साहेब, तलाशी त' एक_एक वस्तुक हैत, पुलिस पार्टी आबि रहल अछि...एस.पीये साहेबके औंर्डर छै, साहेब अपनहि आबि रहल छै... झट द' जनी_जाति के ल''एक कात भ' जैयौ...!'' सब साल परबी ल' जाइ बला हुनकर गाम चांवरडीहक चौकीदार अजोधी ; नमोनारायण सिंह के कहि रहल छलनि। कहै कहां छलनि महराज ! धिरा रहल छलनि, धमका रहल छलनि;बाप_दादाक बनायल घर के तुरंते खाली करैक फरमान सुना रहल छलनि।

चांवरडीह गाम धरि छैक बेस झमठगर । बारहो बरन बसै छल अछि अहि दू धारक बीच, लमछुरका जमीन पर बसल ई गाम मे। बीच गाम देने सडक; जे आब त' धार पर पुल भ' जेबाक कारणेँ सीधे जिला मुख्यालय तक जाइ छैक, मुदा तहिया कत' पाबी ? तहिया एक पेडिया कि सुर्खी बला

सडकक चलनसार छलै। साफ_साफ कही त' अंग्रेजक अमलदारी छलै । बाबू साहेबक गाम, ताहूमे नमोनारायणक स्वर्गीय पिता जी के तहसीलदार स' घुट्ठी सोहार, तैं अमला_फैला, कर_कचहरी सब ठां बाबू

जयनारायण सिंहक जयजयकार होति रहै ताहि दिन चांवरडीह मे। भरि चौमासा त' एत' आयब असंभवे छलै जे नीको समय साल मे तहिया, गाम आयब बड दुरूह रहै। तखन भरि बरसात नावक सवारी

रहै । गरीबो लोकके एकटा घसकट्टीयो,नाव जरूर होइ छल।

मुदा सब एक्के बेर दमदमा क' पहुंचि गेलै....दू जीप मे भरिक'सिपाही रहै। ओकर संग हवलदार आ एकटा डी.एस.पी.। सब हथियार बन्द ,जेना कोनो पैघ डकैत के पकडै लए आयल हुए । नमोनारायण अवाक् भेल आंगनक मोखा लग जे ठाढ भेला से किम्हर पडेता कि की करता से किछु फुरेबे नहि करनि। ताबे एकटा सिपाही पाछां स' हिनकर गंजी पकडि क' अपना दिस टनैत पुछलकनि__" तोरे नाम नमोनारायण छिय'...? चल' एस.पी. साहेब बजबै छथुन।"

नमोनारायण सर्द पडि गेला, नमोनारायणक मुंह कारी भ' एलनि, नमोनारायण मुंहमे धान दैथ त' लाबा होनि । जहिना गंजी धोतीमे छला तहिना सिपाहीक पाछां_पाछां विदा भेला बडगाछतर, जाहि ठाम काल्हिये

स' ज़िलाक एस.पी. कैम्प केने छै । वैह चतरलका बडक गाछ त' एखनहु छैहे गवाही सब कथुक.। अही

गाछ लग स' सवर्ण आ महादलित टोला अलग_अलग होइ छै । अही बडक गाछक चलते लोक चांवरडीहक

दलित बस्ती के 'बडतर टोल' कहैत रहै । नमोनारयणक स्वर्गीय पिता , जे अहि कुकांडक

नायक छला, से त' गेला सुरपुर धाम। बांचल छथिन हुनकर एकमात्र सुपुत्र, जे बलिदानी छागर जेकां बढि रहल छथिन ओन्न' जत' नहि जानि कैक युगक तामस, घृणा आ बदलाक भावना स' भरल एस.पी. प्रतीक्षा क' रहल छनि। पहिने त'चांवरडीहक आम ग्रामीणे जेकां हिनको पता नहि रहनि जे ई

सब कियैक भ' रहल छनि, पुलिस एकाएक हिनकर घर_आंगनक एना तलाशी कियैक ल' रहल अछि ?

मुदा एस.पी.क नाम आ ई जनिते जे एस.पी. वैह घनश्यामक जमाय भास्कर छियै; सब बात बिजली

जकां दिमागमे छिटकि उठलनि...आइ स' पच्चीस बरख पहिलुका घटना एना लाग'लगलनि जेना काल्हुक

घटना हो ! ओ सब बात हिनका आ हिनकर किछु बूढ दियादे टा के ने बूझल छनि ? गामक लोक ई सब कत' स' जनलकै ? खैर, आब त' जाइये रहला अछि । आखिर कोन कारण स' पुलिस घरक ओ दशा क' रहल छनि आ हिनकर चोर_डकैत जकां पेशी भ' रहल छनि,सेहो त' लोक के बुझै जोगर होइतै ? मुदा जेना भ' क' पुलिस घर ढुकलनि आ जेना भ' क' सर्च क' रहल छनि....राम_राम ! से कि ई कोनो अपराधी छला अछि ? होथि कि नहि होथि; पुलिस त' एखन तेहने व्यवहार क' रहल छनि; जेना चोर_डकैतक घरक तलाशी लेल जाइ छैक ,तहिना एक_एक टा वस्तु_जात खोलि_खालि क', एत्ते तक जे कोठीक चाउर तक निकालि क' तलाशी

ल' रहल रहनि। ओ बड गाछ दिस जाइयो रहल छथि आ सोचि रहल छथि जे घनश्यमवाक ओ जमाय

भास्कर एस.पी. बनत, आ बनबो करत त' अही ज़िलामे आओत, ई त' कहियो सपनोमे ने सोचने रहथिन। ...एह बातो आझुक छियै ? जोडबै त' कैक युग बीत जेतै !

कोसिक झमारल चांवरडीह गाम, बारहो मास तीसो दिन अबै_जाइमे बड तकलीफ होइ लोकके। भूलिये_भटकि क' कोनो सर_कुटुम्ब अबै। आजुक हाल देखि क' त' अहांके परतीते ने हैत जे वैह चांवरडीह छियै! रोग_बेरामी,पर_परसौत ज' गडबडायल त' जाबे अहां चर्राइन कि सहरसा पहुंचब गे, रोगी भगवान लग दाखिल भेल रहत। ताहि दिनुका बात भेलै जखन कोसी, जंगल आ अंग्रेज सन जालियाक शासन रहै...मुंह देखि क मुंगबा परसैबला ! तहिया पुलिस थाना, कोर्ट कचहरी जे रहथि से जयनारायण सिंह छला। हुनकर फैसला पहिल आ अंतिम होइ छलै तहिया अहि गाममे !

अही गाममे ओ वर बनि क' आयल रहै...यैह बडक गाछ तर ओ कुर्सी पर...आंखिमे काजर, गलामे बेली फूलक मौलाएल जाइत माला पहिरने बैसल रहै...बगलक खाट पर ओकर पिता आ पित्ती बैसल रहथिन ।

घनश्याम, ओकर होइबला ससूर पीयर धोती आ गोलगला पहिरने अपन फूल सनक बेटी फुलमतियाक

होइ बला वर के देख क' मोन हुलसि आयल छलनि चांवरडीह गामक अधवयसू आ अपन समाजक प्रतिष्ठित सदस्य; घनश्यामके । ओ हलसल_फुलसल अपन आंगन दिस जा रहल छला जे अपन मोनक

आह्लाद अपन लोक, जनी _जाति के कहथि आ वर_वरियाती लए पान_सुपारी_बीडी_सिगरेट आदि आनथि।

मोन गदगदायमान छलनिहें जे बडतर; जत' वर_बरियातीक डेरा माने जनवासा रहै, ओत्त' स' उठलै हल्ला...मच'लगलै गर्द आ गूंज' लगलै आर्तनाद निरपराधक ।

''मार सार के ! घेर क' मार सबके..क्यो बचौ नहि, देखिहें नमोनारायण ! एह, खटिया पर मटोमाट केहन

अछि ? सुनरा! ला फरसा आ छफाटि ले सबहक कुल्हा !!'' जयनारायण सिंह अपन चानीक मूठि लागल डंटा के चलाइयो रहल छला आ गरजियो रहल छला। ठीक कोनो राक्षस सन लागि रहल छला। जखन ओ

एकरा लग, माने भास्कर लग पहुंचल रहथि त' माला पहिरने, थरथर कंपैत भास्कर धधकैत जयनारायणक

आंखि दिस बड कातर भावे देखने रहनि आ क'ल जोडि क' ठाढ होइते रहै जे चानीक मूठ बला लाठीक समधानल वार पीठ पर भेलै आ तकर बाद की भेलै...कोना ओ पडा क' ककरो घरमे शरण लेलक...कोना

ओकर बियाह भेलै...टूटल हाथ_पैर लेने ओ आ ओकर बाप_पित्ती कोना अहल भोरिये कनिया संग ल' क' नाव पर पडयला... सब ओकरा सपना सन लगैत अएलै अछि एखन धरि ।

पढिते रहय त' एक बेर फेर एत' आयल त पता चलल रहै जे जे कनियां स' एकर बियाह भेलै, ओकरा पर नमोनारायणक नज़रि बहुत दिन स' गडल रहनि, तैं ओना तांडव मचौने छला ओकर बियाहक राति। कहां दन तीन दिन तक अहि टोलक लोक थर_थर कंपैत घरमे सुटकल रहल। ओ त' सुकुर भेलै जे वर_वरियाती संगे ओ राता_राती निकलि गेल...ने त' जान बांचब मोस्किल रहै ओइ राति । ओही दिन ओ संकल्प केने रह जे ओ पढत, खूब पढत आ पुलिसक नौकरी करत।...साल दू साल पर ओ चांवरडीह आबै...छुट्टा सांढ जकां सब कथू पर मुंह मारैत पहिने जयनारायण के देखैत रहै आ तकर बाद ओकर बेटा नमोनारायण के, जे एखन सुटुकपिल्ली सन सिपाहीक पाछां_पाछां बलिदानी छागर सन बढल जा रहला अछि, जिम्हर अहि पलक प्रतीक्षा कैक युग स' करैत अबैबला एस.पी. भास्कर ,सन्नद्ध बैसल
अछि।

मुदा ई घटना कोनो आजुक छियै ? पच्चीस वर्ष पहिने भेल अपराधक सजाय, ओकरा आइ देल जेतै ?ओकरो अइ घटनाक पश्चाताप भेल रहै। समय बदलल रहै, युग बदललै, नमोनारायणके विचारो बदलल रहनि। ई त' सपनोमे नै सोचने रहथिन जे घटना चक्र अहि तरहें घुमतै। बाबुओ के मुइना त' आब पंद्रह वर्ष भेल हेतनि।...पता नहि, पुलिस के आंगनमे घुसिते ओकर माय आ कनियां कत' गेलै ! की पता ? ओहू राति ककरो कहां पता चललै जे वर_वरियाती कि कनियां कत'गेलै ? कुम्हर पडेलै ? भरि गाम त' जयनारायण सिंहक सिंहगर्जना सुनैत रहलै__ "...मैट्रिक पास जमाय छै त'की ? आगि मूतत ? एत्ते टा साधंस जे हमरा सबहक सामने खाट_कुर्सी पर बैसत...एत्ते धू_धू_पूपू स' बेटीक बियाह करत ? से की हम सब मोसम्मात ? कि ई सब बाबू साहेब बनि गेल ..? खच्चर नहितन...।"

संग सिपाहीक जाइत ओ फिर क' अपन द्वार, आंगन आ बरंडा दिस तकलनि...घरक सब सामान ओइ पर रिद्द_छिद्द भेल छलै...बक्सा...अलमीरा...पलंग...ओकर कनियांबला ड्रेसिंग टेबुल...ओकर, मायक आ बाबूक पुरना पेटी, ओकर भी.आइ.पी. सब मुंह बेने...ओकरा देखल नहि गेलै ! आखिर ओकरा कोन अपराधक सजाय भेट रहल छै...जे आइ स' पच्चीस वर्ष पहिने भेल छलै ? ओ आगां_आगां जाइत सिपाहीक पीठ दिस ताक' लागल कि तखनहि मायक आवाज़ सुनाइ पडलै__"बौआ, हमहूं अबै छिय' !" नमोनारायण पाछां पलटि क' घरक सब वस्तु_जात के देखैक बदला उज्जर साडीमे डोलैत मायक काया देखै मोनमे होइ छनि जे 'ई कथी लए संग लागि गेली ?' फेर भेलनि जे कहीं_कदाच माय के देखि क' ज' एस.पीके दया आबि जाइ, भास्करक मोन पघिल जाइ...!

भरि गामक लोक अपन_अपन दरवाजा पर स' अपन_अपन डांड पर हाथ धेने

अइ घटना क्रमके, अपन_अपन ढंग स' देखि रहल छल,अर्थ लगा रहल छल। खाली बूढ_बुढानुस, दर_देयाद

के पछिला सब बात फट स' मोन पडि एलै...जयनारायण सिंहक चानीक मूठ बला लाठी मोन पडि एलै....

नमोनारायणक सांढ जेकां सब हक खेतमे मुंह मारैक लुतुक मोन पडलै...ओकर बापक कारस्तानी सब मोन पडलै। जखन बापे गुंडइ सिखाबे त' बेटा के की कहल जाय ? मुदा ई जरूर जे ई सब भेना बहुत दिन, पचीसो साल भेलै...आब गडल मुर्दा उखाडल जेतै ? नमोनारायण दुनू बाप_पुते तहिया जे केने रहै, तकर सजाय आब देतै भास्कर एस. पी. ?

नै देबाक चाही ? जहिना खूनक घोंट पुश्त_दरपुश्त पिबैत आयल, तहिना पिबैत रहय ? कि ओइ राति
ई दुनू बापं_पूत पशुतोक सब सीमाक उल्लंघन नहि केने रहथि जखन कि वर बनि क' ई गाम
आयल भास्कर
के दुनू बाप_पूत मिल क' बरियातीक संगे अइ लेल मारि पीट क'बेइज्जत_बेइज्जत केलखिन जे
ओ
लोकनि खाट पर आ वर कुर्सी पर कियैक बैसल अछि ? ई चांवरडीह छियै, बाबू साहेबक बस्ती...ताहि ठाम ई मजाल ? लगलै जे हिनके दुनू गोटेक ज़मिन्दारीमे बसल हो सब क्यो !

तैं गामक लोक डांड पर हाथ देने, आगां_आगां सिपाही,तकर पाछां ओ, आ सब स' पाछां हुनकर विधवा मायके दलित_टोला जाइत देखैत रहल। मुदा, ने क्यो सबदल आ ने क्यो संग देलकनि !

बुझले अछि जे नमोनारायण के देखितंहि एस.पी. के की भेल हेतै । पचीस वर्ष बीतल होइ कि
पचास...ई सब बिसरैबला बात छै ?तैं नमोनारायण के सरि भ' क' एस.पी.क हाथो जोडल नहि
भेल रहनि
जे अशोक_चक्रक मूठि लागल एस.पी.क हंटर सटाक पीठ पर लागल रहनि...जाबे ई किछु सोचथि
कि दोसरो
हंटर बजरलनि, जे हुनकर पीठ पर गुणाक चिह्न बना देने छलनि आ जे हुनका मार्मिक चोट पहुंचबै
लए
पर्याप्त छलनि। हुनकर चित्कार स' ओहि ठाम उपस्थित हुनकर सब गौंआक मोन दहलि गेलै त' कोन
आश्चर्य ! मुदा कठोर स' कठोर अपराधी के मनोबल तोडबाक, तोडि क' सत्य बोकरेबाके ट्रेनिंग
भेटल छैक

ओकरा; तैं ओकर कडकदार आवाज़ गूंजैत अछि__''हवलदार ! अइ डारि स'उल्टा लटका एकरा !''

भूमि पर भास्कर एस.पी.क पैर गरेछने मायक काया थरथरा उठैत छनि, संभवतः दांती लागि जाइ छनि। कत्तौ स' एकटा महिला सिपाही प्रगट होइत अछि आ मायक परिचर्चामे लागि जाइत अछि।मुदा नमोनारायणक डांडमे रस्सा बन्हा गेल अछि...बस आब हिनका लटकैले जाइबला अछि।हिनकर मुंहमे गर्दा उडि रहल छनि......चेहरा कारी भ' आयल छलनि...बुद्धि काज नहि क' रहल छलनि...सिट्टी_पिट्टी गुम। पीठ परहक चोटक संग अबैबला कष्टक कल्पने करैत चौन्ह अबैत रहनि।

“ कियै, हमरो अहिना चोट लागल रहै रे नमोनारायण...एखन त' किछु भेबे ने केलौए...तोहर लाठीक मारि स' त' हमर पित्ती दुइयो मासने बचला...हमर बापक माथक दर्द कहियोने छुटलनि...तोरा त'साले...!''

ताबे चांवरडीह गामक एक्का_दुक्का ग्रामीण बडतर एकट्ठा हुअ' लागल छलै...हिनकर मसियौत दौडि क' गेल आ निहोरा_मिनती क' क' घंश्याम के खिंचने आयल। ओहो सामनेक दृष्य देखि भीडमे अवाक् भेल ठाढ...।पहिने सत्तो निकलला तकर बाद धीरे_धीरे सब हाथ जोडने कातर भाव स' देखैत।

''मर, त' अहां के एत्त' के बजेलक ? गैरलाइसेंसी हथियार एकर घर स' बरामद भेलैए, एकरा जेल हेतै !''

एस.पी. तत्ते जोर स' बजला जाहि स' गामक लोक ठीक स' सुनि लियै। उत्तरमे क्यो किछु नहि बाजल। बजै जोग किछु शेषो नहि रहै। सब बस गुम भ' क' भास्कर एस.पी.के देखि रहल छल।

ओ पहिने अपन ससुर घनश्यामक नत दृष्टि आ बादमे अपन सासुरक सब गोटाक क्षमाक मूक गोहारि अनुभव केलक...आगांमे पडलि नमोनारायणक मायक उज्जर साडीमे लपेटल काया छलैक।ओ चारूकात नजरि घुमा क' देखलक...अइ ठाम अत्यंत कातर भाव स' ओकर प्रत्येक क्रिया_कलाप के देखैत आन क्यो नहि, ओकरसासुरक लोक अछि ,जकरा ओ बच्चे स' देखैत आबि रहल अछि । अनकट्ठल चुप्पी कि निगूढ शांति के भंग करैत भास्कर एस.पी.क स्वर बडतर फेर गूंजल__''हवलदार ! खोलि दहिंक...आब एकरा ककरो अपमान करबाक साधंस नहि हेतै ।“

***

(ई कथा ‘‘कृतं न् मन्ये’’ श्री आर.बी. राम सेवा निवृत्त आइ.जी. के सस्नेह एवं सादर ! लेखक।)


सुजीत कुमार झा

कथा

प्रियंका

गामसँ छुट्टी बितओलाक बाद काठमाण्डू जा रहल छलौ । बसमे चढ़िते एक युवतीके देखलियै तत्तक्षण मन रोमांचित भऽ उठल मुदा अपनाके सम्हारैत सिटपर बसि गेलौं ।

युवती हमरे पाछुमे बैसल छली । बेर–बेर हमर मोन ओहि युवती दिश आकृष्ट होइत छल ओकरा सँ बात करबाक हेतु । तथापि हम अपन मनके नियन्त्रित कऽ ढल्केवर, पथलैया, हेटौडा, नारायणगढ़, मुगलिंग पार करैत कतेको स्टेशन गनैत काठमाण्डू पहुँचलौं ।

काठमाडू बस पड़ावमे पहुँचैत–पहुँचैत प्रायः सभ यात्री उतरि गेल छल । मात्र ओ युवती आ हम बाँचि गेल छलौ ।

हम अपन बैंग सम्हारि उतरि गेलौं । हमरे पाछा–पाछा ओ युवती सेहो उतरि गेली । हमर हृदय जोर जोर सँ धड़कऽ लागल कि आब ओ अपन घर चलि जएती । हम हुनकासँ गप्प करबाक लेल ब्याकुल छलौं ।

बस पड़ावमे उतैरते पानि टिप टिपाए लागल । हम बैंगमे सँ छत्ता निकालि लेलौ । समिपमे ओ युवती चुपचाप ठाढ छलीह । कखनो ओ बाट दिस तकैत तऽ कखनो घड़ी दिस । किछु देरकबाद हम हिम्मति कऽ हुनका सँ पुछलियैनि अहाँके कतऽ जायके अछि ?

बिनू बजने ओ हमरा दिस तकली आ फेर अनुहार झूका लेली ।

हम हिचकिचाइत हुनका सँ पुनः पुछलियै, अहाँ कतऽ जेबै ?

ओ हमरा दिस देख कऽ कहलि 'कतौ नहि ।'

हमरा चटकन जेकाँ लागल आ हम मुक रहि गेलौं ।

किछु देरक बाद पानि सेहो जोड.सँ बरिसय लागल छलै हम छाता निकालि डेरा दिस बिदा भऽ गेलौं ।

तखने पाछु सँ आवाज आएल 'सुनु तँ ।'

हम पलटि कऽ देखलौ ओ स्वर ओहि युवतीके छल । हम हिम्मति कऽ हुनका सँ कहलियैन 'कहू ?'

' अहाँ कतऽ जेबै ? ' किछु सकुचाइत लड खडाएल स्वरमे पुछली ।

कुपण्डोल, ओना अहाँके कतऽ जएबाक अछि ? हम पुछलियैक ।

'जी हमरा...कतौ नहि ।'

हम तमसाइते कहिलयौ ' बहुत भारी बात अछि । एखने अहाँ बजओने छलौ आ पुछि रहल छी तऽ बताबऽ नहि चाहैत छी । ठिक छै 'ई कहि हम पुनः जायके लेल विदा भेलौं । किछु डेग चलल छलौ कि हमरा कानधरि ओ युवतीके सिसकऽ के अबाज आएल ।

हम पलटि कऽ देखलौ । ओ ओढ़नीमे मुह नुकाँ कानऽ लगली ।

हम फेर रुकि गेलौ । आब हमरामे गप्प करबाक हिम्मति त आबिये गेल छल । अतः हम समिपमे जा कऽ पुछलियैए 'अहाँ कानि किए रहल छी ? ''

हमरा पुछलाकबाद ओ आओर जोरसँ कानऽ लगली । हम घवरा गेलौ कि यदि कियो ई सभ देखत तऽ पिटाइ अवश्य हएत । अतः हुनकासँ कहिलयनि 'कृपया अहाँ कानव बन्द करु आ बताउ जे अहाँके कतऽ जएबाक अछि । हम एक नोकरीहारा सभ्य व्यक्ति छी हमरा पर विश्वास करु ।

एहिपर ओ वजली, हमरा कोनो घर नहि अछि, हमरा लेल ई शहर अनजान अछि तें.. ।

हम आश्चर्यमे पड़ि गेलौ एक अति सुन्दर, जुआन असगरे युवती आखिर एहि पहाड़क शहर काठमाण्डूमे की कऽ रहल छैक ? अनेक प्रश्न मानसपटलपर घुमल । हम कहलियै ' ओना अहाँ जाए कतऽ चाहैत छी ? '

एतऽ समिप कोनो होटलमे जा कऽ असगरे कोना विताओलजाऽ सकैत छैक ?

आई अहाँके घरमे रहि सकैत छी... ? यदि अहाँ कही त ? ई बात सहजहि कहि सिसकऽ लगली ।

हनुकर गप्प सुनिकऽ मनमे गुदगुदी सेहो भेल आ डर सेहो लागि रहल छल हम हुनकर बैंग उठा विदा भेलौं । टैक्सीमे बैसि कुपण्डोल एलौं । पुरा बाट हम चुप रहलौं ।

घरमे आएलाक बाद ओ चारु दिस देखऽ लगली हम हुनका बैसऽ कहि स्वयं फ्रेस होबऽ बाथरुममे चलि गेलौं ।

किछु देरक बाद घूमिकऽ एलौं त ओ अनचिन्हार युवती पुरा घरके ठिकठाक कऽ देने छल हम मुस्कियाकऽ हुनका दिस तकलौ एहि पर ओहो मुस्किया देली ।

हम पुछलियै– किछ खाएब ?

ओ चुप्प रहली तऽ हम कहलियनि आब चुप्प रहलासँ काम नहि चलत । एकरबाद हम स्टोभपर चाह चढ़ा देलियै आ गाम सँ माय बटखर्चाके लेल बगिया देने छल तेकरा दूटा प्लेटमे धऽ हुनको देलियै आ हमहु लेलौ ।

ओ चुप–चाप खाय लगली । एकरा बाद हमरा गप्प करबाक उत्सुकता भेल, त पुछलियै आब अहाँ सत्य गप कहुँ अहाँ के छी ?

‘ हमर नाम प्रियंका अछि आ हम धनुषा जिल्लाके रहऽबाली छी । हमरा घरमे माय बाबुजीक अतिरिक्त दूटा छोट भाइ आ एक बहिन अछि हम जीवनमे किछु करऽ चाहैत छी, किछ बनऽ चाहैत छी परंच हमर गामे ई सम्भव नहि अछि । बाबुजी हमर वियाह गामक लगमे परवाहा गाम छैक ओत्तै करा रहल छलाह । तें हम भागि एलौं ।

हम एस.एल.सी. पास कएने केने छी । हम नाम कायम चाहैत छी, जीवनमे संघर्ष करऽ चाहैत छी । तेँ हेतु एहि राजधानीमे एलौं अछि ... आब त किछु कएलाबकाद घूरिकऽ जाएब ।

बसमे एकदम शान्त सौम्य बैसलि ओ युवतीक वाक पटुताके देख हम आश्यर्चमे छलौ ।

हम कहलियनि– ई अहाँ ठिक नहि कएलौ घरक लोक कतेक चिन्तित हएत ।

होमऽ दियै । यदि विवाह भऽ जाइत त हम कतेक चिन्तित रहितौं ? ’

वियाहसँ केहन चिन्ता ? अहाँके अपन घर परिवार रहैत ....”

जी नहि, हम असगरे स्वतन्त्र रुपसँ किछु करऽ चाहैत छी ।

की ?

अहाँ चिन्तित नहि होउ । हम भोरे चलि जाएब ।

कतऽ ?

'कतौ... नोकरी ताकऽ ।'

नइ अहाँ असगरे नहि जाएब हम अहाँके सँगे चलब । आ केटलीमे सँ चाह छानि दू गोटे लऽ लेलौ आ भात चढ़ाऽ देलियैक । चाह पिलाक बाद राति भऽ गेल छलै तें बजारसँ तरकारी लाबऽ लेल हम विदा भेलौं ।

भोजनक बाद हम हुनका घरमे छोड़ि अपने वरण्डा पर ओछायन कऽ सूति रहलौं ।

ओछायन पर सुतिकऽ सोंचऽ लगलौं 'मन पसंद युवती सेहो विवाह करऽ लेल नहि भेट रहल छल से भगवान प्रियंकाके हमरा लेल पठा देलैथ । सुडौल, पढ़ललिखल,सुन्दर कनियाँ हो तऽ आओर की चाही हम मनेमन योजनामे उलझि गेलौ आ लागल जेना हम हुनकासँ प्रेम करऽ लागल होइ ।

परात भेने प्रियँका तैयार भऽ कऽ जाए लगली तऽ हम कहलियनि, ' चलु हमः अपन एक परिचितसँ भेंट करबै छी सम्भवतः नोकरी भेटि जाएत ।

हमर योजना छल कि हम हुनका एतै रोकि ली आ हुनका वियाह करबाक लेल मना ली । हम प्रियंकाके अपन परिचित मानबहादुरसँ भेट करओलियैन । ओ हिनका देख बड़ खुशी भेल । आ प्रियंका सेहो मानबहादुरक बैभवके देखि अकचका लगली । हमर निवेदनपर मानबहादुर अपन कार्यालयमे नोकरी दऽ देलकैन । आब सभ दिन भोरे हमरे सँग निकलैत छली आ राति हमरे घरमे वितबैत छली । हमरा दुनू गोटेमे एखनो तक दूरी यथावत छल ।

किछु दिन वितलाक बाद हम हुनकासँ हिलमील गेलौ तऽ हिम्मत कऽ हुनका सम्मुख वियाहक प्रस्ताव रखलियै । ई सुनि ओ अकचका गेली आ किछ नहि बजली ।

सांझखन हम मानवहादुरके कार्यालयमे गेलौं त ओ बजली कुपण्डोल एतसँ दूर पड़ैत छैक तें हमरा मानबहादुरजी एतै एकटा घर उपलब्ध करा देलनि अछि ।

एदि एकरा अन्यथा नहि मानी तऽ आइसँ हम एतै रहब ।

हम हृदयक शीशा प्रियंकाक कठोर शब्द रुपी पाथर सँ चकनाचुर भऽ गेल । हम बुझि गेल छलौं की मान बहादुरकँ बैभव आ प्रियंकाक सुन्दरता बीच एक सम्झौता भऽ गेल छैक । हम घर एलौ बहुत दुःखित छलौ ओहि राति खेवो नहि कएलौ आ भरि राति सोचैत रहलौं जे आब कहियो नहि जाएब हुनका लग करीब एक हप्ता तक हम गेबो नहि कएलौं ।

आठम दिन मोन नहि मानलक तऽ हम प्रियंकासँ भेटवाक लेल हुनकर कार्यलय गेलौं । प्रियंका तऽ पुरा बदलि गेल छली ।

जीन्स आ भेष्टमे ओ एकदम आधुनिक लागि रहल छलि । हुनक अनुहार ताजगी आ आँखिमे सफलताक चमक स्पष्ट देखाइत दैत छल ।

ओ कहली काल्हि ओ एकटा फिल्म निर्मातासँ भेट करऽ जएती ।

किए ? हम अकचका कऽ पुछलियनि ।

ओ मानबहादुरजीक परिचित फिल्म निर्माता छथि । ओ हमरा भेटबाक लेल काल्हि समय देने छथि । आब देखब हम किछुए दिनमे सुपरस्टार अभिनेत्री बनि जाएब ।

हम हुनका सम्झाएबाक प्रयन्त करैत कहलियनि नहि जाउ बादमे बहुत पछताएब परन्च नहि मानलैथ । हुनका पर त सिनेमाक भूत सवार छलनि ।

हम ओतसँ चलि एलौं । समय वितैत गेलैक हमहुँ अपन काममे व्यस्त भऽ गेलौं ।

अचानक करिब २, ३ वर्षक बाद प्रियंका हमरा राजविराजमे भेटली । हम हुनकर मेकअप आ ड्रेस देखि दंग रहि गेलौं । हम अधिकारसँ पुछलियनि, की छै हालचाल ?की अहाँ जे चाहैत छलौं से भेट गेल .... ?

अहि पर ओ नितराइत बजली ' भेटीयो गेल आ सम्भवतः नहियो...'

'से कोना ? हम : पुछलियैन ।

हमरा लग ओ सब त अछि, जे नहि होएबाक चाही । तखन ओ नहि अछि जे होएबाक चाही ।

' हम बुझलौं नहि ? '– हम पुछलियै ।

'अहाँक बात शुरुयेमे मानि लेने रहितौ त आइ... आत्म ग्लानी भरल स्वरमे कहैत रहैथ की तखने समिप एक मारुती आबि रुकल । ओइमेसँ एक युवक उतरि प्रियंकाके समिप आबिकऽ बाजल– हाय लभली बहुत प्रतीक्षा करैलौ आइ काल्हि त अहाँ बड़ अनमोल चिज भऽ गेल छी ... तें हातक हात विका रहल छी ।

प्रियंका एक नजरि हमरा दिश देखैत ओकरासँग मारुतीमे बैसि गेली आ हम देखैत रहि गलौ.. ओहि चिजके... ओहि लभलीके.... ।



कुमार मनोज कश्यप

जन्म मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाम मे। बाल्य काले सँ लेखन मे आभरुचि। कैक गोट रचना आकाशवानी सँ प्रसारित आ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रीय सचिवालय मे अनुभाग आधकारी पद पर पदस्थापित।

दिन धराबय तीन नाम

श्यामाबाबूयानि श्यामानंद दास । भरि ऑफिस मे श्यामाबाबूक नामे विख्यात। गूढ-सँ-गूढ समस्याक चुटकी मे समाधन बतबैत छलाह श्यामाबाबू। तैं तऽ उच्चाधिकारी सभ सेहो हुनकर सलाह लेब नहि बिसरैत छलाह। श्यामाबाबू हमरा अपन छोट भाय जकाँ मानैत छलाह। जखन हम नया ज्वाईन केने रहि तऽ अंजान शहर मे अबुह बुझाईत रह ;मुदा श्यामाबाबू सँ भेंट होईते लागल जेना अपन लोकक बीच मे छीयुग-युग सँ परिचित। डेरा तकबा सँ लऽ कऽ हिंग-हरदि सभ टा जोगार केने रहथि ओ। एतबे नहि, रोज पुछथि जे कोनो तकलीफ तऽ नहि बुझाईतअछि ?

सेवा-निवृत भऽ श्याम बाबू अपन बनाओल मकान मे रहऽ भागलपुर चलि गेलाह।एहि बेर भागलपुर जेबाक हमरा जखने मौका भेटल हम निश्चय केलहुँ सर्वप्रथम श्यामबाबू सँ भेंट कैल जाय़ कतेक दिन भऽ गेल भेंटो भेलासेवानिवृति के बाद तऽ नहिये। भागलपुर स्टेशन पर उतरि रिक्शा भंजियबैत रहि किं ता हुनकर एकमात्र पुत्र पर नजरि पड़ल। हम चिकरि कऽ ओकरा बजौलियैक। लग मे एला पर सभ सँ पहिने श्यामबाबूक हाल-चाल बुझबाक प्रयास केलहुँ। ओ गम्भीर होईत उत्तर देलक --''ओना तऽ निके छथि, मुदा दिमाग कने सनकिं सन गेल छैन।'' हमरा अचम्भित होईत देखि ओ बाजल---''घर पर चलु; छोट सन बजारक काज कऽ कऽ हम यैह एलहुँ।'' कहैत ओ स्वूप्टर स्टार्ट कऽ कऽ आगू बढ़ि गेल। ई दुखद समाचार सुनि मोन भारी भऽ गेल ।

घर पर पहुँच कऽ श्यामबाबूक नोकर गेटे पर ठाढ़ भेट गेल। ई बड़ स्वामीभत्तɅ आ नेने सँ हुनका ओहिठाम काज करैत आबि रहल अछि। हम ओकरा सँ पुछलियै---''रामू! मालिक कोना

छथुन?'' ओ चोट्टहिं अत्यंत गम्भीर होईत बाजल--''मालीक आब कहाँ रहलाह ।'' पेÞर हमरा बैठकी मे एबाक ईशारा कऽ स्वयम भीतर चलि गेल। हमर माथ घुमऽ लागल। लागल नहि जानि कतऽ आबि गेलहुँ अछि । मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना। ताबत श्यामबाबूक कनियाँ घर सँ बहरेलीह। हम हुनका कऽल जोरि आभवादन कऽ हुनके सँ स्पष्टीकरण चाहलहुँ। मुदा, हाय रे हमर दुर्भाग्य ! ओ आओर जरल पर नून छिटलन्हि--''ओना तऽ स्वस्थ छथि,मुदा अकान भऽ गेलाह अछि । '' हमर माथ आर बेसी चकराय लागल । लागल जेना हम गलत जगह आबि गेलहुँ अछि । या तऽ घरक सभ लोक हमरा सँ मसखरी कऽ रहल अछि या सभ सनकिं गेल अछि । तखने श्यामबाबू घर सँ बहरेलाह-- स्वस्थ, तंदुरुस्त, ओहने मुस्कीं, वैह स्वभाव़। हमरा देखिते भरि पाँज कऽ गसिया लेलनि। हमरो आँखि सँ नोर बहऽ लागल। पेÞर अपना के संयत करैत सभ टा बात बता देलियनि आ हुनके सँ एकर कारण जानऽ चाहलहुँ। हुनकर ठोर पर चिर-परिचित मुस्कीं पसरि गेलनि। पेÞर छलिया सुपारीक सरौता सँ महीन कतरा कटैत बजला--''ओ सभ केयो सत्ये बजैत अछि ।''

''सत्य कोना श्यामबाबू?!!'' हम बिच्चहि मे टोकलियनि।

एक चुटकी कतरा हमरा आगू बढ़ा ओ हमरा संयत करबाक प्रयास केलनि। पेÞर हमर प्रश्नवाची नजरि के अकानैत बजलाह--'' ओ खिस्सा तऽ सुननहिं हेबैक जे आन्हर सभ एक टा हाथी के देखि कऽ ओकर स्वरुपक कोना भिन्न-भिन्न व्याख्या केने छलैक। सैह अहु ठाम छैक । ''पेÞर खखसि कऽ भहरल स्वर मे आगू बजलाह---''हमर पुत्र आहाँ के कहलनि जे हम सनकिं गेल छी ; से अपना जगह पर ओहो सत्ये छथि। हम हुनकर नीक-अधलाह पर टोका-चाली करैत छियैन ; से हुनका पसिन्न नहिं। आब आहं कहु जे अधलाह पर हम जिबैत जी चुप्पो कोना रहि जाऊ ?बजा तऽ जाईते अछि । तैं ओ हमरा सनकाह बुझैत छथि। ''पुनः आगू बजलह--'' जहाँ तक रामूक प्रश्न छैक तऽ नोकरी करैत काल मे हमहीं ओकर वेतन आ सभ आवश्यकता के पुरा करैत छलियैक; से आब रिटायर भेला पर नहि भऽ पबैत छै । तखन आहं कहु जे हम ओकरा लेल मरले सन छियैक ने?'' हम अवाक भेल एक टक सँ श्यामबाबू के देखैत आ हुनकर व्याख्या सुनैत रहलहुँ। ओ आगू बाजब शुरू केलनि---''हमर पत्नि तऽ पोता-पोतीक संग नव आश्रय ताकिं लेलनि आ बेटा-पुतोहु के हँ-मे-हँ मिलबैत रहैत छथि। आब हमर संस्कांर कहू वा आदति जे हम ई सभ नहि कऽ पबैत छि । तैं ओ हमरा अकान बुझैत छथि । '' कहि कऽ श्यामबाबू ख़िडकी सँ बाहर शुन्याकाश दिस देखऽ लगलाह। पेÞर एक टा दीर्घ-निश्वास छोड़ैत बजलाह--''दिन धराबय, तीन नाम।'' सुन्न पड़ि गेल चेहरा पर एकटा मुस्कीं अनबाक प्रयास करऽ लगलाह श्यामबाबूआगि के छाऊर सँ झंपबाक एकटा थाकल प्रयासकिंवा जीवनक दंश सहबाक जीजिविषा।

।


हेमचन्द्र झा

कथा

एना किएक?

मन्नू भाय रहथि सामाजिक लोक । सभक हाड़ी-बिमारी आ बर-बेगरता मे ठाढ़ रहब रहनि हुनक कर्त्तव्य । गाम मे किनको ओहिठाम कोनो काज होई मन्नू भाय हाजिर । सभक काज मे आदि सँ अंत धरि सहयोग देबय वला मन्नू भाय बेस लोकप्रिय । की बच्चा कीए बूढ़ सभ हुनका मन्नुये भाय कहनि, चाहे ओ रिश्ता मे ककरो किछु लागथि ।

मन्नू भाय गरीब लोक । माथ पर बाप-पुरखाक छोड़ल मात्र १० कट्ठा जमीन,किछु घरारी आ घरारिये लग कने-मने बाड़ी-झाड़ी । एकरा अतिरिक्त गुजर करक लेल दू-तीन टा महीस पोसने रहथि । ओही महीस सभक दू-दही-घी, चिपड़ी-गोइठा बेचि कऽ गुजर करथि । माथ पर रहनि ५ गोटाक परिवार । पत्नी, तीन बेटी आ एक बेटा । आश्रम एखन रहनि लेधुरिया आ तें हरदम तंगो-तरीज रहथि । तथापि अपन सामाजिक दायित्वक प्रति सचेष्ट रहथि आ अपन काज खगाईयो के दोसरक काज मे मददि करबाक लेल हरदम तत्पर रहथि ।

एकबेर संजोग सँ ओ कोनो कुटमारे गेलाह । किछु विशेष काजक कारणें ओतय किछु दिन रुकय पड़लनि । ताहि बीच मुकुन्द बाबू ओहिठाम उपनयन बजरि गेल । मुकुन्द बाबू गामक धनिक लोक । हुनक एकमात्र बेटाक उपनयन मे गौंआँ कें दू-तीन दिन भोज खेबाक अवसर छलै । परन्तु बिनु मन्नू भायक भोज-भात हो कोना? समय बीतैत गेल आ कुमरमक दिन सेहो आबि गेल ।

भोरे-भोर मुकुन्द बाबू ओहिठाम लोकक जुटान भेल । समस्या छल जे पूरा गौंआँक लेल भानस-भात बिनु मन्नू भायक सहयोग सँ होयत कोना । लोक सभ एहि समस्या पर विचार कैये रहल छल की ता मन्नू भाय हाजिर भऽ गेलाह । लोकक जान मे जान आयल । मन्नू भाय कहलाह जे हमरा एकाएक आईये

याद आयल जे मुकुन्द बाबू बेटाक आई कुमरम छनि आ हम भोरे-भोर ओतय सँ विदा भेलहुँ जे मुकुन्द बाबूक काज बिथूति ने होइन ।

मन्नू भायक जेठ संतान बेटी १२ वर्षक । दोसर रहनि बेटा ९ वर्षक आ दुनू छोट बेटी क्रमश: ७ आ ४ वर्षक । कनेदान सामने रहनि तथापि अपन एकमात्र बेटाक उपनयन समय पर कराबय चाहथि । अपन पेट काटि-काटि उपनयनक लेल एक-एकटा पाई जमा केने रहथि । बड्ड सेहेन्ता रहनि जे एकबेर अपना ओहिठम गौंआँ के खुआबी आ तकरे तैयारी मे भीतरे-भीतर लागल रहथि ओ ।

गाम मे चौधरी पट्टी प्रमुख । चौधरी पट्टीक तीन मुख्य शखा । दू शाखा मे मोछक लड़ाई रहैक आ ताही चक्कर मे गाम मे दुगोला रहैक । चौधरीक तेसर शाखा अपन भगिनमान सहित विभक्त रहथि । प्राय: सभ परिवार मे दुगोला रहैक । ताहू मे जखने कतौ काज बजरै कि कनफुसकी शुरू भऽ जाईक । मन्नू भाय सेहो एकटा गोल धऽ कऽ रहथि आ अपन बेटाक उपनयन मे ओहि पूरा गोल कें नोत दऽ कऽ खुएबाक पक्ष मे रहथि ।

शनै: शनै: उदोगक दिन आबि गेल । पूरा गोल मे हकार पड़ल । किओ बाँस,तऽ कियो खड़ लऽ कऽ हुनक मददि केलनि । समय पर बँसकट्टी भेलैक । ओही दिन मरबठट्टीक दिन सेहो रहैक । लोक सभ अबैत रहलाह आ भेद पुरबाक ले दू-चारिटा बन्हन दऽ घसकैत रहलाह । सभ आबथि दू-चारिटा बन्हन देथि, शर्बत पीबथि, पान खाथि आ चुपचाप घसकि जाथि । अंतत: मड़बा ठाढ़ करबाक बेर रहि गेलाह मन्नू भाय, हुनक पितियौत कारी भाय आ एक दू गोटा आर । मन्नू भाय सन सामाजिक लोक कें ई आशा नहि रहनि जे समाज हमरा काज मे एना करत । पूरा जिनगी लोकक उपकार केने रहथि आ तें भरोस रहनि जे पूरा समाज हमरा काज मे तत्पर रहत ।

उदोग आ मड़बठट्टी होइतहि उपनयनक उपक्रम शुरू भऽ गेल । रोज मड़बा नीपब, बहारब, मड़बा पर गीतक अनिवार्यताक संग हुनक पत्नी सेहो अति व्यस्त रहय लगलीह । देखैत-देखैत माटि- मंगलक दिन आबि गेल । एहि मे पुरुष-पातक विशेष काज नै रहैक तें माटि-मंगल नीके नां बीति गेलैक । प्राते छगरा धूर रहैक आ तकरे प्रात रहैक कुमरम । उपनयनक महत्वपूर्ण दिन । भगवती पूजा आ बलि प्रदानक दिन आ संगहि भोज भातक दिन । समाजक असली काज आईये रहैक । चँकि मन्नू भाय पहिनहि सँ बेटाक उपनयनक तैयारी कयने रहथि तें अपन पूरा गोल मे पुरुषक दफा नोत देलाह । आई पूरा विश्वास रहनि जे पूरा समाज हमर मददि करत । भला हो कोना ने? सभक बेर मे ठाढ़ होईत रहल छलाह सदिखन ओ ।

लेकिन ई की । समाजक लोक हुलकियो देबय नहि एलैन । जेना-तेना अपन पितियौत कारी भायक संग अहरी खुनलाह, टोकना-लोहियाक इंतजाम केलाह आ अहरी पजारि देलाह । परन्तु ५-६ मन चाऊर, ओकर दालि, तरकारी, बड़ी, सतमनि-अदौड़ी,पापड़ आदिक इंतजाम केनाई छोट काज नहि रहैक । अपस्यांत भऽ गेलाह दुनू भाय । बीच मे एक-आध गोटा जिज्ञासाक लेल अयबो केलाह, परन्तु कहि के जे गेलाह जे फेर अबैत छी से नहिये घुरलाह । एवं क्रमेण दिनक तीन-चारि बाजि गेल । किछु सामग्री तैयारो भऽ गेल ।

ता गोलक प्रमुख बालेश्वर चौधरी अपन सात-आठ चमचाक संग पहुँचलाह । हुनका पहुँचतहि सभ चमचा हड़बिड़ो मचबय लागल । मन्नू भाय के आदेश भेलनि जे चौधरी जीक स्वागत करहुन । तुरंत मन्नू भाय ओमहर गेलाह । शर्बत बनल, चाह बनल आ फेर पान भेलैक । चौधरी सहित चमचा सभ खेलक-पीलक आ ओतय सँ चलि देलक । पुन: रहि गेलाह मन्नू अपने दुनू भाय ।

ब्राह्मण कें नोति देने रहथिन आ तें मानू गरा मे उतरी बन्हा गेल रहनि । येन-केन प्रकारेण अपना कें एहि सँ उऋृण केनाई छ्लैन । ताही मे लागल रहथि दुनू भाय । काज तँ प्राय: सोझरायल छलनि परन्तु चौधरी आ हुनक चमचा आबि आर गड़बड़ कऽ देलकनि । जा मन्नू अपने चमचा सभक स्वागत मे लगलथि कारी भाय असगरे पड़ि गेलाह । आंच तेज करथि तऽ अदहन उधियाईन आ अधहनक शमण करथि तँ आँच बन्न भऽ जाईन । येन-केन प्रकारेण ९ बजे राति धरि भोजक सामग्री तैयार भेल आ बिझहो भेल ।

भोजनक समय लेकिन सभ जुटलाह । राति भऽ जेबाक कारणें सभ पहिले तोर मे भोजन करय चाहथि । तथापि टोलक किछु नवतुरिया बारिक बनबा लेल तैयार भेल आ पहिल तोरक भोज समाप्त भेल । खूब यश भेलनि मन्नू भाय के । दोसर तोर मे नवतुरिया सभ भोजन केलक आ अपन घर चलि गेल । ई तँ धन्य कही नवतुरिया सभ कें जे बँटबाक जिम्मा उठेलक नहि तँ कदाचित ओहो काज अपने दुनू भाय के करय पड़तैन । समाज अपन चालि नीक जकाँ देखा देलक ।

फेर रहि गेलाह दुनू भाय । पाहुन परक के भोजन करबैत, कुमरम रातिक आन विध-व्यवहार करैत, आँठि-कचार करैत पूरा राति बीति गेल । एको मिनटक लेल दुनू भाय आराम नहि कऽ सकलह । खैर प्रात भेने उपनयन रहैक । आचार्य, पुरहित,नौआ, ब्रह्मा आदिक सहयोग सँ मन्नू भायक बेटा के जनऊ पड़ि गेलैन । उपनयनक राति मे अठबभना कऽ कऽ मुक्त भेलाह मन्नू भाय ।

आब मन्नू भाय सामाजिक लोक नहि रहलाह । अपना काज सँ मतलब राखथि आ अपने मे मस्त रहथि । समाज मे ककरो ओहिठाम बजाओल गेला पर टारि जाथि मन्नू भाय । आखिर मन्नू भाय एना किएक भऽ गेलाह? गंभीर प्रश्न अछि समाजक समक्ष ।



नवेन्दु कुमार झा

१.प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर

प्रदेशमे एक बेर फेर जातीय हिंसाक विभत्स रूप सोझा आयल। एक अक्टूबर दू हजार नौ के खगडिया जिलाक अमौसी गाम मे जमीनक विवाद मे सोलह गोटेक भेल सामुहिक हत्याक बाद पुरा क्षेत्र मे डर पसरि गेल। प्रदेश मे जातीय हिंसाक कोनो ई पहिल घटना नहि छल आ ई अंतिम घटना होयत सेहो कहब उचित नहि होयत। आजादीक बाद सँ एखन धरि प्रदेश मे छोट पैघ गोटेक एक सौ सँ बेसी घटना भऽ चूकल अछि जकर शिकार छोट किसान आ मजूर बनल छथि। बाईस नवम्बर उन्नैस सौ एकहत्तर मे पूर्णियाँ जिलाक रूपसपुर चंदवा सँ प्रारंभ भेल हत्याक ई सिलसिला गोटेक चारि दशक सँ चलि रहल अछि आ शासक वर्ग लहास क दाम लगा (मोआबजाक घोषणा) अपन काज समाप्त बुझैत अछि। जतय हिंसाक घटना होईत अछि ओतय सुरक्षाक नाम पर सरकार पैघ-पैघ घोषणा होईत अछि। एहि घोषणा पर किछु दिन अमल सेहो होईत अछि मुदा समय बितलाक संगहि ओ कमजोर पडि जाइत अछि आ समयक प्रतिक्षा मे लागल समाज विरोधी तत्व जमीनक बहाने जातीय हत्याक एकटा आर घटना के मूर्त रूप दऽ प्रशासनिक व्यवस्थाक पोल खोलि दैत छथि।

मध्य बिहारक एकटा पैघ क्षेत्रमे किछु दिन पहिने धरि जमीनक विवाद क लऽ कऽ संघर्ष होयबाक संवाद भेटैत रहल अछि। दरअसल एहि क्षेत्रमे जमीन किछु लोकक मध्य अछि। ई पैघ जोतदार अपन बाहुबलक सहारा लऽ मजूर सँ काज करबैत छलाह। समय बितलाक संगहि मजूर वर्ग मे आयल चेतनाक बाद जमीन मालिक आ मजूर क मध्य संघर्ष प्रारंभ भेल। एकर परिणाम स्वरूप जमीन मालिक आ मजूर क मध्य एहि संघर्ष के लड़बाक लेल अघोषित सेना अस्तित्व मे आयल। रणवीर सेना, लोरिक सेना, ब्रह्मर्षि सेना, सनलाइट सेना, भूमि संघर्ष समिति, एम सी सी आदि कतेको मजूर आ जमीन मालिकक समर्थन बाला सेना आपस मे टकरायल। सत्त तऽ ई अछि जे एहि टकराहटक शिकार बनल छोट किसान आ रोज-रोज खेत मे काज कऽ अपन पेट पालऽ बाला मजूर आ कतेको जान गेल, कतेको स्त्रीक सेनूर धोआ गेल, कतेको नेना अनाथ भऽ गेल। तथापि समाज विरोधी असामाजिक तत्व क हृदय पाथरि नहि पिघलल आ ओ खून सऽ लाल होईत घरती आ जमीन पर पड़ल लहास के देखि अपन बहादूरी बुझैत छथि।

हिंसा कोनो सभ्य समाजक लेल नीक चीज नहि अछि आ एहि सँ कोनो समस्याक समाधान सेहो नहि भऽ सकैत अछि। ई हिंसा जमीन मालिक दिस सँ हो कि मजूर दिस सँ एकर जतेक निन्दा कयल जा कम होयत। दुर्भाग्य तऽ ई अछि जे सामूहिक हत्या सन घटना क बाद एकरा राजनीतिक चश्मा सँ देखल जाईत अछि। हत्याक बाद जमीन पर बहल खून चाहे ओ जमीन क मालिक क हो कि मजूर के एकर रंग लाल रहैत अछि मुदा राजनीतिक चश्मा मे एकर रंग अलग-अलग रहैत अछि। जाहि जातिक हत्या होईत अछि ओहि जातिक नेता अथवा जे राजनीतिक दल एकरा अपन समर्थक मानैत अछि ओहि घटना स्थल पर जा ऐना नोड़ चुअबैत छथि जेना कि घटना स्थल पयर्टन स्थल हो। शासक वर्ग हो कि विपक्ष एहि तरहक घटना के अपन चश्मा सँ एक रंग देखि इमानदारी सँ प्रयास करथि तऽ संभव अछि जे प्रदेश मे चलि रहल जातीय हिंसाक दौर समाप्त भऽ सकैत अछि। सरकार चाहे जाहि दल अथवा जातिक हो हत्या करय

बालाके हत्यारा बुझि ओकरा सजा देयबाक प्रयास करय अन्यथा एहि तरह घटना पर रोक लगायब सपना मात्र होयत।

प्रमुख नरसंहार पर एक नजरि ____

वर्ष	स्थान	मृतकक संख्या
1971-	रूपसपुर चंदवा (पूर्णियाँ)	-14
1975-	डेरभरथा (नालन्दा)	-24
1976-	अकोढ़ी	-03
1977-	बेलछी (नालन्दा)	-14
1980-	पिपरा कल्याण चक (पटना)	-14
1981-	पारस बिगहा	-11
1984-	दनबार बिहटा (भोजपुर)	-22
1986-	गैनी (औंरगाबाद)	-24
1986-	अरवल	-24
1986-	डरमैन (औंरगाबाद)	-11
1986-	कंसारा (जहानाबाद)	-11
1986-	दरमिया (औंरगाबाद)	-11
1987-	दलेल चक बघौरा (औंरगाबाद)	-56
1988-	नोनही नगवां (जहानाबाद)	-18
1989-	माली बिगहा खिंदपुरा (जहानाबाद)	-10
1989-	दनबार बिहटा (भोजपुर)	-27
1991-	देव सहियारा (भोजपुर)	-14
1991-	तिसखोरा (पटना)	-15

1992-	बारा (गया)	-39
1996-	बथानी टोला (भोजपुर)	-22
1997-	लक्ष्मणपुर बाथे (जहानाबाद)	-58
1998-	नगरी	-10
1999-	सुजातपुर (बक्सर)	-16
1999-	शंकर बिगहा (जहानाबाद)	-23
1999-	सेनारी (जहानाबाद)	-35
1999-	सेन्दानी	-12
2000-	जढ़पुर (बक्सर)	-16
2000-	लखीसराय	-11
2000-	मियांपुर (औरंगाबाद)	-35
2007-	ढेलफोरबा (वैशाली)	-10
2007-	मणिपुर (शेखपुरा)	-09
2009-	अमौसी (खगडिया)	-16

२.राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ

राष्ट्रवादी सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघक अखिल भारतीय कार्यकारी मंडलक तीन दिवसीय बैसक देशक वर्तमान परिस्थिति पर चर्चाक संगहि संगठनात्मक स्थिति पर चर्चा कयल गेल। एहि बैसक मे संघ अपन काजक विस्तार करैत पर्यावरण के अपन कार्य क्षेत्र मे सम्मिलित कयला संघक सर संघ चालक मोहन भागवतक उपस्थिति मे संघक वरिष्ठ नेता तीन दिन धरि चिन्तन मनन कयलनि आ चारि टा प्रस्ताव सेहो पारित कयल गेल। एहि अवसर पर संघ अपन राजनैतिक इकाई भारतीय जनता पार्टीक दशा- दिशा पर विचार कयलक आ पी एम इन वेटिंग लाल कृष्ण आडवाणी आ वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह के भविष्यक अएना सेहो देखा देलनि। दूनू नेताक भविष्यक लऽ कऽ चलि रहल चर्चा क

संदर्भ मे निर्णय जल्दीए अयबाक संभावना अछि। बैसकमे संघक सभ अनुषांगिक संगठनक प्रमुख नेता सर संघचालक अपन उपलब्धि रिपोर्टकोर्ड रखलनि आ भविष्य क योजनाक जनतब देलनि।

बिहारक पर्यटन स्थल राजगृह (राजगीर) मे संघक राष्ट्रीय स्तरक ई पहिल आयोजन प्रदेशमे भेल छल। एहि बैसकमे संघ महत्वपूर्ण निर्णय लैत गाम दिस अपन डेग बढौलक अछि आ गो-रक्षा अभियानक माध्यम सँ जन जन धरि अपन पकड़ बनैबाक लेल ध्यान केन्द्रित करबाक संकेत देलक। एहि वास्ते रोजगारक अवसर आ खेतीक विकास मे योगदान देबय बाला सक्रिय संगठन सभके मददि करबाक रणनीति से हो संघ बनौलक अछि।

कौग्रेसक युवा चेहरा राजीव गाँधी द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रमक माध्यम सँ ग्राम मे भेल सक्रियता क जबाब देबाक लेल संघ विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा सेहो प्रांरभ कयलक अछि। पहिल चरण मे एहि यात्राक लेल एक सौ पचास गाम के चूनल गेल अछि। एहि माध्यम सँ संघ काँग्रेसक अपन वैचारिक लड़ाई गाम सँ लड़ब प्रारंभ कऽ देलक अछि।

संघ आ काँग्रेस वैचारिक रूप सँ दू ध्रूव पर अछि। तथापि गामक विकासक मामिला संघ राहुल गाँधीक बाट पर चलबाक जे निर्णय लेलक अछि देशक भविष्य लेल नीक संकेत अछि। देशक पैघ आबादी एखनो गाम मे अछि जकरा विकासक रोशनीक आवश्यकता अछि। श्री गाँधीक गाममे सक्रियता पर संघक प्रचार प्रमुख मनमोहन वैघ क प्रतिक्रिया ‘जे केओ गामक बात करय नीक बात अछि’ स्वागत योग्य अछि। वैचारिक रूप सँ एक दोसरक विरोधी राजनीतिक क्षेत्र मे सक्रिय राहुल गाँधी आ सामाजिक क्षेत्र मे सक्रिय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक इमानदारी सँ गाम दिस अपन ध्यान देलनि तऽ संभव अछि जे ग्रामीण क्षेत्र मे विकास क नव रोशनी पसरत आ गामे-गामे खुशहाली पसरत। अपन भविष्य क चिन्ता आ पेटक आगि के शांत करबाक लेल महानगर दिस अपन डेग बढ़ा रहल ग्रामीण जनता गामे मे रखि अपन भविष्य क खोज करत।



बिपिन झा

ये बान्धवाऽबान्धवा वा।

दियाबाती दीपक पर्व थीक। बहुतो व्यक्ति एहेन हेतथि जे अपन गाम सँ दूर नगर आ महानगरमे आबि अपन कार्य मे व्यस्त भय गाम-घरक दियाबाती कऽ संवेदनात्मक स्मृतिमात्र अपन

मन मेसंयोजित राखि सन्तोष कयलैत हेतथि। आखिर गाम क दियाबाती आ एहि महानगर कऽ दिवाली मेअन्तर की छैक जेकर भेदक अनुभूति होइत छैक? महानगर मे तऽ चहू दिस बिजली क सजावट आ पटाखा आदि उपलब्ध रहैत अछि जे सहजता सँ गाम मे अखनो धरि उपलब्ध भेनाइ कदाचित कठिने अछि। ताहू मे मूलतः बिजली कऽ सहजता सँ पर्याप्त उपलब्धता नहि भेलाक कारण गाम आ महानगरक तुलने करब अनुचित होयत। मुदा तइयो महानगरीय दिवाली क चमकदार उल्लास सँ अधिक आनन्द ओ मधिम इजोत बला गामक दियाबातीक स्मृति दैत अछि।

यदि एकर कारण देखल जाय तऽ देखैत छी जे एक तऽ महानगरक यान्त्रिक जीवन एहि उल्लास कें न्यून कय दैत अछि आ दोसर मानवीयताक ह्रास अ ओ औपचारिकताक आधिक्य संवेदनात्मक अनुभूति करेवा मे असमर्थ सिद्ध होइत अछि। किन्तु आशय ई नहि जे ई समस्या गामक परिदृश्य मे सर्वथा नहि अछि वा महानगरीय जीवन सर्वथा त्याज्य अछि। कहबाक आशय मात्र एतेक अछि जे सापेक्ष दृष्टि सँ गाम तीव्रगति सँ बदलैत एहि समयचक्र मे संवेदनात्मक पक्ष कें रक्षा करवा मे अखनहुं समर्थ अछि।

हम गामक दियाबाती आइयो ओहिना याद करैत छी। लक्ष्मी पूजा कऽ बाद ऊक प्रज्ज्वलन होइत छलैक। सामान्यतया ओहि राति कालीपूजनोत्सव सेहो होइत छैक अस्तु ओकरो आनन्द लैत छलहुं।

ऊक प्रज्ज्वलन आदि न केवल परंपराक निर्वहण मात्र होइत छैक अपितु पारिवारिक सदस्यक मध्य हार्दिक सामीपता क कारण सेहो होइत छैक। दीप विशॆष रूप सँ कीटनाशक रूप मे प्रथित अछि। पटाखा आदिक आधिक्य तऽ गामो मे बढि रहल छैक मुदा अखनहुं सीमिते कहल जाय।

हम गामक एकटा घटना कऽ स्मरण कय विशेष रूप सँ गामक दिवाली स्मरण करैत छी। घटना करीबन १३ साल पहिलका अछि। १ टा महिला अपन सभ सन्तानक निमित्त दीप दय रहल छलथि। १टा बच्चा पुछलकैन काकी अहां ई दीप दियाबाती दिन अलग से किया दैत छियैक... ....? महिला भावुक भय कहलथि- अपन बच्चा सभ लऽ। ओ बच्चा फेर बाजल- अहां के तऽ...आ ई चारिम केकरा लऽ? ओ और भावुक भय गेली किन्तु बच्चा के किछु नहिं कहलखिन। हम ओहि समय अपन काज सँ हुनका लग गेल रही। बच्चा क ओ अनुत्तरित प्रश्न हमरा जिज्ञासित करय लागल। किछु दिन बाद हम हुनका सँ एकर चर्चा केलियन्हि। ओ कहलथि- अपन बौआ कऽ लेल (हुनकर आठ बर्खक बेटा मरि गेल छलन्हि)। हम एहि सँ पहिने अनेको बेर अपन बाबा कऽ मुँह सँ तर्पण काल मे ई सुनने रही- ये बान्धवाऽबान्धवा वा....। अर्थात जे कोनो पितर एहेन होथि जिनका कोई जल देन्हार नहि छथीन्ह हुनको तृप्ति होन्हि, एहि निमित्त हम ई जल दय रहल छी।

कहबाक भाव मात्र एतेक अछि जे गामक प्रत्येक परंपरा चाहे ओ दिवाली पर्व हो वा अन्य, मानव के स्नेहबन्ध मे रखबाक, आ पारस्परिक सौहार्द्रता एवं कर्तव्यबोध निमित्त होइत अछि। एहि के प्रत्युत महानगरीय परंपरा 'सेलिब्रेट' करबाक बहाना मात्र दैत अछि। ओ महिला बहुत नीक जकां बुझैत हेथीन्ह जे ओ बेटा संग हुनक संबन्ध सर्वदा क लेल टुटि गेल छन्हि मुदा तखनो ओकर प्रसन्नता क कामना हेतु दिबारी जरबैत

छलखीन्ह। संगहि ई आठ बर्ख धरि ओकरा द्वारा देल गेल स्नेह आ सम्मानक निमित्त हुनक कृतज्ञताक परिचायक छलन्हि।

अस्तु ओ महिला क दीप देनाइ सम्वेदनात्मक स्मृतिक रक्षा सँ संदर्भित छल। तीव्र गति सं बदलैत एहि युग मे हम सब एहि संवेदनात्मक पक्ष कें रक्षा नहि कय पाबि रहल छी। यदि जीवन सँ संवेदात्मक पक्ष के निकालि देल जाइ तऽ वस्तुतः मनुष्यक जीवन शून्यक पर्याय बनि जायत। एहि निमित्त आवश्यक अछि जे एहि चकाचौन्ध कें संग ओ धूमिल टिम्टिमाइत दियाबाती दिन जरै बला दिबारी कऽ बाती नहिं खत्म हो, एकर सदिखन रक्षा कयल जाइ।

३. पद्य

३.१. **गुंजन जीक राधा-चौदहम खेप**

३.२.राजदेव मंडल-नदीक माछ-बाट-बटोही

३.३.उमेश मंडल (लोकगीत-संकलन)- खेलौना-आगाँ

३.४.कल्पना शरण-प्रतीक्षा सँ परिणाम तक-७

३.५.विनीत उत्पलक टटका कविता



गंगेश गुंजन

गुंजन जीक राधा- चौदहम खेप

किछुओ कतबो कहैत जाओ संसार

प्रेमहि थिक जीवनक एकमात्र आधार

जीवनक सबटा ब्योंत-व्यवस्था

रस, रसाभास सबहक थिक

अपना-अपनी क ओएह समस्त प्रकार.

जीवन सब तरहें अभिप्रेत मनुष्यक

सृष्टि सेहो संरक्षक एकरे आदिकाल सँ

दृष्टि,बुद्धि जाइत अछि जतबा दूर

अतीतक उज्ज्वल अंश जतेक हो जेहने

मुदा मात्र एकरे गाथा थिक

सबहक प्राण,जीवनक आध्यात्मिको आधार.

प्रेम परिभाषित जेना जतेक जाहि तरहें करैत आएल मनुक्ख

गुणी-पंडितजन सहित युग-युगक समाज

ओतबे आ ओतबे रंगक बा रसक रूप बा अनुभव-जगत अछि ने से अनुराग

जकर चर्चा गायन मे बीतल आयु, जकर चर्चा मे अस्तित्वक कएल गेल आविष्कार !

प्रेम किछु तेहन चित्र नहि बालु, पानि, हो बसात बा घरेक देबाल पर।

से अछि परम स्वतंत्र,स्वशासी आ तें स्वाधीनमना

करय नहि कृपा जेना ककरो पर तहिना

तहिना कोनो परिस्थिति मे नहि करय घृणा।

मनुक्खक सर्वश्रेष्ठ अनुभव, लोकक सर्वोच्च सर्जना

ताहि प्रेमक करैत आह्वान ताही प्रेमक करबा लेल स्मरण,

हमर भेलय जन्म

हमर हएत मरण प्रेम से

जेना नचाबय, नाचब

आ तहिना,जेना बजाओत बाजब

ओ जे-जे कहत करब

ओ जे-जे सहत

ओकरे काया माया-मात्सर्ये हमहूँ

रहब, सब किछु सहब

प्रेम मे जीवन एही मे मरब

हमरा जिआओत ई प्रेम

हमरे प्राण एकरा जिया राखत-

युगधार मे

एकहि क्षण लेल सब किछु,एत धरि जे

श्रीकृष्णक श्रीछवि पर्यन्त।

बहुत काल धरि रहथि ने स्वयं सेहो संग

बहुत काल नहिं संग दैत अछि मनुक्ख कें

ओकर अपनो मोन !

ई संसारी सत्य,सत्य-सुन्दर-शिवकारी सेहो

अन्यथा एतेक-एतेक वेदना

सहल हो कोना मनुक्ख कें-

कोन सामर्थ्य सँ, कोन उद्देश्ये आ

केहन मनोरथ मे ?

व्यक्ति माने श्रीकृष्ण, हिनकर सेहो

होइत अछि अनुवाद-

प्रेममय सब ह्रदय मे

मूल कृष्ण तँ क्षणे-क्षणे

भ जाइत छथि तिरोहित ।

नहि जानि कोन दिशा कोन परिस्थिति मे...

काज चलय एहना मे हुनक अनुवादे सँ।

तें मानी जे प्रेमोक हो अनुवाद

यदि प्रेम मौलिक अनुभव तँ

मौलिकताक अविकल अनुवाद आभासे थिक-प्रेम !

मूल आ अनुवादो थिक।

...

कए रूप मे पड़ि जाइए मन रमकनियाँ भौजी

जेहन बाट ओ एहि युग मे धेलक आ चलि पड़ल

की जाने आइ कोन हालति मे कोना हो

जीबहु देल गेल होइ ओकरा कि मरि गेल रमकनियाँ भौजी ?

केहन विचित्र !

थिक नहि यद्यपि मुदा लोक मानैए अतत्तह एकरा

भरि संसार मरैये पेटे आ देहक लेल

किन्तु बाना धरत एहन जेना सब टा अध्यात्मे हो !

जल-अग्नि-आकाश-वायु आ पृथ्वी सबटा...

सबटा के मानैत छी, बड़ दिब, मानू ईश्वर परन्तु

तकर अभिप्राय-अर्थ, भीतरीयो आगाँ-पाछाँ

सब के बुझू,चीन्हू-जानू

ई सब थिक अस्तित्व हमर,हुनकर, समाज मे सबहक

तथापि तकर आधार छुच्छ भावना नहि छैक

ई सबटा अपरिहार्य तत्व जीवन धारण करबा मे तें

ई सब अछि अभिन्न अकाट्य मनुक्ख सँ।

छुच्छे उपयोगितो ने कही, कारण जे सब प्रकृति देल

स्वयं प्रकृति भेल

स्वतः आ कि निर्मित ककरो हाथें !

से विषय ने हमरा सब सन गामक छौंड़ी राधाक बूझल-गमल

ने आनेक किछु ।

ओ भिन्ने थिक बुद्धि-विलासक विषय। ताहि पर चलि रहलए

बड़े विचार, सुनै छी, क्यो ने क्यो बूढ़-पुरान लोक कहितहि छथि समय-समय

हमरो भ गेल हएत सुनना सए बेर !

हम बा सखि सुखबरनी बा अपने श्रीमान ई कृष्ण

कोना भेलहुं,बनि गेलहुं आ कि बनबाओल छी,

मनुक्खक काया मे जीवित छी वस्तु कोनो ?

बैसबा,सुतबा,खएबा,जीवाक कि बजयबाक बाजा

सभक सब अनके उपयोगक लेल बनल अछि जेना

बीनय सब वस्त्र जोलाह लोक कें पहिरय लए

हमरा लोकनिक सेहो कि सैह निर्माणक खिस्सा ?

मतलब, कुम्हारक घैल बनाओल माटिक बरतन-बासन

भरि क रखबा लेल जल, चूल्हि चढ़ि भानस करबाक उपयोग केहन

आ ककरा वास्ते बनलौं ?

(अगिला अंकमे...)

राजदेव मंडल



शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.
पता- ग्राम-मषहूरनियाँ, रतनसारा(निर्मली)
प्रकाशित कृति- हिन्दी ,नाम-राजदेव प्रियंकर
उपन्यास- जिन्दगी और नाव,पिजरें के पंछी,
दरका हुआ दरपन,अप्रकाशित कृति-
कहानी संग्रह, उपन्यास,मैथिली- कविता संग्रह
कथा संग्रह

नदीक माछ

नदीक कोख सँ उछलल माछ
क' रहल हवा मे नाच
यात्रा पहरक सगुनियाँ

छोड़य चाहैत अछि जलदुनियाँ
देख' चाहैत अछि पवनदुनियाँ
नदी मे रहितो नहि पाबि सकल पानिक थाह
सूखल मे जएबाक हेतु खोजि रहल राह
कर' चाहैत अछि समाजिक हित
बढ़ब' चाहैत अछि नव दुनियाँ सँ प्रीत
छोड़ि देत अपन पुरान बास
करत आब नव-नव प्रयास
खोजत नव-नव चीज
नव-नव बीज
लाभ होयत कि हानि
जाँचत
केहेन अछि हवा पानि
रचत नया इतिहास
नूतन चास बास
परन्तु
सुनने छल ओ अपनहि कान
कहने रहथिन बूढ़-पुरान
''कहियो नहि जाइहेँ ओहि दुनियाँ
ओहिठाम भरल अछि खुनियाँ।''
किन्तु
नव अनुसंधान
माँगैत अछि जीवनदान
तखन भेटैत अछि सम्मान
कोटि-कोटि कँ अन्न प्राण
पर ओ अछि अभागल
जलबून्द कड़ी अछि लागल
विफल भेल ओ छल बल मे
पुनः खसल ओहि नदी कँ जल मे
तद्यपि
बारम्बार क' रहल प्रयास
स्पर्षक हेतु मुक्ताकाष
छोड़ि देने अछि मोह एहि जल कँ
क' रहल कर्म चिन्ता नहि फल कँ।

::

बाट-बटोही

जाएब ओहि पार
खसौने घाड़
पुरान पहाड़
बरिसो सँ अछि ठाढ़
हमरा मार्ग के कएने अवरुद्ध
हरपल भेल क्रुद्ध
कतेको लगेलहुँ बाँहिक जोर
दुखा रहल अछि पोर-पोर
इंच भरि नहि भेल टसमस
भ’ गेलहुँ हम बेबस
नहि कियो द’ रहल अछि साथ
पहाड़ी पर पटकव आब माथ
डूबा देबैक हम खून सँ
अपना घामक बून सँ
विफल भेल छी देह जर्जर
पाछाँ सुनैत छी असंख्य स्वर
स्त्री-पुरुष, बाल अबाल
आबि रहल अछि तोड़ैत ताल
गाबि रहल अछि समूह गान
पुनः आएल शरीर मे जान
मन मे उठय लागल उफान
कत’ गेल ओ पहाड़ी
काँट सँ भरल झाड़ी
आहि रौ तोरी ई कोन बात
गड़ि गेल भूमि कि भागि गेल कात
आकि नभ मे उड़ा देलक बसात
मार्ग भ’ गेल तत्क्षण समतल
चल-चल चल-चल
जय हो जनबल

ताकि रहल अछि बटोही के बाट
नहि कियो लगा सकैत अछि टाट।

उमेश मंडल

खेलौना

(1)
भैया के घर बेटा जनम लेलक बधैया माँगे एलै हो लाल।
सोना खराम चढ़ि भैया एला की की मोर बहीन लेली हो लाल।
सोनाक हम मट्ठा लेलौ रुपा केर हम लेलौ काड़ा हो लाल।
रेषमी कपड़ाक अंगा लेलौ जड़ी लागल हम टोपी हो लाल।
पचासक बदला सौ लऽ कए जेती रेषम साड़ी पहिरेबनि हो लाल।
भनस कए कऽ भौजी अयली खादी साड़ी पहिरेबनि हो लाल।
सयक बदला पचास लय कए जैती, मूड़ी मे डांड़ लगतनिहो लाल।
कनैत खीजैत घर ननदि जेती हो लाल।

(2)
आइ छठि दिन घर मे सुदिन भेल
घर मे भेल ललना, दुआरे वाजे बजना।
बाबा लुटाबथि हाथी ओ घोड़ा
बावी लुटावे गहना, दुआरे बाजे बजना।
काका लुटाबे घड़ी ओ औंठी
काकी लुटाबे कंगना, दुआरे बाजे बजना।
पिसा लुटाबे मोटर गाड़ी
पीसी लुटाबे यौबना, दुआरे बाजे बजना।

(3)
बाजे बाजे बधाबा नन्द के अंगना
कथक नाचे पमरिया नाचे, छोटकी ननदिया नाचे अंगना।
किये तौँ ननदी नाचह आंगन, तोरो भैया रहथि पटना। श् बाजे....
भैया हमर पटना रहै छथि, ओतहि सँ आओत मोती के कंगना।
भाई मोरा जीबौ भतीजबा जीबौ, देव पुराओल मन कामना।

(4)
ककरा के अंगना जमहिरा रे,
मन रंजे के लाल।
ककरा बहिनि आबय रे,
मन रंजे के लाल।
बाबा के अंगना जमहिरा रे,
मन रंजे के लाल।
पलंगा सुतल तोहे पिया हे,
मन रंजे के लाल।
बहिन मांगय इनाम रे,
मन रंजे के लाल।
तेरे सन्दुक मे कंगना रे,श् मन रंजे...
कंगना हम नहि लेब रे, मन....
हमहि त लेब नौ लाखा हार,श् मन.....
हँसैत जायब ससुरारि रे,श् मन......
हम नहि देब नौ लाख के हार,श् मन....
कनैत जाउ ससुरारि रे,श् मन.....
जँ नहि देब नौ लाख के हार,श् मन....
बबुआ के लऽ जैब ससुरारि रे,श् मन....
फेर कऽ बबुआ जनम लेब रे,श् मन....
नैना मे नैना मिला लेब रे,श् मन....
सुनु बचन अहाँ ननदी रे,श् मन....
कोखिया लहरि नहि जाय रे,
गन रंजे के लाल।

(अगिला अंकमे)

कल्पना शरण

प्रतीक्षा सऽ परिणाम तक 7

कृष्णक परामर्शपर पुत्र केलक माताक अवज्ञा
दुर्योधनक अन्त सऽ भेल कौरव समाप्त
भीमक प्रतिमा बढ़ाकऽ केलखिन रक्षा
पुनश्च पराजय सऽ विह्वल धृतराष्ट्र
परिवारक अन्त आ पतिक अव्हेलना पर
गान्धारी देलखिन यदुवंशक विनाशक श्राप

नगरक अन्त स भऽ हतोत्साहित बलराम
प्राण निकललैन मुँह सऽ श्वेत नागक रूपमे
धोखा सऽ मरल बालि प्रभु रामक द्वारा
पुनर्जन्मल छल ओकर शिकारी के भेषमे
प्रभु करैत विश्राम चरणके मणि देखि
चलेनेछल तीर जारा एक मृगक भ्रममे

गान्धारीक क्रोध मे स्वर्णिम शहर द्वारिका
जन जीवन सहित जलमग्न भेल छल
वा एक दोसर के मारि क नष्ट भेल

जे विश्वामित्र आ नारद मुनीक श्राप छल

कालचक्र बढ़ल द्वापरयुगसऽ कलयुग दिस

अष्टमवतारक विषदोष अन्तपरिणाम छल


विनीत उत्पलक

गप

शुरू करल जाए फेर सऽ गप

जतय खत्म भऽ गेल छल

अपन गप आ संवाद

मुदा, अहि बेर ध्यान राखब

एक टा गप जे

एक-दोसर कऽ स्वाधीन छोड़ब

बेसी नीक होयत

बिसरै पड़त

के फूइस बाजल छल

के सच कऽ दामन थामने छल

विश्वासघात आ पाश्चाताप कऽ

घुइट कऽ पी गेल छल

के ककरा देलक ओ कष्ट जे

महसूस तऽ भेल

मुदा, कहल नहि गेल

भूगोल आ इतिहास स दूर भऽ कऽ

अहि समयांतराल मे

दुनिया बदलि गेल

धरती से चांद पर पहुंच गेल लोक

पीढ़ी-दर-पीढ़ी खत्म भऽ गेल

आ नबका लोक आबि गेल

आब नोर नहि बहैत अछि

ओ शब्दक जाल स

ता धरि हृदय मोम नहि बनैत अछि

ककरो नोर सऽ

अनंत कालक स्मृति आइयो

सिनेमा जना आंखि के आगू

घुमैत जाइत अछि

बिना कोनो ब्रेक आ इंटरवल के

नक्सल के नाम पर

मारि जाय रहल छथि लोक

लाशक ढेर से

गुजरि रहल छथि दिन आ राति

डेग-डेग पर बारूदी सुरंग

आ बंदूकक नोकक आगू

नींद नहि आबैत छैक

लोक कऽ जखन ई बात सदियों सऽ छल

इराक सऽ लऽ कऽ

अफगानिस्तान तक

मनुख नहि छैक ओ मनुख

जकरा मे एकटा आत्मा छल कहियो

ओ भऽ गेल छल मशीन

एकटा ओबामा बनि गेल छल

अशांतिक प्रतीक

दोसर ओबामा कऽ

मिलल शांतिक आशा मे नोबल

एहि युग मे जतय बाट

एतेक कंटकाकीर्ण छैक

ओतय,

बिसरल बाट खोजहि परत

गप शुरू करय परत

एक ठां बैसै परत एक उम्मीदक संग

कि गप से खत्म होयत मनमुटाव

जखन कि ई बुझैत जे कखनो धोखा खा सकैत अछि

ई बाट पर।

सन्तोष कुमार मिश्र

केकरा करु किलोल हो मिता

केकरा करु किलोल हो मिता
केकरा हम करिऐ किलोल

भरल गाम लोकमे
किओ नहि अप्पन अछि
नहि किओ आन अछि
हमरा लेल सबहे माटिक मूर्ति
आ सबहे मुर्दा समान अछि ।

केकरा करु किलोल हो मिता
केकरा हम करिऐ किलोल
सबहे लग झूठक खिस्सा छै
चिन्नि नइ मटिया मिट्ठा छै
अन्हिरिया सेहो इजोरिया छै
सबहक अपने खिस्सा छै ।

केकरा करु किलोल हो मिता
केकरा हम करिऐ किलोल
सपना नइ ई बिपना छै
निराशा जीवनक आशामे
परिवर्तणके जरुरत छै ।


विनीत ठाकुर

गीत

जिवन एक अनमोल गहना खुबकऽ झमकाऊ

हिरा मोतिसँ प्रज्वलित सपना नयनमे सजाऊ

कर्मक पथपर चलु आगु छोरु टिकरम जाल
छि अहाँ चमकैत सोना माँ मिथिलाके कोखक लाल
झगर लगाउन चुगला बनिकऽ मुहनै नुकाउ

फूसक एकचारीपर कखनो उरुनै बनिकऽ कौवा
केकरो माथपर ठनका खसा बजवियौनै कैह वौवा
सोनितके हर एक कतरा अपन विकाशमे लगाऊ

मानवता राईख मनमे दोसरके होइयौ सहारा
सबकेउ एक दोशरसँ अपनामे राखू भाईचारा
टुइट परु अधिकारकलेल केकरोसँ नै डेराउ


दयाकान्त

ई बुढिया अछि हक्कल डइन

नैहर मे सिखलक सावर्ण मंत्र

नहि काज करै एकरा लग कोनो जंत्र

पहिने खेलक अप्पन सांय

सालेक भीतर जावत भेल धांय

तखन भुजय लागल टोल आ गाम
एकरा लग के बुद् बच्चा नैन्ह
ई बुढिया अछि हक्कल डइन

नहि छैक एकरा कोनो लाज विचार
ककरा संग करी कोण व्यव्हार
नहि बजाबय कियो काज तिहार
तैयो टपकी परैया बीचे द्वार
नव कनिया खेला लगैत अछि भूत
बाम हाथ से जाकर छुबय चैन
ई बुढिया अछि हक्कल डइन

ककरो मरैया सांप कटा के
ककरो मरैया रोग ढूका के
ककरो मरैया दर्द करा के
ककरो मरैया धार डूबा के
नहि छोरैया बुढिया ओकरा
रहै छैक जाकर पर कैन
ई बुढिया अछि हक्कल डइन

बिच राईत मे गाछ हंकैया

निशाभाग राईत मे गाम घुमैया

पोषने अछि चुरिन, भूत जुआन

करैया टोल परोस परेशान

नहि बचल ओ लोक आई धरि

तकैया जाकर दिस कन्खुरिये नैन

ई बुढिया अछि हक्कल डइन

दुनियाँ आई अन्तरिक्ष घुमैया

सागर मे पताका भह्राबैया

चंदरमा पर बसत आब लोक

भारत खोजि लेलक ओतय पानि

नहि भेल हमर सोच मे अंतर

अखनो भूत, प्रेत आ डाइन

ई बुढिया अछि हक्कल डइन

बालानां कृते-

१.देवांशु वत्सक मैथिली चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स)

२.कल्पना शरण: देवीजी



देवांशु वत्स, जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन।
विशेष: गुजरात राज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा ''जंग'' प्रकाशित (2004 ई.)

नताशा:

(नीचाँक कार्टूनकेँ क्लिक करू आ पढ़ू)

नताशा उनतीस



<u>कल्पना शरण:देवीजी:</u>

देवीजी : धानक गूरा सऽ विद्युत निर्माण

खरीफ फसल के कटनी के समय नजदीक छल।देवीजी के ज्ञात छलैन जे सब किसान घरमे अखन अस्तव्यस्तता चलि रहल छल। ताहि पर सऽ धान तऽ मिथिलांचल के सर्वप्रमुख अनाज अछि।बच्चो सबहक पाठ लगभग पूरा भऽ गेल छल आ परीक्षा के तैयारीक समय छल।मुदा देवीजीक मस्तिष्क के विश्राम नहिं नीक लागैत छलैन।

देवीजी देखैत छलखिन जे धान कुटेला के बाद जे भूसा निकलै छै तकर उपयोग अपना सब दिस माल जाल के खुआबऽ मे होयत छै।जखन कि अकर बहुत नीक व्यवसायिक उपयोग छै। तै देवीजी फेर सऽ एक बैठक बैसेली जाहिमे ओ धानक भूसा के सदुपयोगक सुझाव रखने छली। धानक भूसा के जराबऽ सऽ जे गैस निकलै छै ताहि के उपयोग बिजली बनाबैमे कैल जा सकैत छै।जरेला के बाद जे राखि भेटै छै ताहि सऽ सिमेट बनायल जा सकैत छै जे अतेक उत्कृष्ट प्रकारके होयत छै जकर प्रयोग पानिक जहाज मे कैल जा सकैत छै।एहेन सिमेट मजबूत जलविरोधक होयत छै।चारि किलो भूसा जराकऽ 1 लीटर डीजल के बराबरी के उर्जा उत्पन्न कैल जा सकैत छै। देवीजी कहलखिन जे धानक पूरा वजन के 22प्रतिशत हिस्सा गूरा होयत छै।बाँकि मे चाउर. खुद्दी इत्यादि होयत छै।

देवीजी कहलखिन जे बिहार के बेतियाहमे स्थित हस्क पावर प्लाण्ट जे कि एक पुरस्कृत ग्रामीण विद्युतीकरण कम्पनी छै. पश्चिमी चम्पारण के करीब 50 टा गाममे अहि प्रकार प्रयोग सफलता पूर्वक कऽ चुकल छै जाहि सऽ करीब 2000 सऽ 4000ग्रामवासी फलान्वित भऽ रहल छैथ।सब प्लाण्ट छह मास के भीतर लागत वसूलि लाभ हासिल करऽ लागल छै।अहि कम्पनी के एहेन सफलता देखि ओकरा शेल फाउण्डेशन के दिस सऽ दुबारा आर्थिक सहायता भेटि रहल छै। अहि कम्पनी के लक्ष्य छै 2009 के अन्त तक 100गाम. 2010 तक 400 गाम तथा 2012 तक 2000 गाम मे धानक गर्दा सऽ बिजली निर्माण केनाई।

देवीजी के अहि सूचना सऽ ग्रामवासी बहुत आश्चर्यचकित आऽ खुश छलैथ।मुदा एहेन प्रयोगके लेल उपर्युक्त कम्पनीके सहायताक आवश्यकता छल।एक एहेन प्रयास के आवश्यकता छल जे गामक विकास के प्रस्ताव उद्योगपति तक पहुँचा सकै। प्रजातांत्रिक राष्ट्र के एक मध्यम वा निम्न वर्गीय समुदायके लेल सबस सहज छल अपन क्षेत्र के राजनैतिक संगठन लग प्रस्ताव रखनाई । अहि प्रयास लेल देवीजी के ग्रामवासी समेत प्रधानाध्यापक के पूरा सहयोग भेटलैन।

<u>बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक</u>

१.प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त्त (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सर्वप्रथम अपन दुनू हाथ देखबाक चाही, आ' ई श्लोक बजबाक चाही।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

करक आगाँ लक्ष्मी बसैत छथि, करक मध्यमे सरस्वती, करक मूलमे ब्रह्मा स्थित छथि। भोरमे ताहि द्वारे करक दर्शन करबाक थीक।

२.संध्या काल दीप लेसबाक काल-

दीपमूले स्थितो ब्रह्मा दीपमध्ये जनार्दनः।

दीपाग्रे शङ्करः प्रोक्तः सन्ध्याज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शङ्कर स्थित छथि। हे संध्याज्योति! अहाँकेँ नमस्कार।

३.सुतबाक काल-

रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।

शयने यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति॥

जे सभ दिन सुतबासँ पहिने राम, कुमारस्वामी, हनूमान्, गरुड़ आऽ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

४. नहेबाक समय-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कावेरी धार। एहि जलमे अपन सान्निध्य दिअ।

५.उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

समुद्रक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भारत अछि आऽ ओतुका सन्तति भारती कहबैत छथि।

६.अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा।

पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥

जे सभ दिन अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मण्दोदरी, एहि पाँच साध्वी-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

७.अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः॥

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृपाचार्य आऽ परशुराम- ई सात टा चिरञ्जीवी कहबैत छथि।

८.साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी

उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादान्तस्य धूर्जटेः

जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला॥

९. बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाक्षत मंत्र(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्नित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। लिंभोक्ता देवताः। स्वराडुत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥

आ ब्रह्मंन् ब्राह्मणो ब्रंह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे रांजन्यः शुरेंऽइषव्योऽतिव्याधी मंहारथो जायतां दोग्ध्रीं धेनुर्वोढांनड्वानाशुः सप्तिः पुरंन्धिर्योवा जिष्णू रंथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजंमानस्य वीरो जायतां निकामे-निंकामे नः पर्जन्यों वर्षतु फलंवत्यो नऽओषंधयः पच्यन्तां योगेक्षमो नः कल्पताम्॥२२॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।

ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ' सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ' शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बरद भार वहन करएमे सक्षम होथि आ' घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम होथि आ' युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ' नेतृत्व देबामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ' औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ' मित्रक उदय होए॥

मनुष्यकें कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वर्णन एहि मंत्रमे कएल गेल अछि।

एहिमे वाचकलुप्तोपमालड़्कार अछि।

अन्वय-

ब्रह्मंन् - विद्या आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म

राष्ट्रे - देशमे

ब्रंह्मवर्चसी-ब्रह्म विद्याक तेजसँ युक्त

आ जायतां- उत्पन्न होए

रांजन्यः-राजा

शुरेंऽ बिना डर बला

इषव्यो- बाण चलेबामे निपुण

ऽतिव्याधी-शत्रुकेँ तारण दय बला

मंहारथो-पैघ रथ बला वीर

दोग्ध्रीं-कामना(दूध पूर्ण करए बाली)

धेनुर्वोढांनड्वानाशुः धेनु-गौ वा वाणी वोंढांनड्वा- पैघ बरद नाशुः-आशुः-त्वरित

सप्तिः-घोड़ा

पुरंन्धिर्योवा- पुरंन्धि- व्यवहारकेँ धारण करए बाली योंवा-स्त्री

जिष्णू-शत्रुकेँ जीतए बला

रथेष्ठाः-रथ पर स्थिर

सभेयो-उत्तम सभामे

युवास्य-युवा जेहन

यजमानस्य-राजाक राज्यमे

वीरो-शत्रुकेँ पराजित करएबला

निकामे-निंकामे-निश्चययुक्त कार्यमे

नः-हमर सभक

पर्जन्यों-मेघ

वर्षतु-वर्षा होए

फलवत्यो-उत्तम फल बला

ओषधयः-औषधिः

पच्यन्तां- पाकए

योगेक्षमो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा

नः-हमरा सभक हेतु

कल्पताम्-समर्थ होए

ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर,तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संरक्षित करी।

Input: (कोष्ठकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-रोमनमे टाइप करू। Input in Devanagari, Mithilakshara or Phonetic-Roman.)

Output: (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर आ फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे। Result in Devanagari, Mithilakshara and Phonetic-Roman/ Roman.)

इंग्लिश-मैथिली-कोष / मैथिली-इंग्लिश-कोष प्रोजेक्टकेँ आगू बढ़ाऊ, अपन सुझाव आ योगदानई-मेल द्वारा ggajendra@videha.com पर पठाऊ।

विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

नेपाल आ भारतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली

1.नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली

(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१.पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना-

अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओलोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोकबेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोटसन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽकऽ पवर्गधरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽकऽ ज्ञधरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२.ढ आ ढ़ : ढ़क उच्चारण "र् ह"जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ "र् ह"क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आनठाम खालि ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्दसभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३.व आ ब : मैथिलीमे "व"क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश,बन्दना आदि। एहिसभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश,वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४.य आ ज : कतहु-कतहु "य"क उच्चारण "ज"जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी,जदु, जम आदि कहल जाएवला शब्दसभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, याबत,योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५.ए आ य : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्दसभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारूसहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ “य”क प्रयोगक प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो “ए”क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६.हि, हु तथा एकार, ओकार : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु,तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले,चोट्टे, आनो आदि।

७.ष तथा ख : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.ध्वनि-लोप : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क)क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमेसँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़’ गेलाह, क’ लेल, उठ’ पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख)पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग)स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ)वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ)क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च)क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९.ध्वनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटिकऽ दोसरठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन),पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु(माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्दसभमे ई नियम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०.हलन्त()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्दसभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषासम्बन्धी

नियमअनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरणसम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्षसभकेँ समेटिकऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनिकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽवला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषीपर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़िरहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषतासभ कुण्ठित नहि होइक, ताहूदिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए।

-(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

2. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

1. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर,तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन,अखनि,एखेन,अखनी
ठिमा,ठिना,ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर।(वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैक्लपिकतया अपनाओल जाय:भ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

4. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

5. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत:जैह,सैह,इएह,ओऐह,लैह तथा दैह।

6. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

7. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

8. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

9. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

10. कारकक विभक्त्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:-हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

11. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

12. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

13. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

14. हलंत चिह्न नियमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

15. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

16. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रा पर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

17. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

18. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।

19. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

20. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

21.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६

VIDEHA FOR NON-RESIDENT MAITHILS(Festivals of Mithila date-list)

8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

8.1. Original Maithili Poem by Smt.Shefalika Varma,by B.N.Varma

8.2.Original poem in Maithili by Gajendra Thakur Translated into English by Lucy Gracy from New York

DATE-LIST (year- 2009-10)

(१४१७ साल)

Marriage Days:

Nov.2009- 19, 22, 23, 27

May 2010- 28, 30

June 2010- 2, 3, 6, 7, 9, 13, 17, 18, 20, 21,23, 24, 25, 27, 28, 30

July 2010- 1, 8, 9, 14

Upanayana Days: June 2010- 21,22

Dviragaman Din:

November 2009- 18, 19, 23, 27, 29

December 2009- 2, 4, 6

Feb 2010- 15, 18, 19, 21, 22, 24, 25

March 2010- 1, 4, 5

Mundan Din:

November 2009- 18, 19, 23

December 2009- 3

Jan 2010- 18, 22

Feb 2010- 3, 15, 25, 26

March 2010- 3, 5

June 2010- 2, 21

July 2010- 1

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami-12 July

Madhushravani-24 July

Nag Panchami-26 Jul

Raksha Bandhan-5 Aug

Krishnastami-13-14 Aug

Kushi Amavasya- 20 August

Hartalika Teej- 23 Aug

ChauthChandra-23 Aug

Karma Dharma Ekadashi-31 August

Indra Pooja Aarambh- 1 September

Anant Caturdashi- 3 Sep

Pitri Paksha begins- 5 Sep

Jimootavahan Vrata/ Jitia-11 Sep

Matri Navami- 13 Sep

Vishwakarma Pooja-17Sep

Kalashsthapan-19 Sep

Belnauti- 24 September

Mahastami- 26 Sep

Maha Navami - 27 September

Vijaya Dashami- 28 September

Kojagara- 3 Oct

Dhanteras- 15 Oct

Chaturdashi-27 Oct

Diyabati/Deepavali/Shyama Pooja-17 Oct

Annakoota/ Govardhana Pooja-18 Oct

Bhratridwitiya/ Chitragupta Pooja-20 Oct

Chhathi- -24 Oct

Akshyay Navami- 27 Oct

Devotthan Ekadashi- 29 Oct

Kartik Poornima/ Sama Bisarjan- 2 Nov

Somvari Amavasya Vrata-16 Nov

Vivaha Panchami- 21 Nov

Ravi vrat arambh-22 Nov

Navanna Parvana-25 Nov

Naraknivaran chaturdashi-13 Jan

Makara/ Teela Sankranti-14 Jan

Basant Panchami/ Saraswati Pooja- 20 Jan

Mahashivaratri-12 Feb

Fagua-28 Feb

Holi-1 Mar

Ram Navami-24 March

Mesha Sankranti-Satuani-14 April

Jurishital-15 April

Ravi Brat Ant-25 April

Akshaya Tritiya-16 May

Janaki Navami- 22 May

Vat Savitri-barasait-12 June

Ganga Dashhara-21 June

Hari Sayan Ekadashi- 21 Jul

Guru Poornima-25 Jul

Dr. Baidya Nath Varma,Professor Ennitus of Sociology,The City University of New York

ENGLISH TRANSLATION OF MAITHILI POEMS



Shefalika Verma has written two outstanding books in Maithili; one a book of poems titled "BHAVANJALI", and the other, a book of short stories titled "YAYAVARI". Her Maithili Books have been translated into many languages including Hindi, English, Oriya, Gujarati, Dogri and others. She is frequently invited to the India Poetry Recital Festivals as her fans and friends are important people. I do not have to give more introduction of her as her achievements speak for themselves.

Shefalika, the poet enjoys being with her lover. Who else could he be except her husband?

I will translate for the readers some of her poems to show her affection for life and the agony of bereavement from her sweet heart.

Her poems take leaps in all directions and focus on nature, from flowers to lakes and mountains, from the sun to the moon to the stars, and finally she reaches humanity she embraces them all.

Let us follow her dreams in BHAVANJALI now….

[Poem No. 11]

"The flower "Rajanigandha" is crying,
Although blessed with a garland of stars,
"Singarhar" is shaking with pain,
The clouds are showering rain…
…..from the mouth of the sky.
You came silently without exposing your body
Now you have become my life.
You are decorating the smile on my lips for eternity."

[Poem No. 14]

"…you are searching yourself in my eyes
If you do not see yourself you are lost.
But I have decorated you in my heart…"

Then she goes into a different world….

[Poem No. 20]

"…you make me dance as you wish,

I live my life as you want,

Then why are you measuring the guilt of each of us?

Oh God, You are not free of guilt!"

[Poem No. 26]

When my heart becomes desert

You shower rain on it.

And I receive a new life.

You have given me everything:

Truth and falsehood,

Sin and godliness,

Respect and people's hatred…"

She floats in the heavens now...

[Poem No. 41]

"How will my song reach you?
The fragrance of my breadth flies around the world to reach you.
The tears of my bereaved eyes flow drop by drop.
You left me, the moon left…
The music vanished from the moonlight.
The beauty of the dawn evaporated from my life,
And the season of songs vanished for me ___
I had hoped forever."

And the world changed, she found her soul.

[Poem No. 49]

I have traveled the world...
Visited all the religious places, dipped in the holy rivers,
And found that in the small space of my Heart,

All the elegance of the world exists.

Original poem in Maithili by Gajendra Thakur
Translated into English by Lucy Gracy from New York

Gajendra Thakur (b. 1971) is the editor of Maithili ejournal "Videha" that can be viewed at http://www.videha.co.in/ . His poem, story, novel, research articles, epic __all in Maithili language are lying scattered and is in print in single volume by the title "KurukShetram." He can be reached at his email: ggajendra@airtelmail.in

The Fire Age Of Emigration To City

The rushing group of milkmen

A chase to cross the river of Kamala

Swimming against the flow

The burp like sound of castle

Groups returning to the village

The peaceless home filled with quarrels

The life among the shit of castle

Faced towards the towns

Land of hatred dislikes pollution and diseases

Many friends died of aids

Retreating the village life

Among the fascination of the city

First came the age of emigration

Now lonely families suffering separations

What pleasure did the houses get?

Many villages are contaminated by the idea of emigration

God knows what the reason is

People will laugh at me if one sells groceries at village

But who sees what you do in the city

And facing the discrimination here too

Looking for a single people of my village

Friends are also showing proud

Generations are dieing of such ideology

The regional violence

Is this going to be fate of whole India?

Then why to leave my place out of fear

Whose conspiracy is this?

Why couldn't find the root

Couldn't get doctor when needed

Who will help in flood and drought?

My home is where I live now

I have sensitivity

For the next generation

I will have my courage with me always.

१.*विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions*

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download,

३.*मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads*,

४.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

५.मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

"विदेह"क एहि सभ सहयोगी लिंकपर सेहो एक बेर जाऊ।

६.विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

७.विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/

८.विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित :

http://madhubani-art.blogspot.com/

९.विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/

१०.विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/

११.विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

१२. विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

१३. विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

१४.VIDEHA"IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

१५.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

१६.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

१७.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

१८.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/

२०.श्रुति प्रकाशन

http://www.shruti-publication.com/

२१.विदेह- सोशल नेटवर्किंग साइट

http://videha.ning.com/

२२.http://groups.google.com/group/videha

२३.http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/

२४.गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

http://gajendrathakur123.blogspot.com

२५.विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइटhttp://videha123radio.wordpress.com/

२६. नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) 'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल गेल गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प-गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-किशोर साहित्य विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-१ सँ ७ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 विवरण एहि पृष्ठपर नीचाँमे आ प्रकाशकक साइटhttp://www.shruti-publication.com/ पर।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary. विदेहक भाषापाक- रचनालेखन स्तंभमे।

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बालमंडली-किशोरजगत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-१ सँ ७

Ist edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding: Language:Maithili
६९२ पृष्ठ : मूल्य भा. रु. 100/-(for individual buyers inside india)
(add courier charges Rs.50/-per copy for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers $40 US (including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

https://sites.google.com/a/videha.com/videha/

http://videha123.wordpress.com/

(send M.O./DD/Cheque in favour of AJAY ARTS payable at DELHI.)

Amount may be sent to Account No.21360200000457 Account holder (distributor)'s name: Ajay Arts,Delhi, Bank: Bank of Baroda, Badli branch, Delhi and send your delivery address to email:- shruti.publication@shruti-publication.com for prompt delivery.
DISTRIBUTORS: AJAY ARTS, 4393/4A,

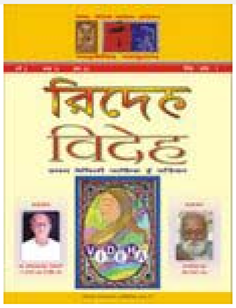
Ist Floor,Ansari Road,DARYAGANJ.

Delhi-110002 Ph.011-23288341, 09968170107

e-mail:shruti.publication@shruti-publication.com
website: http://www.shruti-publication.com/

विदेह: सदेह : १ : तिरहुता : देवनागरी

"विदेह" क २५म अंक १ जनवरी २००९, प्रिंट संस्करण :विदेह-ई-पत्रिकाक पहिल २५ अंकक चुनल रचना सम्मिलित।



विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका http://www.videha.co.in/

विदेह: वर्ष:2, मास:13, अंक:25 (विदेह:सदेह:१)

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर; सहायक-सम्पादक: श्रीमती रश्मि रेखा सिन्हा

Details for purchase available at print-version publishers's site http://www.shruti-publication.com or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com



"मिथिला दर्शन"

मैथिली द्विमासिक पत्रिका

अपन सब्सक्रिप्शन (भा.रु.288/- दू साल माने 12 अंक लेल

भारतमे आ ONE YEAR-(6 issues)-in Nepal INR 900/-, OVERSEAS- $25; TWO

YEAR(12 issues)- in Nepal INR Rs.1800/-, Overseas- US $50) "मिथिला

वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00 कहानी-संग्रह रेल की बात : हरिमोहन झा प्रकाशन वर्ष 2008मूल्य रु.125.00 छछिया भर छाछ : महेश कटारे प्रकाशन वर्ष 2008मूल्य रु. 200.00 कोहरे में कंदील : अवधेश प्रीत प्रकाशन वर्ष 2008मूल्य रु. 200.00 शहर की आखिरी चिडिया : प्रकाश कान्त प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00 पीले कागज़ की उजली इबारत : कैलाश बनवासी प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00 नाच के बाहर : गौरीनाथ प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00 आइस-पाइस : अशोक भौमिक प्रकाशन वर्ष 2008मूल्य रु. 180.00 कुछ भी तो रूमानी नहीं : मनीषा कुलश्रेष्ठ प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00 बडक़ू चाचा : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 195.00 भेम का भेरू माँगता कुल्हाड़ी ईमान : सत्यनारायण पटेल प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 200.00 कविता-संग्रह या : शैलेय प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 160.00 जीना चाहता हूँ : भोलानाथ कुशवाहा प्रकाशन वर्ष2008 मूल्य रु. 300.00 कब लौटेगा नदी के उस पार गया आदमी : भोलानाथ	आलोचना का आरंभ : अभिषेक रौशन सामाजिक चिंतन किसान और किसानी : अनिल चमडिय़ा शिक्षक की डायरी : योगेन्द्र उपन्यास माइक्रोस्कोप : राजेन्द्र कुमार कनौजिया पृथ्वीपुत्र : ललित अनुवाद : महाप्रकाश मोड़ पर : धूमकेतु अनुवाद : स्वर्णा मोलारूज़ : पियैर ला मूर अनुवाद : सुनीता जैन कहानी-संग्रह धूँधली यादें और सिसकते ज़ख्म : निसार अहमद जगधर की प्रेम कथा : हरिओम अंतिका, मैथिली त्रैमासिक, सम्पादक- अनलकांत अंतिका प्रकाशन,सी-56/यूजीएफ-4,शालीमारगार्डन,एकसटेंशन-II,गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.),फोन : 0120-6475212,मोबाइल नं.9868380797,9891245023, आजीवन सदस्यता शुल्क भा.रु.2100/-चेक/ ड्राफ्ट द्वारा “अंतिका प्रकाशन” क नाम सँ पठाऊ। दिल्लीक बाहरक चेक मे भा.रु. 30/- अतिरिक्त जोड़ू।

कुशवाहा प्रकाशन वर्ष 2007 मूल्य रु.225.00
लाल रिब्बन का फुलबा : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष2007 मूल्य रु.190.00
लूऑं के बेहाल दिनों में : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष2008 मूल्य रु. 195.00
फैंटेसी : सुनीता जैन प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु.190.00
दु:खमय अराकचक्र : श्याम चैतन्य प्रकाशन वर्ष2008 मूल्य रु. 190.00
कुर्आन कविताएँ : मनोज कुमार श्रीवास्तव प्रकाशन वर्ष 2008 मूल्य रु. 150.00

बया, हिन्दी तिमाही पत्रिका, सम्पादक- गौरीनाथ

संपर्क- अंतिका प्रकाशन,सी-56/यूजीएफ-4,शालीमारगार्डन,एकसटेंशन-II,गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.),फोन : 0120-6475212,मोबाइल नं.9868380797,9891245023,

आजीवन सदस्यता शुल्क रु.5000/- चेक/ ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा " अंतिका प्रकाशन" के नाम भेजें। दिल्ली से बाहर के चेक में 30 रुपया अतिरिक्त जोड़ें।

पुस्तक मंगवाने के लिए मनीआर्डर/ चेक/ ड्राफ्ट अंतिका प्रकाशन के नाम से भेजें। दिल्ली से बाहर के एट पार बैंकिंग (at par banking) चेक के अलावा अन्य चेक एक हजार से कम का न भेजें। रु.200/- से ज्यादा की पुस्तकों पर डाक खर्च हमारा वहन करेंगे। रु.300/- से रु.500/- तक की पुस्तकों पर 10% की छूट, रु.500/- से ऊपर रु.1000/- तक 15%और उससे ज्यादा की किताबों पर 20%की छूट व्यक्तिगत खरीद पर दी जाएगी ।

एक साथ हिन्दी, मैथिली में सक्रिय आपका प्रकाशन

अंतिका प्रकाशन
सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन,एकसटेंशन-II
गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फोन : 0120-6475212
मोबाइल नं.9868380797,

हार्डबाउन्ड (मूल्य भा.रु.१२५/- US$डॉलर ४०) आ पेपरबैक (भा.रु. ७५/- US$ २५/-)

५/६. विदेह:सदेह:१: देवनागरी आ मिथिलाक्षर संस्करण:Tirhuta : 244 pages (A4 big magazine size)विदेह: सदेह: 1: तिरहुता : मूल्य भा.रु.200/-
Devanagari 244 pages (A4 big magazine size)विदेह: सदेह: 1: :देवनागरी : मूल्य भा. रु. 100/-

७. गामक जिनगी (कथा संग्रह)- जगदीश प्रसाद मंडल): मूल्य भा.रु. ५०/- (सामान्य), $२०/- पुस्तकालय आ विदेश हेतु)

८/९/१०.a.मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश; b.अंग्रेजी-मैथिली शब्द कोश आ c.जीनोम मैपिंग ४५० ए.डी. सँ २००९ ए.डी.- मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध-सम्पादन-लेखन-*गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा एवं पञ्जीकार विद्यानन्द झा*

P.S. Maithili-English Dictionary Vol.I & II ; English-Maithili Dictionary Vol.I (Price Rs.500/-per volume and $160 for overseas buyers) and Genome Mapping 450AD-2009 AD- Mithilak Panji Prabandh (Price Rs.5000/-

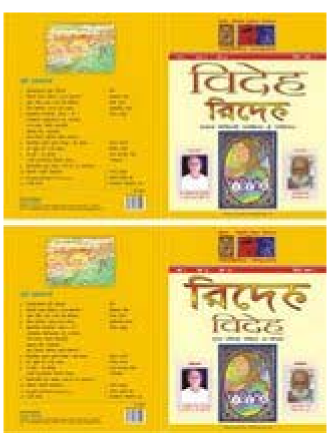
७.हम पुछैत छी (पद्य-संग्रह)- विनीत उत्पल

८.मिथिलाक जन साहित्य- अनुवादिका श्रीमती रेवती मिश्र (Maithili Translation of Late Jayakanta Mishra's Introduction to Folk Literature of Mithila Vol.I & II)
९.मिथिलाक इतिहास स्वर्गीय प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी

Details of postage charges availaible onhttp://www.shruti-publication.com/
(send M.O./DD/Cheque in favour of AJAY ARTS payable at DELHI.)
Amount may be sent to Account No.21360200000457 Account holder (distributor)'s name: Ajay Arts,Delhi, Bank: Bank of Baroda, Badli branch, Delhi and send your delivery address to email:- shruti.publication@shruti-publication.com for prompt delivery.

Address your delivery-address to श्रुति प्रकाशन,:DISTRIBUTORS: AJAY ARTS, 4393/4A, Ist Floor,Ansari Road,DARYAGANJ.Delhi-110002 Ph.011-23288341, 09968170107Website: http://www.shruti-publication.com e-mail:shruti.publication@shruti-publication.com (विज्ञापन)

and $1600 for overseas buyers. TIRHUTA MANUSCRIPT IMAGE DVD AVAILABLE SEPARATELY FOR RS.1000/- US$320) have currently been made available for sale.	



(कार्यालय प्रयोग लेल)

विदेह:सदेह:१ (तिरहुता/ देवनागरी)क अपार सफलताक बाद विदेह:सदेह:२ आ आगाँक अंक लेल वार्षिक/ द्विवार्षिक/ त्रिवार्षिक/ पंचवार्षिक/ आजीवन सद्स्यता अभियान।
ओहि बर्खमे प्रकाशित विदेह:सदेहक सभ अंक/ पुस्तिका पठाओल जाएत।
नीचाँक फॉर्म भरू:-

विदेह:सदेहक देवनागरी/ वा तिरहुताक सदस्यता चाही: देवनागरी/ तिरहुता
सदस्यता चाही: ग्राहक बनू (कूरियर/ रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित):-

एक बर्ख(२०१०ई.)::INDIAरु.२००/-NEPAL-(INR 600), Abroad-(US$25)
दू बर्ख(२०१०-११ ई.):: INDIA रु.३५०/- NEPAL-(INR 1050), Abroad-(US$50)
तीन बर्ख(२०१०-१२ ई.)::INDIA रु.५००/- NEPAL-(INR 1500), Abroad-(US$75)
पाँच बर्ख(२०१०-१३ ई.)::७५०/- NEPAL-(INR 2250), Abroad-(US$125)
आजीवन(२००९ आ ओहिसँ आगाँक अंक)::रु.५०००/- NEPAL-(INR 15000), Abroad-(US$750)
हमर नाम:
हमर पता:

हमर ई-मेल:
हमर फोन/मोबाइल नं.:

हम Cash/MO/DD/Cheque in favour of AJAY ARTS payable at DELHI दऽ रहल छी।
वा हम राशि Account No.21360200000457 Account holder (distributor)'s name: Ajay Arts,Delhi,
Bank: Bank of Baroda, Badli branch, Delhi क खातामे पठा रहल छी।

अपन फॉर्म एहि पतापर पठाऊ:- shruti.publication@shruti-publication.com
AJAY ARTS, 4393/4A,Ist Floor,Ansari Road,DARYAGANJ,Delhi-110002 Ph.011-23288341, 09968170107,e-mail:, Website: http://www.shruti-publication.com

(ग्राहकक हस्ताक्षर)

२. संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मादेँ।]

१.श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२.श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।

३.श्री विद्यानाथ झा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अपन महिमामय "विदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतबा प्रसन्नता आ संतोष भेल,तकरा कोनो उपलब्ध "मीटर"सँ नहि नापल जा सकैछ? ..एकर ऐतिहासिक मूल्यांकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट हैत।

४. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकेँ पढ़ि रहल छथि।...विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल अभिनन्दन।

५. डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशिष्ट फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक सङ्ग, सस्नेह...अहाँक पोथी *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रथम दृष्टया बहुत भव्य तथा उपयोगी बुझाइछ। मैथिलीमे तँ अपना स्वरूपक प्रायः ई पहिले एहन भव्य अवतारक पोथी थिक। हर्षपूर्ण हमर हार्दिक बधाई स्वीकार करी।

६. श्री रामाश्रय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

७. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

८. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकेँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

९.डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

१०. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

११. श्री विजय ठाकुर- मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका "विदेह" क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह'निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारय से कामना अछि।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका "विदेह" केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

१४. डॉ. श्री भीमनाथ झा- "विदेह" इन्टरनेट पर अछि तेँ "विदेह" नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब। *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि अति प्रसन्नता भेल। मैथिलीक लेल ई घटना छी।

१५. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"- जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत, से विश्वास करी।

१६. श्री राजनन्दन लालदास- "विदेह" ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक अहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अंक जखन प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दैतहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।.. उत्कृष्ट प्रकाशन *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* लेल बधाई। अद्भुत काज कएल अछि, नीक प्रस्तुति अछि सात खण्डमे। ..सुभाष चन्द्र यादवक कथापर अहाँक आमुखक पहिल दस पंक्तिमे आ आगाँ हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी शब्द अछि (बेबाक, आद्योपान्त, फोकलोर..)..लोक नहि कहत जे *चालनि दुशलनि बाढ़निकेँ जिनका अपना बहत्तरि टा भूर!*..(स्पष्टीकरण- दास जी द्वारा उद्धृत अंश यादवजीक कथा संग्रह बनैत-बिगड़ैतक आमुख १ जे कैलास कुमार मिश्रजी द्वारा लिखल गेल अछि-हमरा द्वारा नहि- केँ संबोधित करैत अछि। मैथिलीमे उपरझपकी पढ़ि लिखबाक जे परम्परा रहल अछि तकर ई एकटा

उदाहरण अछि। कैलासजीक सम्पूर्ण आमुख हम पढ़ने छी आ ओ अपन विषयक विशेषज्ञ छथि आ हुनका प्रति कएल अपशब्दक प्रयोगक हम भर्त्सना करैत छी-गजेन्द्र ठाकुर)...अहाँक मंतव्य *क्यो चित्रगुप्त सभा खोलि मणिपद्मकेँ बेचि रहल छथि तँ क्यो मैथिल (ब्राह्मण) सभा खोलि सुमनजीक व्यापारमे लागल छथि-मणिपद्म आ सुमनजीक आरिमे अपन धंधा चमका रहल छथि आ मणिपद्म आ सुमनजीकेँ अपमानित कए रहल छथि।*..तखन लोक तँ कहबे करत जे*अपन घेघ नहि सुझैत छन्हि, लोकक टेटर आ से बिना देखनहि, अधलाह लागैत छनि*..(स्पष्टीकरण-क्यो नाटक लिखथि आ ओहि नाटकक खलनायकसँ क्यो अपनाकेँ चिन्हित कए नाटककारकेँ गारि पढ़थि तँ तकरा की कहब। जे क्यो मराठीमे चितपावन ब्राह्मण समितिक पत्रिकामे-जकर भाषा अवश्ये मराठी रहत- ई लिखए जे ओ एहि पत्रिकाक माध्यमसँ मराठी भाषाक सेवा कए रहल छथि तँ ओ अपनाकेँ मराठीभाषी पाठक मध्य अपनाकेँ हास्यास्पदे बना लेत- कारण सभकेँ बुझल छैक जे ओ मुखपत्र एकटा वर्गक सेवाक लेल अछि। ओना मैथिलीमे एहि तरहक मैथिली सेवक लोकनिक अभाव नहि ओ लोकनि २१म शताब्दीमे रहितो एहि तरहक विचारधारासँ ग्रस्त छथि आ उनटे दोसराक मादेँ अपशब्दक प्रयोग करैत छथि-सम्पादक)...ओना अहाँ तँ अपनहुँ बड़ पैघ धंधा कऽ रहल छी। मात्र सेवा आ से निःस्वार्थ तखन बूझल जाइत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि रहितैक। ओहिना सभकेँ विलहि देल जइतैक।(स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहाँक सूचनार्थ- विदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएल सभटा सामग्री आर्काइवमे http://www.videha.co.in/ पर बिना मूल्यक डाउनलोड लेल उपलब्ध छै आ भविष्यमे सेहो रहतैक। एहि आर्काइवकेँ जे कियो प्रकाशक अनुमति लऽ कऽ प्रिंट रूपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम रखने छथि आ किएक रखने छथि वा आगाँसँ दाम नहि राखथु- ई सभटा परामर्श अहाँ प्रकाशककेँ पत्र/ई-पत्र द्वारा पठा सकै छियन्हि।- गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

१७. डॉ. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आद्योपांत पत्रिका देखल, मन प्रफ़ुल्लित भऽ गेल।

१८.श्रीमती शेफालिका वर्मा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भरि गेल। विज्ञान कतेक प्रगति कऽ रहल अछि...अहाँ सभ अनन्त आकाशकेँ भेदि दियौ, समस्त विस्तारक रहस्यकेँ तार-तार कऽ दियौक...। अपनेक अद्भुत पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक विषयवस्तुक दृष्टिसँ गागरमे सागर अछि। बधाई।

१९.श्री हेतुकर झा, पटना-जाहि समर्पण भावसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेवामे तत्पर छी से स्तुत्य अछि। देशक राजधानीसँ भय रहल मैथिलीक शंखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अवश्य करत।

२०. श्री योगानन्द झा, कबिलपुर, लहेरियासराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीकेँ निकटसँ देखबाक अवसर भेटल अछि आ मैथिली जगतक एकटा उद्भट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक कलमबन्द परिचयसँ आह्लादित छी। "विदेह"क देवनागरी सँस्करण पटनामे रु. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकल जे विभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित्र, परिचय पत्रक ओ रचनावलीक सम्यक प्रकाशनसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोलकाता- जय मैथिली, विदेहमे बहुत रास कविता, कथा, रिपोर्ट आदिक सचित्र संग्रह देखि आ आर अधिक प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- बधाई स्वीकार कएल जाओ।

२२.श्री जीवकान्त- विदेहक मुद्रित अंक पढ़ल- अद्भुत मेहनति। चाबस-चाबस। किछु समालोचना मरखाह..मुदा सत्य।

२३. श्री भालचन्द्र झा- अपनेक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि बुझाएल जेना हम अपने छपलहुँ अछि। एकर विशालकाय आकृति अपनेक सर्वसमावेशताक परिचायक अछि। अपनेक रचना सामर्थ्यमे उत्तरोत्तर वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक बधाई।

२४.श्रीमती डॉ नीता झा- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। ज्योतिरीश्वर शब्दावली, कृषि मत्स्य शब्दावली आ सीत बसन्त आ सभ कथा, कविता, उपन्यास, बाल-किशोर साहित्य सभ उत्तम छल। मैथिलीक उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

२५.श्री मायानन्द मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* हमर उपन्यास *स्त्रीधनक* विरोधक हम विरोध करैत छी।... *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीक लेल शुभकामना।(श्रीमान् समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि लेल जाए। ओना अहाँक मंत्रपुत्र हिन्दीसँ मैथिलीमे अनूदित भेल, जे जीवकांत जी अपन आलेखमे कहै छथि। एहि अनूदित मंत्रपुत्रकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार देल गेल, सेहो अनुवाद पुरस्कार नहि मूल पुरस्कार, जे साहित्य अकादमीक निअमक विरुद्ध रहए। ओना मैथिली लेल ई एकमात्र उदाहरण नहि अछि। एकर अहाँ कोन रूपमे विरोध करब?)

२६.श्री महेन्द्र हजारी- सम्पादक *श्रीमिथिला- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन हर्षित भऽ गेल..एखन पूरा पढ़यमे बहुत समय लागत, मुदा जतेक पढ़लहुँ से आह्लादित कएलक।

२७.श्री केदारनाथ चौधरी- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* अद्भुत लागल, मैथिली साहित्य लेल ई पोथी एकटा प्रतिमान बनत।

२८.श्री सत्यानन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी। ओकर स्वरूपक प्रशंसक छलहुँ। एम्हर अहाँक लिखल - *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखलहुँ। मोन आह्लादित भऽ उठल। कोनो रचना तरा-उपरी।

२९.श्रीमती रमा झा-सम्पादक मिथिला दर्पण। *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रिंट फॉर्म पढ़ि आ एकर गुणवत्ता देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शब्द एकरा लेल प्रयुक्त कऽ रहल छी। विदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना।

३०.श्री नरेन्द्र झा, पटना- विदेह नियमित देखैत रहैत छी। मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलाक्षर विदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भरि उठल, अंकक विशाल परिदृश्य आस्वस्तकारी अछि।

३२.श्री तारानन्द वियोगी- विदेह आ *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि चकबिदोर लागि गेल। आश्चर्य। शुभकामना आ बधाई।

३३.श्रीमती प्रेमलता मिश्र "प्रेम"- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। सभ रचना उच्चकोटिक लागल। बधाई।

३४.श्री कीर्तिनारायण मिश्र- बेगूसराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* बड्ड नीक लागल, आगांक सभ काज लेल बधाई।

३५.श्री महाप्रकाश-सहरसा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* नीक लागल, विशालकाय संगहि उत्तमकोटिक।

३६.श्री अग्निपुष्प- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेह पढ़ल..ई प्रथम तँ अछि एकरा प्रशंसामे मुदा हम एकरा दुस्साहसिक कहब। मिथिला चित्रकलाक स्तम्भकेँ मुदा अगिला अंकमे आर विस्तृत बनाऊ।

३७.श्री मंजर सुलेमान-दरभंगा- विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत। सभ चीज उत्तम।

३८.श्रीमती प्रोफेसर वीणा ठाकुर- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* उत्तम, पठनीय, विचारनीय। जे क्यो देखैत छथि पोथी प्राप्त करबाक उपाय पुछैत छथि। शुभकामना।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ, बड्ड नीक सभ तरहेँ।

४०.श्री ताराकान्त झा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- विदेह तँ कन्टेन्ट प्रोवाइडरक काज कऽ रहल अछि। कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक अद्भुत लागल।

४१.डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक बहुत नीक, बहुत मेहनतिक परिणाम। बधाई।

४२.श्री अमरनाथ- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक आ विदेह दुनू स्मरणीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।

४३.श्री पंचानन मिश्र- विदेहक वैविध्य आ निरन्तरता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना।

४४.श्री केदार कानन- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ स्वीकार करी। आ नचिकेताक भूमिका पढ़लहुँ। शुरूमे तँ लागल जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल अछि मुदा पोथी उनटौला पर ज्ञात भेल जे एहिमे तँ सभ विधा समाहित अछि।

४५.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कऽ रहल छी। फोटो गैलरीमे चित्र एहि शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।

४६.श्री आशीष झा- अहाँक पुस्तकक संबंधमे एतबा लिखबा सँ अपना कए नहि रोकि सकलहुँ जे ई किताब मात्र किताब नहि थीक, ई एकटा उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ निरंतर समृद्ध होइत चिरजीवन कए प्राप्त करत।

४७.श्री शम्भु कुमार सिंह- विदेहक तत्परता आ क्रियाशीलता देखि आह्लादित भऽ रहल छी। निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। ओहि कुरुक्षेत्रक घटना सभ तँ अठारहे दिनमे खतम भऽ गेल रहए मुदा अहाँक *कुरुक्षेत्रम्* तँ अशेष अछि।

४८.डॉ. अजीत मिश्र- अपनेक प्रयासक कतबो प्रशंसा कएल जाए कमे होएतैक। मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएल गेल काज युग-युगान्तर धरि पूजनीय रहत।

४९.श्री बीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* आ *विदेह:सदेह* पढ़ि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए से कामना।

५०.श्री कुमार राधारमण- अहाँक दिशा-निर्देशमे *विदेह* पहिल मैथिली ई-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल। हमर शुभकामना।

५१.श्री फूलचन्द्र झा *प्रवीण*-विदेह:सदेह पढ़ने रही मुदा *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि बढ़ाई देबा लेल बाध्य भऽ गेलहुँ। आब विश्वास भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत। अशेष शुभकामना।

५२.श्री विभूति आनन्द- विदेह:सदेह देखि, ओकर विस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल।

५३.श्री मानेश्वर मनुज-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* एकर भव्यता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही। एहिना भविष्यमे काज करैत रही, शुभकामना।

५४.श्री विद्यानन्द झा- आइ.आइ.एम.कोलकाता- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* विस्तार, छपाईक संग गुणवत्ता देखि अति प्रसन्नता भेल।

५५.श्री अरविन्द ठाकुर-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मैथिली साहित्यमे कएल गेल एहि तरहक पहिल प्रयोग अछि, शुभकामना।

५६.श्री कुमार पवन-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़ि रहल छी। किछु लघुकथा पढ़ल अछि, बहुत मार्मिक छल।

५७. श्री प्रदीप बिहारी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखल, बधाई।

५८.डॉ मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विलक्षण नियमित सेवासँ हमरा लोकनिक हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

५९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सराहनीय। दुख होइत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

६०.श्री देवशंकर नवीन- विदेहक निरन्तरता आ विशाल स्वरूप- विशाल पाठक वर्ग, एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि।

६१.श्री मोहन भारद्वाज- अहाँक समस्त कार्य देखल, बहुत नीक। एखन किछु परेशानीमे छी, मुदा शीघ्र सहयोग देब।

६२.श्री फजलुर रहमान हाशमी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुवादक अधिकारी छी।

६३.श्री लक्ष्मण झा "सागर"- मैथिलीमे चमत्कारिक रूपेँ अहाँक प्रवेश आह्लादकारी अछि।..अहाँकेँ एखन आर..दूर..बहुत दूरधरि जेबाक अछि। स्वस्थ आ प्रसन्न रही।

६४.श्री जगदीश प्रसाद मंडल-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़लहुँ । कथा सभ आ उपन्यास *सहस्त्रबाढ़नि* पूर्णरूपेँ पढ़ि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्त्रबाढ़निमे अछि से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक अछि।

६५.श्री अशोक झा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* लेल बधाई आ आगाँ लेल शुभकामना।

६६.श्री ठाकुर प्रसाद मुर्मु- अद्भुत प्रयास। धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माटि-पानिकेँ ध्यानमे राखि अंकक समायोजन कएल जाए। नव अंक धरि प्रयास सराहनीय। विदेहकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा रहल छथि। सभटा ग्रहणीय- पठनीय।

६७.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'विदेह'आ 'कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक' विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी! की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास होयत,निस्संदेह।

६८.श्री बृखेश चन्द्र लाल- गजेन्द्रजी, अपनेक पुस्तक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

६९.श्री परमेश्वर कापड़ि - श्री गजेन्द्र जी । *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि गदगद आ नेहाल भेलहुँ।

७०.श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पढ़ैत रहैत छी। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख पढ़लहुँ। मैथिली गजल कत्तऽ सँ कत्तऽ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन जानल-पहिचानल लोकक चर्च कएने छथि। जेना मैथिलीमे मठक परम्परा रहल अछि। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे ई स्पष्ट लिखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि रहबाक द्वारे, एहिमे आन कोनो कारण नहि देखल जाय। अहाँसँ एहि विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि।-सम्पादक)

७१.श्री मंत्रेश्वर झा- विदेह पढ़ल आ संगहि अहाँक मैगनम ओपस *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक*सेहो, अति उत्तम। मैथिलीक लेल कएल जा रहल अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

सिद्धिरस्तु